बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' के लेखक

दीप त्रिवेदी

अनावृत कर रहे हैं

भाग्य के रहस्य

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' के लेखक

दीप त्रिवेदी

अनावृत कर रहे हैं

भाग्य के रहस्य

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

लेखक का परिचय

दीप त्रिवेदी एक प्रसिद्ध लेखक, वक्ता और स्पीरिच्युअल सायको-डाइनैमिक्स के पायनियर हैं जो कि एक व्यापक दृष्टिकोण से ना सिर्फ लिखते हैं, बल्कि विभिन्न विषयों पर लेक्चर्स भी कंडक्ट करते हैं. इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्हें पढ़ने व सुनने-मात्र से मनुष्य में आमूल सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है. वे अपने कार्यों द्वारा आजतक हजारों लोगों को सुख और सफलता के मार्ग पर लगा चुके हैं.

दीप त्रिवेदी ने अपने इन कार्यों द्वारा प्रकृति, उसके नियम, उसका आचरण, उसकी सायकोलोजी और उसके मनुष्यजीवन पर पड़नेवाले प्रभाव को बड़ी ही गहराई से समझाया है. जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे उन्होंने न छूआ हो. वे कहते हैं कि सायकोलोजी के बाबत कम ज्ञान और कम समझ होना ही मनुष्य-जीवन के तमाम दु:खों और असफलताओं का मूल कारण है.

बेस्टसेलर 'मैं मन हूँ' और कई अन्य किताबों के लेखक, दीप त्रिवेदी की खास बात यह है कि वे जीवन के गहरे-से-गहरे पहलुओं को छूते हैं और उन्हें सरलतम भाषा में लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं जिससे कन्फ्यूजन की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं बचती है.

मनुष्यजीवन की गहरे-से-गहरी सायकोलोजी पर उनकी पकड़ का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मनुष्य के जीवन, सायकोलोजी, आत्मा, प्रकृति के नियम, भाग्य तथा अन्य विषयों पर सर्वाधिक (लगभग 12038) कोटेशन लिखने का रेकॉर्ड उन्हीं के नाम पर दर्ज है. साथ ही मनुष्यजीवन पर सर्वाधिक लेक्चर्स और 'भगवद्गीता' पर सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड भी उन्हीं के नाम पर है जिसमें उन्होंने 58 दिनों में गीता पर 168 घंटे, 28 मिनट और 50 सेकंड तक एक लंबी चर्चा करी है. इसके अलावा अष्टावक्र गीता और ताओ-ते-चिंग पर भी सर्वाधिक लेक्चर्स देने का रेकॉर्ड उन्हीं के नाम पर दर्ज है. ये सारे रेकॉर्ड्स राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रेकॉर्ड बुक्स में दर्ज है और ये तमाम लेक्चर्स भारत में लाइव ऑडियन्स के सामने दिये गए हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

वे अपने लेख और लेक्चर्स में जिस अनोखी स्पीरिच्युअल-सायकोलोजिकल भाषा और एक्सप्रेशन का इस्तेमाल करते हैं उससे उन्हें पढ़ने तथा सुनने वालों में उसका तात्कालिक प्रभाव भी होने लगता है और यही बात उन्हें इस क्षेत्र का पायनियर बनाती है.

इनके बारे में और अधिक जानने के लिए विजिट करें : www.deeptrivedi.com

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

लेखक की कलम से...

जो कुछ भी है, यह जीवन ही है. और सिवाय "सुख और सफलता" पाने के इस जीवन का अन्य कोई उद्देश्य नहीं है. हरकोई युगों से अपने जीवन को सुख और सफलता से भरने के अथक प्रयास करता ही आ रहा है, परंतु हजारों में कोई एक इसमें सफल हो पा रहा है. क्यों? बस यह जो 'क्यों' है, यही एक पहेली है ...और उसे सुलझाने में मनुष्य युगों से नाकाम रहा है. वहीं जिन्हें हम सफल मानते हैं, वे भी अपनी सफलता से पूर्णत: संतुष्ट तो नहीं ही जान पड़ रहे हैं. और वह इसलिए कि मनुष्य के "सुख और सफलता" के एक नहीं, कई पैमाने हैं. जैसे "इच्छारहित मन" की ऊंचाई पा लेना, धार्मिक सफलता है. परंतु यह सबकुछ नहीं है. सुख और सफलता के मामले में मनुष्य के लिए सितारों के आगे जहां और भी है. और यही बात युगों से मनुष्यों की समझ में नहीं आ रही है. यही कारण है कि एक क्षेत्र में सफल व्यक्ति अन्य कई क्षेत्रों में 'नाकाम' नजर आता है. वहीं हर किसी को लगता है कि उसे उसकी प्रतिभा के अनुसार कुछ मिल नहीं रहा है. परंतु वास्तव में ऐसा हो नहीं रहा है. सबकुछ इतना नियमबद्ध चल रहा है कि यहां सिर्फ न्याय हो रहा है. और इस बात की गहराई को समझने के लिए सबको इस प्रकृति की सम्पूर्ण रचना को समझना पड़ेगा. यह पूरी प्रकृति, जिसमें मनुष्य का जीवन भी शामिल है, वह पूरी तरह से एक नहीं अनेक सिद्धांतों के तहत नियमबद्ध तरीके से चल रही है. और यहां के सारे सिद्धांत और नियम सभी मनुष्यों के जीवन पर बिना किसी पक्षपात के बराबरी पर लागू हैं. उदाहरण के तौरपर कहूं तो "इच्छारहित मन" की ऊंचाई छू लेने वाले व्यक्ति ने धार्मिक सफलता जरूर पा ली है, लेकिन उससे वह यहां के अन्य नियमों से आजाद नहीं हो जाता है. यदि वह अपने शरीर का ध्यान नहीं रखेगा और उसके फेफड़े खराब हो जाएंगे, तो इच्छारहित मन प्राप्त कर लेने के बावजूद उसके फेफड़ों को हवा से आवश्यक ऑक्सीजन नहीं ही मिलेगी. क्योंकि शरीर के अपने स्वतंत्र नियम हैं, और वह बिना भेदभाव या पक्षपात के उन्हीं का अनुसरण करेंगे. यही कारण है कि "इच्छारहित मन" में जीने के बावजूद रामकृष्ण परमहंस को कैन्सर हुआ था व महावीर को पेचिस की भयानक बीमारी से जूझना पड़ा था. सो उम्मीद है कि मैं जो कहना चाह रहा हूँ, वह अब आप लोग समझ गए होंगे. सो, अब यह समझ लो कि धार्मिक सफलता पाना ही सबकुछ नहीं है. इस संसार पर "भाग्य का सिद्धांत" भी बराबरी पर लागू है. और भाग्य के सिद्धांत के मुताबिक मनुष्य सफल तभी माना जा सकता है जब वह अपने आने का मकसद पा ले. और यह नियम है कि दुनिया का कोई भी मनुष्य अपने आने का मकसद पाए बगैर तृप्त नहीं हो सकता है. और अतृप्त व्यक्ति कहीं से भी पूर्ण सफल नहीं कहा जा सकता है. वैसे ही सब मनुष्यों पर प्रकृति के नियम भी बराबरी पर लागू हैं. और प्रकृति के नियमों के तहत देखा जाए तो 'सर्वहित' का कोई महान कार्य किए बगैर जाने वाला 'मनुष्य' प्रकृति की दृष्टि से सफल नहीं कहा जा

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सकता है. क्योंकि यह पूरी प्रकृति ''सर्व हिताय-सर्व सुखाय'' के एकमात्र सिद्धांत से चलायमान है. वहीं सफलता का ''संन्यास या संसार'' से भी कुछ लेना-देना नहीं है. मस्त फकीर व रोते धनपति सभी ने देखे हैं. सो, दु:ख और चिंताओं से पूर्णत: मुक्त व्यक्ति ही यहां ''सायकोलोजिकली सफल'' कहा जा सकता है. और मनुष्य की इस ''सायकोलोजिकल सफलता'' को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है. वहीं हर बाबत पूर्णत: आत्मनिर्भर होना जीवन के सिद्धांत के तहत जरूरी है. किसी भी प्रकार की निर्भरता में जीनेवाला मनुष्य 'जीवन' की दृष्टि से सफल नहीं कहा जा सकता है. फिर भले ही उसकी निर्भरता भिक्षा मांगने तक ही सीमित क्यों न हो? ठीक उसी प्रकार मनुष्य सिवाय 'मन' के और कुछ नहीं है. अत: जो मन से शौकीन न हो, और अपने शौकों को पूरा करने की कला न जानता हो, वह मन से सफल नहीं कहा जा सकता है. क्योंकि प्रकृति की रचना में मनुष्य का आगमन ही झूमने, गाने और नाचने के लिए हुआ है. अत: मन के सिद्धांत के अनुसार शौकरहित जीवन जीना सीधे तौरपर प्रकृति का अपमान है.

खैर, कुल मिलाकर कहने का तात्पर्य यह कि सफलता के एक नहीं, कई पैमाने हैं. और जबतक मनुष्य बहुआयामी सफलता नहीं पा लेता, वह पूरी तरह से सफल नहीं कहा जा सकता है. और चूंकि यह पूरी प्रकृति तथा मनुष्य-जीवन एक नहीं, कई सिद्धांतों से एकसाथ चलायमान है; अत: उन सबके ज्ञान के बगैर किसी भी क्षेत्र की सफलता नहीं पाई जा सकती है. ऐसा समझें कि जीवन एक खेल है. और किसी भी खेल में जीतने हेतु उसके नियम मालूम होना जरूरी है. इससे स्पष्ट हो जाता है कि नियमों से अनजान होने के कारण ही मनुष्य युगों से असफल है. क्योंकि कोई एकसाथ प्रकृति व मनुष्य-जीवन के सभी सिद्धांतों की बात नहीं करता है. जबकि सारे सिद्धांत न सिर्फ एकदूसरे में गुंथे हुए हैं, बल्कि वे सब एकदूसरे को प्रभावित भी कर रहे हैं. और सबसे बड़ी बात तो यह कि ''प्रकृति और मनुष्य-जीवन'' की पूरी बागडोर समय के सिद्धांतों के अधीन है. ...जबकि समय के सिद्धांतों की ना के बराबर चर्चा है. संक्षेप में समझें तो प्रकृति के नियम व समय के सिद्धांत, ये दोनों बाकी के तमाम सिद्धांतों पर लागू हैं. इसलिए इन दोनों की अवहेलना करके सफलता पाने की बात तो सोची ही नहीं जा सकती है.

और जब इतनी बात चली है तो एक बात और कह दूं, शायद इससे आपको मैं जो समझाना चाह रहा हूँ, वह समझने में आसानी हो जाए. तो, सम्पूर्ण मनुष्यजाति के इतिहास में सिवाय एक 'कृष्ण' के और कोई नहीं हुआ है जिन्होंने सफलता के तमाम शिखर बराबरी पर छुए हैं. एक कृष्ण ही हैं जिन्होंने ना सिर्फ तमाम सिद्धांतों को समझा है, बल्कि उनका भरपूर फायदा भी उठाया है. और उसी की बदौलत एक ग्वाले का बचपन गुजारने के बाद भी वे ''सोने की नगरी द्वारका'' के राजा हो पाए. इन तमाम सिद्धांतों के सही उपयोग की वहज से ही जीवन का कोई युद्ध वे कभी नहीं हारे. कृष्ण इकलौते हैं जो

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

परमात्मा के निमित्त बनने से कभी पीछे नहीं हटे. छल हो या कपट, युद्ध हो या वध, वे परमात्मा की हर लीला के हंसते हुए निमित्त बने. वहीं कृष्ण 'मन' से भी सफल थे; साज-शृंगार से लेकर भोजन व नृत्य तक के सारे शौक उनको थे. सायकोलोजिकल सफलता की बात करी जाए तो कालिया के फन में फंसे होने पर भी उन्होंने मस्ती से बांसुरी की तान छेड़कर अपनी सायकोलोजिकल ऊंचाई के दर्शन सबको करवा ही दिए थे. और जीवन की सफलता की बात करी जाए तो उन्होंने द्वारका भी अपने बलबूते पर बनाई थी, और जीवन के सारे युद्ध भी अपने ही बलबूते पर जीते थे. किसी बात हेतु वे किसी पर रत्तीभर कभी निर्भर नहीं रहे. और प्रेम जिसके बगैर जीवन ही सूखा हो जाता है, उसकी तो वे बहती धारा थे. और शारीरिक स्वस्थता, जिसके बगैर सब बेकार है ...वह कृष्ण ने अपनी अंतिम सांस तक बनाए रखी थी. अपने जीवन के अंतिम दिन 108 वर्ष की उम्र में उन्होंने यादवस्थली का खेल खेला था. सो, कहने का तात्पर्य यह कि तमाम नियमों को जाने और समझे बगैर कृष्ण की तरह सम्पूर्ण सफलता का स्वाद कभी नहीं चखा जा सकता है.

वहीं एक बात और स्पष्ट कर दूं. मनुष्य-जीवन की सफलता उन बातों पर रत्तीभर निर्भर नहीं है, जिनको मनुष्य युगों से तवज्जो देता आ रहा है. मनुष्य-जीवन हो या प्रकृति, दोनों बड़े गहरे व रहस्यपूर्ण हैं. तभी तो कोई आजतक नहीं समझ सका कि अनपढ़ एडीसन महान वैज्ञानिक कैसे हो गया? नटखट बच्चा स्टीव सफल 'स्टीव जॉब्स्' कैसे हो गया. ना ही कोई आजतक यह समझ पाया कि अनपढ़ कालीदास और कबीर महान कवि कैसे हो गए? लेकिन मनुष्य-जीवन तथा उसको प्रभावित करनेवाले तमाम सिद्धांतों को समझकर बड़ी आसानी से मनुष्य-जीवन से संबंधित तमाम सवालों के जवाब पाए जा सकते हैं. और इसलिए मैंने इस "सीक्रेट सिरीज" के अंतर्गत प्रकृति के रहस्य, समय के रहस्य, ऑटोमेशन के रहस्य, भाग्य के रहस्य, सफलता के रहस्य, कर्म और फल के रहस्य, जन्म और पुनर्जन्म के रहस्य, जीवन के रहस्य, धर्म के रहस्य, मन के रहस्य, आत्मा के रहस्य, भगवान के रहस्य, अहंकार के रहस्य, सायकोलोजी तथा प्रेम के रहस्यों पर से पर्दा उठाया है. साथ ही "चाइल्ड सायकोलोजी" के रहस्यों को भी समझाने की कोशिश की है. क्योंकि बच्चे बीज हैं. उनकी सायकोलोजी समझकर तथा उन्हें तमाम सिद्धांतों के तहत ढालकर ही उनके जीवन के पेड़ पर फल-फूल उगाए जा सकते हैं.

अंत में एक बात और... इन तमाम रहस्यों और सिद्धांतों को बुद्धि से समझने की कोशिश मत करना. तमाम रहस्य और सिद्धांत मन के विषय हैं, बुद्धि के नहीं. अर्थात यह समझने के नहीं, अनुभव करने के विषय हैं. जितने आपके अनुभव में आ जाएं, उतने ही सिद्धांतों को आप समझा हुआ मानना. क्योंकि आप उन्हीं पर अमल करते हैं जो मन के गहरे में उतरे हुए हों. और फायदा उन्हीं का मिलता है जिनपर आप अमल करते हैं. और यह तय है कि यदि आप 35 प्रतिशत सिद्धांतों और रहस्यों को अमल में रख पाते हैं, तो यह

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

निश्चित जानो कि आप एक बहुत ही सफल जीवन गुजारेंगे. अत: यह समझ ही लो कि यही आपके जीवन की असली परीक्षा है, और इसमें आपको पास होना ही पड़े, ऐसा है. क्योंकि जमीन-आसमान एक कर दोगे तो भी सीक्रेट की इन परीक्षाओं में पास हुए बगैर जीवन में कुछ बड़ा होनेवाला नहीं है.

सो, मुझे उम्मीद है कि मेरा यह प्रयास ना सिर्फ सबको पसंद आएगा, बल्कि उपयोगी भी सिद्ध होगा.

दीप त्रिवेदी

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

भाग्य लिखा हुआ नहीं

भाग्य लिखा हुआ नहीं है. जो कोई ऐसा समझता है, वह ना तो प्रकृति के नियमों को जानता है और ना मनुष्य-जीवन के रहस्यों को ही... लिखे हुए भाग्य की बात या तो डरे हुए लोग करते हैं, या फिर वे लोग, जो 'भाग्य' का सहारा लेकर अपनी नाकामियों को छिपाना चाहते हैं. ...बाकी तो यह तय जान लो कि पल-पल बहती व परिवर्तित होती प्रकृति में कुछ भी लिखा-लिखाया नहीं है.

भाग्य लिखा हुआ - तो क्रेडिट क्यों?

यदि किसको क्या बनना व किसका जीवन कैसा गुजरना, यह लिखा ही हुआ है, तब तो सारे ज्ञान व सारे कर्म व्यर्थ हो जाते हैं. ...फिर तो बुद्ध को 'बुद्ध' बनने की क्रेडिट दी ही नहीं जानी चाहिए. क्योंकि उनके भाग्य में 'बुद्ध' बनना लिखा था. यही क्यों, फिर तो लादेन या दाऊद को कोसना भी नहीं चाहिए. क्योंकि उनके भाग्य में ही आतंकवादी बनना लिखा था. यदि भाग्य लिखा ही हुआ है तब तो राम को पूजने... या रावण को जलाने का भी कोई तुक नहीं बनता है.

भाग्य कर्मों से बनता है

मनुष्य को कुदरत की ओर से पूर्ण स्वतंत्रता मिली हुई है. और जब वह पूर्ण स्वतंत्र है तो अपना जीवन बनाने की जिम्मेदारी भी उसी की है. यदि मनुष्य यहां अपना जीवन नहीं बना पाता है तो उस हेतु वह 'भाग्य' या 'भगवान' को दोष नहीं दे सकता है. क्योंकि जीवन बनता और बिगड़ता मनुष्य के अपने 'कर्मों' से है. और महान सायकोलोजिकल ग्रंथ भगवद्गीता का सार भी यही कहता है कि ''मनुष्य के जीवन का है उसके कर्मों से नाता और वो ही अपना भाग्यविधाता.''

कर्मों के बाबत अज्ञान

भाग्य 'कर्मों' से बनता है, यह बात तो सबके समझ में आ ही गई होगी. अब सवाल उठता है कि कौन से कर्मों से भाग्य बनेगा? बस यहीं आकर सारी उलझनें खड़ी हो रही हैं. क्योंकि कौन से कर्म करना और कौन से नहीं, इस बाबत पक्का ज्ञान उपलब्ध नहीं है. अपने-अपने हिसाब से संप्रदायों से लेकर समाज तक सभी ने इसकी कई लंबी-चौड़ी सूचियां बना रखी हैं, लेकिन उनमें से कोई परिणाम लेकर नहीं आ रही है. वहीं दूसरी ओर अपना जीवन बनाने हेतु हरकोई अपनी तरफ से भी अपनी पूरी बुद्धि लगाए ही हुए है. परंतु सबके जीवन देखने से साफ हो जाता है कि उसके भी कोई सकारात्मक परिणाम नहीं आ रहे हैं. सो

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट है कि मनुष्य अपना भाग्य चमकाने हेतु जो कुछ भी 'कर्म' कर रहा है, वे उसका 'भाग्य' चमकाने की बजाए उसे और धुंधला ही कर रहे हैं. सो कौन से कर्म करना, उस बाबत निश्चित ही सबको नए सिरे से सोचना होगा.

भाग्य का महान ऑटोमेशन

अब कौन से कर्म करने से भाग्य चमकेगा, यह समझने से पूर्व सबको यह समझना जरूरी है कि प्रकृति का अपना एक ''भाग्य का ऑटोमेशन'' है जो कि सबका हित चाहता और साधता हुआ सबको साथ लेकर चल रहा है. उसके लिए ना कोई बड़ा है और ना कोई छोटा. ना ही उसके लिए ब्रह्मांड का कोई कण अलग है और न मनुष्य ही अलग है. वह तो बिना भेदभाव या पक्षपात के सबका हित चाहता है. और एक वही है जो सबका हित कर भी सकता है. यह इतना विशाल और महान कम्प्यूटर है कि उससे कोई चूक कभी नहीं होती है. और सही मायने में वही सबका एकमात्र 'ईश्वर' है. यह महान ऑटोमेशन ही ''सबका मालिक है''. सो भाग्य के इस ऑटोमेशन तथा उसके कार्य करने के सिद्धांत को हमेशा के लिए अपने जहन में बिठा लो. यह जहन में उतरे बगैर भाग्य या जीवन का कोई रहस्य समझ में आनेवाला नहीं है.

कर्मों में व्याप्त भ्रम

अब सीधे 'कर्मों' पर आते हैं ...तो उस बाबत दिक्कत यह है कि यहां दो 'चाहें' टकरा रही हैं. दो सोचों का जबरदस्त टकराव अनादिकाल से जारी है. एक है हर मनुष्य की अपनी ''जाती चाह'', जिसके तहत वह अपना और बहुत हुआ तो अपनों का 'उद्धार' चाह रहा है. और एक भाग्य के ऑटोमेशन की चाह, जो सबका विकास चाह रही है. ...परंतु सारा ज्ञान, सारी शिक्षाएं, सारी सोच मनुष्य को उसके ''जाती उद्धार'' की उपलब्ध है. मनुष्य को भी रस उसी में आता है. लेकिन चूंकि जाती उद्धार की इच्छा भाग्य के ऑटोमेशन के खिलाफ है, इसलिए उन ज्ञानों या कर्मों के कोई सकारात्मक परिणाम नहीं आ रहे हैं. यही कारण है कि सबकुछ कर लेने के बाद भी हजारों में एक सफल जीवन गुजार पा रहा है. ...और वह भी उसी मात्रा में जिस मात्रा में उस मनुष्य की चाह ''भाग्य के ऑटोमेशन'' की चाह से मेल खा रही है.

स्वार्थ व सर्व का टकराव

कुल-मिलाकर समझें तो यहां दो प्रकार के मनुष्य कार्यरत हैं. एक स्वार्थ से भरे हैं जो सबकुछ अपना जीवन बनाने हेतु कर रहे हैं. उनका धर्म हो या ईश्वर, वह भी अपने-अपने जाती उद्धार के इर्द-गिर्द ही घूम रहा है. परंतु चूंकि यह प्रकृति के चल रहे ''भाग्य के महान

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

ऑटोमेशन'' के खिलाफ है, अत: अपनी सोचने वालों के हाथ यहां कुछ नहीं लग रहा है. उल्टा उन्हें भाग्य के ऑटोमेशन की मार झेलनी पड़ रही है. वहीं चन्द लोग ऐसे भी हैं जो भाग्य के ऑटोमेशन के साथ बह रहे हैं. जो अपनी जाती चिंता करने की बजाए 'सर्व' के उद्धार में ज्यादा रस ले रहे हैं. और ऐसे लोगों को ऑटोमेशन की पूरी ऊर्जा उपलब्ध हो जाती है. फलस्वरूप वे जल्द ही महान-से-महानतम बनने की राह पकड़ लेते हैं.

दो प्रकार के कर्म करनेवाले लोग

अब तक की बातों का सार समझें तो दो कारणों से मनुष्य कर्म कर रहा है. एक स्वार्थ के वश में आकर, और एक अपने जाती स्वार्थ से ऊपर उठकर. और जो कोई भी जाती स्वार्थ से ऊपर उठकर कर्म कर रहा है, उसे महान ऑटोमेशन उसी मात्रा में थाम रहा है. ...यही भाग्य का सिद्धांत है. और भाग्य के इस महान सिद्धांत को सबसे खूबसूरती से 'क्राइस्ट' ने समझाया था. उन्होंने कहा था कि ''सबके हित में आपका हित छिपा हुआ है''. बस यह परम सिद्धांत ही मनुष्य के जीवन बनाने का एकमात्र मार्ग है. 'बुद्ध' को भी सर्व की चिंता थी और एडीसन को भी. एडीसन ने ''बल्ब की खोज'' संपूर्ण मनुष्यजाति के हित को ध्यान में रखते हुए ही की थी. सभी सफल और महान लोग इस एकमात्र सिद्धांत से सफल और महान हुए हैं. अत: यह समझ ही लो कि स्वार्थ से भरे बाकी के सारे ज्ञान ''भाग्य के इस महान सिद्धांत'' के आगे बौने सिद्ध होते हैं. और थोड़ी सायकोलोजिकल समझ हो तो सभी महान लोगों की जीवनी पढ़ लेना. आप पाएंगे कि सब 'सर्व' की सोच के साथ बढ़ते हुए ही महानता को उपलब्ध हुए हैं. और यही कारण है कि धर्म की पुराने-से-पुरानी सायकोलोजी भी 'स्वार्थ' को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु मानती है.

सभी मकसद से आते हैं

अब इस भाग्य के ऑटोमेशन का एक सिद्धांत और समझ लें. इस ऑटोमेशन के तहत सभी किसी-न-किसी मकसद से अस्तित्व में आते हैं. कोई यहां बिना मकसद के नहीं आता है. सूर्य जगत को रोशन करने हेतु अस्तित्व में आया है, तो पानी प्यास बुझाने हेतु. वैसे ही यहां हर मनुष्य का आगमन भी एक महान मकसद से ही होता है. और यह मकसद भी पूरी तरह से स्पष्ट है... ''सर्व के उद्धार हेतु ही यहां हर मनुष्य का आगमन हो रहा है''. परंतु स्वार्थ से भरी गलत शिक्षाओं के कारण अधिकांश अपने आने के मकसद से भटक जाते हैं और यही सबकी बर्बादी का प्रमुख कारण है. अत: जीवन बनाने हेतु ''स्वार्थी सोच'' के इस खतरनाक स्वरूप को तथा स्वार्थ से भरी शिक्षाओं के जहर को, दोनों को पहचानना जरूरी है. ...यह नियम जान लो कि जितना तगड़ा स्वार्थ, उतना बर्बाद जीवन.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

मकसद पाना ऑटोमैटिक है

अब आम के बीज का मकसद आम का हरा-भरा पेड़ बनना है. और तो कोई मकसद उसका होता नहीं है. और अपना मकसद पाने हेतु आम के बीज को स्वयं कुछ नहीं करना होता है. सही "खाद-पानी-प्रकाश" मिलने पर वह अपने-आप एक दिन भरे-पूरे पेड़ के रूप में रूपांतरित हो जाता है. ठीक वैसा ही मनुष्य का भी है. वह भी भाग्य के ऑटोमेशन के साथ बहते-बहते एक दिन अपने आने का मकसद पा लेता है. ...ऐसे में सही समय पर सही "खाद-पानी-प्रकाश" उसे मिलते रहते हैं. कुल-मिलाकर मनुष्य का अपने आने के मकसद को पाना एक ऑटोमैटिक प्रक्रिया है.

मनुष्य के भटकन का कारण

अब सवाल यह उठता है कि जब यह स्पष्ट है कि मनुष्य को कर्म 'सर्व' को ध्यान में रखकर करना है, स्वार्थ को ध्यान में रखकर नहीं...तो मनुष्य भटक क्यों गया? ...तो मनुष्य को 'बुद्धि-अहंकार' के रूप में मिली परम स्वतंत्रता ही उसके अपने मकसद से भटकने का प्रमुख कारण है. क्योंकि स्वतंत्र होने के कारण मनुष्य को अपने खाद, पानी व प्रकाश स्वयं खोजने की स्वतंत्रता उपलब्ध होती है. जबकि आम के बीज को उस हेतु तमाम प्राकृतिक व्यवस्थाओं पर निर्भर रहना होता है. और यही मनुष्य को सीखना है. ...भले ही उसे अपने 'खाद-पानी-प्रकाश' स्वयं खोजने की स्वतंत्रता उपलब्ध है, परंतु उसे इस स्वतंत्रता का उपयोग नहीं करना है. क्योंकि हरेक को यहां सही समय पर सही... "खाद, पानी व प्रकाश" पहुंचाने की जवाबदारी ऑटोमेशन की है. बस यही बात सबको समझना है. जो यह बात समझ जाएगा वह स्वार्थ से ऊपर उठ जाएगा. और जो स्वार्थ से ऊपर उठ जाएगा, भाग्य का महान ऑटोमेशन उसे थाम लेगा.

अज्ञान का साम्राज्य

मनुष्य की वास्तविक दिक्कत यह है कि चन्द महाज्ञानियों को छोड़ दिया जाए तो बाकी के सारे ज्ञान, फिर चाहे वो संप्रदायों के नाम पर दिए जा रहे हों या अन्य किसी नाम पर, सब-के-सब बिना अपवाद के इस महान सिद्धांत के खिलाफ हैं. इन सारे तथाकथित भ्रमित करनेवाले ज्ञानों का मूल ही यह है कि "मनुष्य अपनी राह स्वयं चुने". यानी कि सिर्फ अपने स्वार्थ की सोचे. अपनी चिंता करे. ...और यह बुनियादी तौरपर ही गलत है. यही कारण है कि युगों से इतना ज्ञान उपलब्ध होने के बावजूद लाखों में एक 'महान' हो पा रहा है. ज्ञान देने वाले भी अज्ञानतावश अपनी स्वतंत्रता का उपयोग कर रहे हैं, और सबको भी यही सिखा रहे हैं. और यह अज्ञान मनुष्य के जहन में इस कदर हावी हो गया है कि अब अपने को मिली स्वतंत्रता का समर्पण करना किसी के लिए आसान नहीं रह गया है. लेकिन यह

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

तय है कि जो अपनी 'स्वतंत्रता' का समर्पण करना नहीं सीखेगा, वह अपना जीवन कभी नहीं बना पाएगा. यहां यह भी समझ लो कि अपनी स्वतंत्रता का समर्पण कौन कर पाएगा? जो सिर्फ अपनी व अपनों की चिंता में नहीं डूबा होगा.

हरेक के दो ही भाग्य

अब इतना और स्पष्ट समझ लो कि भाग्य के ऑटोमेशन के सिद्धांत के तहत मनुष्य समेत सबके दो ही संभावित भाग्य हैं. उदाहरण के तौरपर कहा जाए तो आम के बीज के दो ही भाग्य हैं, वह या तो आम का पेड़ बन सकता है, या नष्ट हो सकता है. वैसे ही हर मनुष्य के भी यहां दो ही भाग्य हैं, या तो वह अपने आने का मकसद पा के अच्छा जीवन गुजार सकता है या... फिर वह नष्ट हो सकता है. यहां किसी का तीसरा कोई भाग्य है ही नहीं... और अपने आने का मकसद कौन पा सकता है? जो भाग्य के ऑटोमेशन के साथ बह रहा हो. और ऑटोमेशन के साथ कौन बह सकता है? ...वही जो जाती स्वार्थ से उठकर 'सर्व' की चिंता कर रहा हो.

मकसद चुना नहीं जा सकता

दिक्कत यह है कि चारों ओर मनुष्य को मकसद चुनने की शिक्षा दी जा रही है. जबकि हकीकत यह है कि यहां सबके आने का मकसद ऑटोमेशन से, ऑटोमैटिक तय हो रहा है. सबूत के तौरपर कहा जाए तो आम का बीज चाहकर भी, प्रयत्न करके भी, धर्म-ध्यान करके भी या दिन-रात ईश्वर को पूजकर भी आम के पेड़ के अलावा कुछ नहीं बन सकता है. वह मरते-मर जाए तो भी गुलाब का पेड़ नहीं बन सकता है. यही मनुष्य का भी है. वैज्ञानिक बनने आया मनुष्य या तो वैज्ञानिक बन सकता है या फिर उसका जीवन नष्ट हो सकता है. वह चाहकर या हजार प्रयत्न करके भी अन्य कुछ नहीं बन सकता है. ...यह भाग्य का परम सिद्धांत है. और अपना जीवन बनाने हेतु भाग्य के इस परम सिद्धांत को सबको फॉलो करना ही रहा.

मनुष्य अकेला बुद्धिमान

इस पूरी प्रकृति में बुद्धि सिर्फ मनुष्य को उपलब्ध है. और इसी बुद्धि के बलपर उसे निर्णय करने की क्षमता उपलब्ध है. और इसी से वो फंस भी गया है. अपनी बुद्धि के बलपर वह स्वयं तय करना चाहता है कि उसके लिए क्या अच्छा? और जमानेभर के अज्ञानी युगों से "मनुष्य के लिए क्या अच्छा" की हजारों-लाखों सूचियां लिए घूम रहे हैं और उन्हीं के बलपर हर मनुष्य यहां दिन-रात अपने जीवन के निर्णय करने में लगा है. वह यह समझ ही

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

नहीं रहा है कि ऐसी कोई कोशिश प्रकृति में और कोई नहीं कर रहा है. यहां सूर्य...'चांद' से प्रभावित होकर चांद बनने की कोशिश नहीं कर रहा है. ना ही यहां आम का बीज गुलाब के पेड़ से प्रभावित होकर 'गुलाब' बनने की कोशिश कर रहा है. ना ही उन्हें ये सब कोशिशें करने हेतु ऐसा कोई ज्ञान उपलब्ध है. ना तो उनके धर्म हैं, और ना उनके ईश्वर ही हैं. जरूरत भी नहीं है... ऑटोमेशन के साथ बहने हेतु अन्य किसी बात की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती है. परंतु मनुष्य चारों ओर फैले अज्ञान के बलपर एक-दूसरे को प्रभावित कर भी रहा है, और एक-दूसरे से प्रभावित हो भी रहा है. और उसी बूते पर वो अपने सारे निर्णय भी कर रहा है. वह यह समझ ही नहीं रहा है कि उसका लिया हर निर्णय उसे भाग्य के महान ऑटोमेशन से दूर कर रहा है. सो, यह नियम जान लो कि जो चन्द लोग अपने जीवन के निर्णय स्वयं न कर ऑटोमेशन पर छोड़ रहे हैं, बस उतने ही लोग 'सुखी, सफल और महान' जीवन को उपलब्ध हो रहे हैं.

भाग्य से जुड़ें कैसे?

अब तक इतना तो समझ गए होंगे कि आने का मकसद चुना नहीं जा सकता है. वह ऑटोमेशन से अपनेआप तय होता चला जाता है. पर सवाल यह है कि अपना जीवन ऑटोमेशन को सौंपे कैसे? क्योंकि स्वार्थ से जीने की और हर चीज तय करने की आदत गहरी हो चुकी है. ...तो अपने भाग्य से जुड़ने के लिए मनुष्य के पास दो ही उपाय हैं.

(A) मन पर भरोसा बढ़ाएं

अपने भाग्य से जुड़ने का पहला उपाय यह है कि मनुष्य अपनी बुद्धि के बजाए अपने मन पर ज्यादा भरोसा करना प्रारंभ कर दे. क्योंकि यह मनुष्य का मन ही है जो भाग्य के ऑटोमेशन से कनेक्ट हो सकता है. हालांकि इस हेतु भी मन और बुद्धि का फर्क मालूम होना जरूरी है. दुर्भाग्य से "यह दो अलग-अलग चीजें हैं", यह भी हजार में दो-चार ही जानते हैं. फिर भी आज के बाद गौर कर लेना... तमाम बाहरी प्रभावों में जो आती है, वह आपकी 'बुद्धि' है. जबकि मन अपने प्राकृतिक कारणों से बरतता है. सो, जितनी जल्दी और जितना ज्यादा हो सके, प्राकृतिक कारणों से चल रहे अपने मन के साथ रहने की कोशिश करो. हो सके उतनी बुद्धि पर लगाम कसो. जल्द ही "भाग्य के महान-ऑटोमेशन" से आपका कम्युनिकेशन बैठना प्रारंभ हो जाएगा. हालांकि मन के साथ बहना आसान नहीं. तभी तो अपना भाग्य चमकाना भी आसान नहीं. लेकिन बात सिर्फ आदत की है. बाहरी प्रभावों से प्रभावित होना कम हो जाओगे तो अपनेआप बुद्धि के बजाए मन को तवज्जो देना भी सीख जाओगे.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

(B) स्वार्थ कमजोर करो

ऑटोमेशन से जुड़ने का यह बड़ा ही सीधा उपाय है. सभी ज्ञानियों ने इस पर पूरा जोर दिया है. सच्चे व जानकार ज्ञानी आपको सिर्फ आपकी 'स्वार्थवृत्ति' कमजोर करने को ही कहते हैं. इसीलिए वे कोई आसरे-आश्वासन या क्रियाकांड नहीं सुझाते हैं. क्योंकि इन सबकी जरूरत मनुष्य के 'स्वार्थ' को है. यही कारण है कि इन सबसे उल्टा मनुष्य का 'स्वार्थ' मजबूत होता है. और यही कारण है कि कृष्ण, क्राइस्ट, बुद्ध, कबीर जैसे तमाम ज्ञानियों ने आसरे-आश्वासनों व क्रियाकांडों के खिलाफ जमकर बोला है.

हालांकि महान लोगों ने कुछ भी कहा हो, परंतु दिक्कत मनुष्य की यह है कि चारों ओर सिर्फ स्वार्थ की शिक्षाएं उपलब्ध हैं. ऐसे में स्वार्थ कमजोर कर पाना उसके लिए आसान नहीं रह गया है. अब तो हालत यह हो चुके हैं कि बिना स्वार्थ की सोचे जीवन आगे कैसे बढ़ेगा, यह तक लोगों की समझ में आना बंद हो गया है. ...लेकिन चाहे जो हो, स्वार्थ तो कमजोर करना ही पड़ेगा. क्योंकि उसके बगैर भाग्य के ऑटोमेशन से ट्यूनिंग बैठने वाली नहीं है. स्वार्थ कमजोर करे बगैर 'सर्व' किसे कहते हैं, यह समझ में आनेवाला नहीं है. और तब तक ''सर्व हिताय-सर्व सुखाय'' हेतु चल रहा भाग्य का यह महान ऑटोमेशन आपको थामने वाला नहीं है.

सर्व का गणित भीतर

अब सवाल आता है कि स्वार्थ कमजोर कर सारे निर्णय 'सर्व' हेतु कैसे लें? ...तो यह समझ लो कि यह एक विशाल गणित है. सर्व में सभी मनुष्यों का स्थायी हित शामिल होता है. और इतना बड़ा कैल्क्युलेशन सिर्फ आपके मन का ऑटोमेशन ही कर सकता है. अत: आप 'सर्व' को बुद्धि से कैल्क्युलेट करने की कोशिश मत करना. आप कुछ भी कैल्क्युलेट नहीं कर पाएंगे. जब आपका स्वार्थ कमजोर होगा तो आपके मन की गहराइयों में बैठा आपका ''सर्वहिताय-सर्वसुखाय कम्प्यूटर'' अपनेआप सक्रिय होने लग जाएगा. और धीरे-धीरेकर आपको सर्वहित समझ में आने लग जाएगा. ...बस फिर उस दिन से आपका हाथ कोई नहीं पकड़ पाएगा. आपका जीवन, सुख और सफलता के सांसारिक व मानसिक दोनों शिखर छूना शुरू हो जाएगा. 'कृष्ण' भाग्य के इस कम्प्यूटर के बादशाह थे. उन्हें क्या करने व क्या बोलने के हजारों वर्ष बाद के प्रभावों का भी पूरे-पूरा अंदाजा था. आप भी अपने तमाम स्वार्थ त्यागकर अपने भीतर के कम्प्यूटर को... 'कृष्ण' के कम्प्यूटर के निकट ले जा सकते हैं.

सो अब आप भाग्य के सिद्धांत पर आधारित ''सीक्रेट कुंजियों'' को पढ़ें व उन्हें भीतर अपने अनुभवों में खोजें. यह तय समझ लें कि जितनी प्रतिशत कुंजियां आपके

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

व्यवहार में हैं, उतने ही प्रतिशत आप भाग्य के महान ऑटोमेशन से कनेक्टेड हैं और उसी अनुसार आपके जीवन का हाल है. सो भाग्य पर लिखी इन कुंजियों को आप अपने जीवन की वास्तविक परीक्षा के तौरपर लें. इन्हें ज्यादा-से-ज्यादा अपने रोजमर्रा के व्यवहारों में लाने की कोशिश करें. इससे जल्द ही आपके भीतर के कम्प्यूटर का भाग्य के ऑटोमेशन से तालमेल बैठना शुरू हो जाएगा. क्योंकि इन ''सीक्रेट कुंजियों'' में भाग्य के साथ बह रहे मनुष्य के लक्षणों की ओर भी इशारा किया गया है. जितना ज्यादा आप उन लक्षणों के निकट जाने की कोशिश करेंगे, उतनी जल्दी आपका जीवन ऊंचाइयां छूना प्रारंभ कर देगा. ...उतनी जल्दी आप अपने आने के मकसद की राह पर लग जाएंगे. ...यह ध्यान रख ही लेना कि यहां हर मनुष्य की तमाम प्रकार की बेचैनियों का एकमात्र कारण उसका अपने आने के मकसद से भटक जाना है. जबतक मनुष्य अपने आने का मकसद न पा ले, तबतक ना सिर्फ वह बेचैन रहेगा, बल्कि उसी बेचैनी की मनोदशा में वह मरेगा भी. यह नियम है कि जैसे आम के बीज को आम का पेड़ बने बगैर तृप्ति नहीं मिल सकती है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने आने का मकसद पाए बगैर तृप्ति नहीं मिल सकती है.

- जब आपके पास कुछ सकारात्मक करने की चॉइस नहीं है तो स्वाभाविक तौरपर आपके पास कुछ सकारात्मक हेतु निर्णय करने की सत्ता भी नहीं है.

- जो अपनी जमीन पे सेटल हो गया...वो संतोष में आ गया. और जो संतोष में आ गया, फिर उससे भगवान पूछता है कि बोल तुझे क्या चाहिए...?
- जब तक आपका टाइम यानी मन नहीं सुधरता है, तब तक स्पेस यानी आपकी बाह्य परिस्थिति में कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं आता है.
- परिस्थिति जो करने की मांग कर रही है, वह आपको करना ही पड़ेगा. चाहे जो हो जाए, मनुष्य को 'वर्तमान' को सलाम करना सीखना ही होगा.
- कर्म और फल एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. लेकिन आम मनुष्य के लिए कर्म अलग है व फल अलग. और यही गलत है... क्योंकि यह नियम है कि जिस व्यक्ति के कर्म का उसके फल से जितना फासला है, उतना ही वो अपनेआप को अपने महान भाग्य से दूर करता जा रहा है.
- आप जैसे हैं वैसे परमात्मा हैं; भीतर-बाहर किसी भी बदलाहट हेतु ज्यादा तड़पें मत. बदलाहट की हर तड़प आपको आपसे दूर ले जाएगी. आपको व आपकी परिस्थितियों को कब, कितना और कैसे बदलना, यह हमेशा भाग्य के ऑटोमेशन पर छोड़ना बेहतर होता है.
- यह भाग्य का परम नियम है कि अपने साथ की गई हर जबरदस्ती आपको परेशान करेगी, और एक दिन आपको बर्बाद करके रख देगी.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- मन को किसी से पक्षपात और भेद नहीं है. वह तो अपनी मरजी का मालिक है. यही कारण है कि जो कोई आपके मन को जितना मारता है, उतना आप उसके प्रति प्रतिशोध से भर जाते हैं. ...और यह पूरी प्रक्रिया स्वचालित है. सो हो सके वहां तक न अपना, न दूसरों का मन मारो. ...वरना भाग्य के ऑटोमेशन से बिछड़ते चले जाओगे.
- हर महान व्यक्ति के जीवन में इतना ही देख लेना कि... वह क्या सिद्ध करके गया? ...बस आपको उसके बाबत अन्य कुछ जानने या समझने की जरूरत नहीं रह जाएगी. क्योंकि हरकोई यहां कुछ सिद्ध करके ही महानता को उपलब्ध हो रहा है.
- आपके मन का ऑटोमेशन, जो कि बिगड़ चुकने के कारण अपनेआप एक्शन-रिएक्शन कर रहा है, मेहरबानीकर उसे अपनी सारी एक्शन-रिएक्शन कर लेने दो. आप उन ऑटोमैटिक चल रही एक्शन-रिएक्शन के बीच में आओ ही मत. इस एक आदत से आप महान व अद्वितीय इसी जन्म में हो जाएंगे. यह समय और भाग्य का परम सिद्धांत है.
- आपके आसपास जो भी घटना घटती है उसमें आपके लिए भाग्य का एक इशारा छिपा होता है. अगर वो इशारा मनुष्य समझ जाए तो उसका आनेवाला जीवन सुख और सफलता से भर सकता है.
- कोई भी महान व गहरी शिक्षा आपके तबतक काम नहीं आएगी, जब तक कि आप "अपने भीतर के ऑटोमेशन" के निकट नहीं जाएंगे.
- गए बगैर जाना सीखो... और देखे बगैर प्रकाश लेना सीखो. सभी ने महानता इस एक गुण के बलपर ही पाई है. सिर्फ मनुष्य के मन की सच्चाई यह चमत्कार कर सकती है.
- जीवन क्षणिक है, सो जीवन की दिशा क्षण को तय करने दो.
- जहां कोशिश नहीं फ्लो है, वहीं ब्यूटी है.
- आप जैसा और जितना अपने को चाहते हैं, ठीक उसी तरह व उतना ही आप दूसरों को चाहते हैं. अर्थात जितने आप अपने दुश्मन हैं, उसी मात्रा में आप जगत के भी दुश्मन हैं. यह चाह का परम नियम है.
- जितनी गड़बड़ आप में हैं, उतनी ही गड़बड़ दुनिया आपके साथ कर रही है. यहां कहीं से किसी को कुछ एक्स्ट्रा नहीं मिल रहा है.
- कोई भी व्यक्ति किसी भी मात्रा में आपको परेशान कर रहा है, तो जरा गौर करना कि उसी मात्रा में आप उसको परेशान कर रहे हैं या नहीं? उसके बगैर वह आपको परेशान कर ही नहीं सकता. क्योंकि यह भाग्य का अटल नियम है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- आप अपने साथ ठीक रहें, आप अपने से प्रेम करें, आप अपनी चिंता करें; बस फिर आपसे गड़बड़ होना बंद हो जाएगी.
- यहां पर सारी सजाएं आपको ऑटोमैटिक मिल रही हैं. चूंकि आप मान से प्रभावित हो रहे हैं, इसीलिए आप अपमान से विचलित भी हो रहे हैं.
- दूसरों के जीवन में दखलंदाजी जितनी कम करेंगे उतनी आपके जीवन में दूसरों की दखलंदाजी कम हो जाएगी, और वही आपका सुख है.
- यह कहनेवाले जो कहते हैं कि आप पापी हैं, आपमें ये गड़बड़ है, ये चीज खराब है - प्रश्न ही नहीं उठता! सबकुछ परमात्मा का बनाया हुआ है... तो खराबी का सवाल ही कहां उठता है?
- प्रकृति जो सृजनात्मकता हमें भेजे, वो हमें भीतर से निकालते ही जाना चाहिए - क्योंकि उसी से तमाम मनुष्यों का उद्धार हो सकता है.
- दूसरों को आप स्वतंत्रता नहीं देते हैं तो आप भी स्वतंत्र नहीं हो पाते हैं. क्योंकि मन का हर वार दो-तरफा होता है. आप दखलंदाजी करते हैं तो आपका मन इतना कमजोर हो जाता है कि दूसरे भी आपके जीवन में दखलंदाजी कर जाते हैं. यही प्रकृति की ऑटोमैटिक न्याय-व्यवस्था है.
- जो कुछ जैसा भी है, व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति; समझौता कर लें. और सबसे बड़ा समझौता अपने मन, अपनी इन्द्रियां, अपने अहंकार, अपने शरीर और अपनी बुद्धि के साथ कर लें. क्योंकि हर प्रकार की सकारात्मक बदलाहट पर कुदरत का एकाधिकार है.
- जब कुदरत आपको किसी बात के लिए नहीं रोकती तो आप बार-बार क्यों अपने अहंकार के बल पे दूसरों को टोककर प्रकृति से भी बड़ा बनना चाहते हैं?
- जितना सुधारने की कोशिश करते हैं, उतना बिगड़ता है. ...क्योंकि वो आपकी सत्ता के बाहर की बात है. हर सुधार पर प्रकृति का एकाधिकार है. और यह नियम एक दो नहीं, जीवन के सभी मामलों में लागू है.
- जब आपके भीतर के मन, बुद्धि, अहंकार, इन्द्रियों व डीएनए-जीन्स के तमाम आपसी संघर्ष खत्म हो जाएंगे, तब बाहर के सारे संघर्ष स्वत: ही खत्म हो जाएंगे.
- आपका 'विश्व' जो और जैसा है, उसका निर्माण आपने ही किया है. फिर शिकायतें क्यों और किससे करना?
- बाहरी घटनाएं अगर भीतर प्रभावित करना बंद कर दे, तो आप बादशाह हैं.
- आपके लिए प्रकृति से सिर्फ प्रकाश भेजा जा रहा है. अंधकार की तमाम शिक्षाएं बुद्धिजनित हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- कोई भी भाव हो या कोई भी व्यवहार हो, उसके टॉप को इस कदर छूएं कि उसके विपरीत का अस्तित्व ही ना बचे. फिर आपके किसी भी भाव या व्यवहार से कभी कोई गड़बड़ नहीं होगी.
- कोई भी आपके लिए जीवित ही तबतक है जबतक कि उसका प्रभाव आपके भीतर पड़ रहा है. फिर चाहे वो व्यक्ति हो, वस्तु हो, धन हो या विचार हो.
- आप... 'आप' बनने की यात्रा पर निकले हो, तो ही आप परफेक्ट हो. क्योंकि आप दूसरा कुछ बन ही नहीं सकते.
- आप जहां बैठते हैं, आप जहां उठते हैं, आप जो करते हैं; उस टाइम और स्पेस के कॉम्बीनेशन में वहां कोई दूसरा कुछ नहीं कर सकता. यह चारों ओर का प्रकट सत्य है. इसका अनुभव करते ही आप अपनी अद्वितीयता को भी पहचान लोगे.
- आपको अपनी मरजी से कुछ तय करने की छूट ही नहीं है. क्यों...? क्योंकि आपके अहंकार की इतनी ताकत ही नहीं है कि वह आपके जीवन की बेहतरी के लिए स्वयं कुछ तय कर सके.
- मन और प्रकृति के तल पे कोई चीज एक तरफा नहीं हो सकती. आपको कितना भी बड़ा नुकसान हो जाए, कितनी भी खराब खबर आ जाए; उसमें कहीं तो... कुछ तो अच्छा छिपा ही होगा. ...बस वही आपके लिए है.
- हर कोई सफलता चाहता है. सवाल यह कि फिर उसे मिलती क्यों नहीं है? उसका एकमात्र कारण है कि वह ऐसे खजाने के पीछे दौड़ रहा है जो उपयोग करने से कम हो जाता है.
- आप स्वतंत्र हैं तो स्वतंत्रता का उपयोग करें और जानें कि मुझे कुछ नहीं मालूम, और इसीलिए मुझे कुछ चाहिए नहीं. मैं बैठ गया...ठहर गया. अब परमात्मा मेरी योग्यतानुसार मेरे जीवन को राह दिखाए. ...बस आपका काम हो जाएगा.
- आपने बाहर से शिक्षा लेकर बहुत-सी चीजें तय कर रखी हैं. और जब आपने बहुत कुछ पहले से तय कर रखा है तो वर्तमान की वास्तविकता आप समझ ही कैसे पाएंगे?
- जीवन क्षण-क्षण है. यहां सबकुछ समय-संजोग-परिस्थिति के आधार पर तय होता चला जाता है. और आपको हरहमेशा उसी के अनुसार बरतना होता है. ...ऐसे में बहुत ज्यादा ज्ञान का आप करोगे क्या?
- दखल दे-देकर आपने अपने मन का ऑटोमेशन बिगाड़ दिया है. अगर आप हस्तक्षेप करना छोड़ देंगे तो आपके अन्दर मन के ऑटोमेशन की जगह "ब्रह्म का ऑटोमेशन" बैठ जाएगा. और उसी को हम 'आत्मा' कहते हैं. आत्मा का अर्थ ही इतना है कि अब बुद्धि कुछ करती नहीं, अहंकार कुछ करता नहीं...और

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

मन का करना भी सब बंद हो गया. अब सब उसका... और जब सब उसका तो फिर आपका उद्धार ही...उद्धार.

- सत्य जानने के लिए चारों ओर फैले ब्रह्मांड पर एक नजर दौड़ाएं, वहां न जाने कितनी विशाल लीलाएं नियमपूर्वक चल रही हैं. और सब-की-सब लीलाएं परफेक्शन के साथ चल रही हैं. आपका तो छोटा-सा जीवन है, आप उसे ब्रह्मांड की इस महान लीला को सौंप क्यों नहीं देते हैं?
- हवा और पानी की तरह आपका जीवन भी एक बहाव है, उसको बहने दो. आप बीच में क्यों आते हो?
- दु:ख आपको मार रहा है और आनंद आपका कम्प्यूटर सुधार रहा है. यही कारण है कि दुखी यहां और दुखी होता चला जा रहा है, और सुखी मनुष्यों की मस्ती रोज-रोज बढ़ती चली जा रही है.
- अगर मुझे कार्य करने का कारण नहीं मालूम, अगर कार्य के परिणाम पर मेरी नजर नहीं, अगर मुझे दिमाग लगाना ही नहीं; तो बड़ा गहरा अंधकार लगता...कि होगा क्या? लेकिन इसी अंधकार ने उन सबका जीवन बनाया है, जिसे आप सफल व्यक्ति कहते हैं. चाहे एडीसन हो, चाहे आइन्स्टाइन हो या चाहे स्टीव जॉब्स हो.
- सबको ठीक समय पर ठीक जगह पहुंचाने की जवाबदारी परमात्मा की है. लेकिन जब आप अपनी जिदकरते हैं तो गलत समय पर गलत जगह पहुंच जाते हैं. स्वयं देख लो? क्या आप इस समय जहां हैं...जिंदगी के सही मुकाम पर हैं?
- तमाम दखलंदाजियों का अंत लाते ही आप परमात्मा से जुड़ जाते हैं, सच तो यह है कि दखलंदाजियां बंद करते ही आप स्वयं परमात्मा हो जाते हैं. फिर जो कुछ भी आपमें गड़बड़ रह जाती है, वह तो अपने हिसाब से जीवन चलाते-चलाते आपका जागा परमात्मा स्वयं ठीक कर देता है. जीवन बनाने की यह एकमात्र सीधी प्रक्रिया है.
- जो भोलों को सताते हैं, वो बड़ी तकलीफ पाते हैं. क्योंकि भोले-भाले लोग भगवान के प्यारे होते हैं. अत: भोलों को सताने पर सीधे परमात्मा की मार झेलनी पड़ती है.
- आपके जीवन में जो कुछ भी शुभ है वो अचानक मिला है, और जो भी दु:ख है... वो आपने योजना बनाकर पाया है.
- जो कुछ आना है, अपनेआप आएगा. क्या आना, यह परमात्मा को तय करने दो.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- इस प्रकृति में कोई कण अकारण नहीं है. हर चीज का अपना एक महत्व है और हर चीज के अस्तित्व का अपना एक मकसद है. ...आप भी इसमें अपवाद नहीं है.
- विशाल कुदरत को छोड़... टुकड़े-टुकड़े में बंटे इस संसार के संपर्क में रहने का प्रयत्न कर 'आप' अपने को छोटा बनाए चले जा रहे हैं. ...और जितना छोटा 'आप' अपने को बनाए चले जा रहे हैं, बस उसी मात्रा में आपके जीवन में दु:ख आते चले जा रहे हैं.
- किसी मनुष्य के साथ कुछ भी पलभर को ऐसा नहीं घट सकता जो उसके अहित में हो. सवाल 'स्वार्थ' से उठकर दृष्टि बड़ी करने का ही है.
- सारी समस्या 'क्षण' से बाहर झांकने से शुरू होती है.
- जब सबकुछ वो ही चला रहा है तथा हमारे हित के लिए ही चला रहा है...तो ऐसे में हमारे पास जरूरत से ज्यादा सोचने की, समझने की या ज्ञान लेने की जगह ही कहां है?
- किसी भी वस्तु के दृढ़तापूर्वक निषेध की जीवन में जगह नहीं है. उसकी आवाज पर तो लोगों ने जहर भी पिया है, तथा उसकी एक आवाज पर सूली पर लटकनेवाले लोग भी यहां मौजूद हैं.
- अगर इस समय क्या करना, यह पता चलना ही एकमात्र सच्चा ज्ञान है, तो फिर यह तय है कि सुने-सुनाए ज्ञान मनुष्य के काम नहीं आ रहे हैं. ...क्योंकि इस क्षण तो आपको कुछ भी करना पड़ सकता है.
- कोई ऐसी घटना कुदरत में घट ही नहीं रही कि जिसमें आपका कुछ-न-कुछ फायदा न छिपा हुआ हो. ऐसे में, जीवन में निराशा को जगह ही कहां है?
- कुदरत का नियम अटल है कि जो चीज आप सिकोड़ना चाहते हैं, उसका विस्तार करो...तथा जिस चीज का विस्तार करना चाहते हैं, उसको सिकोड़ लो. लेकिन देख लो, यहां सब इस महान सत्य को भी उल्टा ही समझ रहे हैं. तभी तो लाखों में एक महानता को उपलब्ध हो रहा है.
- अपनेआप मिले पदार्थ में आप जी लो. न खोजने जाओ और न ही जो आए उसका अस्वीकार करो. देखना, एक दिन देखते-ही-देखते आप सबकुछ पा लेंगे.
- जो आपका आज हैं, वो आपके कल का टोटल है. और कल कहां से निकलेगा? वहीं से, जो आपके आज का टोटल है.
- जो अपनेआप आएगा वो अमृत होगा. जिसे आप ढूंढ़ने जाएंगे वो जहर सिद्ध होगा. यह समय और भाग्य का अटल सिद्धांत है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- हर चीज की एक सीमा होती है. अत: कहां रुकना यह मालूम हो, तो आप संकट से बच सकते हैं.
- आपका 'कार्यक्षेत्र' वो है, जहां 'प्रतिस्पर्धा' नहीं है. 'महान' बनने का यह सबसे बड़ा सार-सूत्र है.
- जहां आप कोशिश नहीं कर रहे, जहां आप प्रयत्न नहीं कर रहे, जहां आप छेड़खानी नहीं कर रहे; वहां आपको परेशानियों का सामना भी नहीं करना पड़ रहा है. ...फिर ये बुरी आदतें छोड़ क्यों नहीं देते हैं?
- आपको अपने पूरता कुदरत से हमेशा ट्यून्ड रहना चाहिए. फिर जो उस ट्यूनिंग में आपसे ऍडजस्ट होता चला जाएगा, वो आप के पास टिक जाएगा - मनुष्य हो, विचार हो, वस्तु हो, सम्पत्ति हो या कुछ भी... और जो उस ट्यूनिंग में नहीं बैठेगा, वो बिछड़ता चला जाएगा. इसमें आपके चुनाव करने की जगह ही कहां है?
- भगवान की मर्जी के बगैर पत्ता नहीं हिलता का मतलब इतना ही है कि आप अपने जीवन में भगवान को साथ लिए बगैर रत्तीभर पॉझिटिव नहीं कर सकते हैं.
- यदि किसी कार्य में आपका कोई रोल होगा तो आपके 'टाइम' या 'स्पेस' से उस बात का इंडिकेशन आएगा.
- आप गलत समय पर गलत मंत्र पढ़ते हैं और गलत वजह से पढ़ते हैं; यही आपके जीवन की समस्या है. सही समय पर सही मंत्र पढ़ना आ जाए तो फिर जीवन में कोई समस्या बचे ही न.
- अहंकार आपको तब पकड़ता है जब कुछ पाने के लिए आपने मेहनत की हो, लेकिन जिनको अपनेआप मिला हो, वे महान लोग चाहकर भी अहंकार करें तो कैसे?
- अपने मन, बुद्धि, अहंकार, इन्द्रियों और शरीर को खुला छोड़ दो. वे सब अपनेआप कर लेंगे. हालांकि यह इतना आसान नहीं है. ...फिर भी यह बात समझ में आ जाएगी तो आपको महान-से-महानतम बनने में देर नहीं लगेगी.
- हर मनुष्य के जीवन में सर्वहित की खबर आती है. उसका आगमन ही इसलिए हुआ होता है कि उसके भीतर से कुछ ऐसा निकले कि पूरा विश्व उससे लाभान्वित हो जाए. परंतु स्वार्थ में उलझे रहने के कारण सब 'महान' बनने का यह अवसर गंवा देते हैं.
- अगर आप अपना रोल निभा रहे हैं... तो अहंकार कभी नहीं पकड़ेगा.
- आपकी बुद्धि, आपका अहंकार, आपकी शिक्षाएं और आपके तथाकथित संप्रदाय आपको स्वार्थ पालना सिखाते हैं. लेकिन सत्य यह है कि जीवन

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

आपका तभी बनेगा जब आप ‘सर्व’ की राह पर चल पड़ेंगे.

- बाहर कहीं भी और कुछ भी घट रहा है. ...उसमें एक चीज आप तय समझ लो कि वह आपके भले के लिए ही घट रहा है. सिर्फ उस भले को देखने की आंख जगाओ, आपका उद्धार हो जाएगा.
- आप सर्व की चिंता करो. कोई भी मौका सर्व का आए, लगे कि इस काम से कइयों का भला हो सकता है... तो फिर उस कार्य को जीवन का ध्येय बना लो. मौका न मिले तो सर्व के उद्धार हेतु चल रहे किसी बड़े काम के भागीदार बन जाओ. पर यह कीमती जीवन ‘स्वार्थ’ में बर्बाद मत ही करो.
- प्रयत्न आपको उसी चीज हेतु करना पड़ता है जो सहूलियत से नहीं निपट रही है. सवाल यह है कि उसके स्वत: निपटने का इन्तजार क्यों नहीं करते. इतना-सा सब्र करते सीख जाओगे तो जीवन में कमाल हो जाएगा.
- आपको अपने मन की नेचरल रिएक्शन पर पूर्ण विश्वास करना पड़ेगा. क्योंकि एक वही आपको आपकी मंजिल तक पहुंचाने में सक्षम है.
- किनको दूर करना, किनको निकट लाना, किसको दोस्त बनाना, किसको दुश्मन बनाना, कौन-सा क्षेत्र चुनना, कहां जाना, कब जाना, क्यों जाना; सब आपके मन को तय करने दो; देखते-ही-देखते एकत्रित सारा कचरा अपनेआप छंट जाएगा.
- परिणाम तय करने की सत्ता पाना चाहते हो तो वर्तमान में पूर्णता से जीना सीखना पड़ेगा.
- अपनी नेचरल रिएक्शन पे भरोसा करो. बाकी सबकी नेचरल रिएक्शन्स पर भी पूरा भरोसा करो- वह कुछ भी देवे; आपके लिए तो प्रसाद ही सिद्ध होने वाला है. आप टेन्शन पालो ही मत. आप चेतो तब जब कोई ऊपरी व्यवहार करे.
- जो कुछ भी घट रहा है वह अद्भुत और फायदेमंद ही है. लेकिन बुद्धि इसे समझती नहीं. उसे तो बस; अरे, ऐसा हो गया! अरे, उसने ऐसा कहा! अरे, ये दूर तो नहीं हो जाएगा? अरे, धन तो नहीं लुट जाएगा? अरे, नुकसान तो नहीं हो जाएगा? परंतु आप समझदारी दिखाओ और निगाह संभावित नुकसान पर लगाओ ही मत. आप तो निगाह उससे होने वाले छोटे-मोटे फायदे पर गड़ा दो. ऐसे छोटे-मोटे फायदे बटोरते-बटोरते कब महानता को उपलब्ध हो जाओगे, पता भी नहीं चलेगा.
- मनुष्य के चारों ओर जो कुछ भी घट रहा है, वह उसे उसकी अंतिम मंजिल तक पहुंचाने के लिए ही घट रहा है. बस घट रही घटनाओं की डोर थाम लो, मंजिल तक अपनेआप पहुंच जाओगे.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान न हो. बस इंतजार करो और जिद छोड़ो.
- सर्व के लिए आप एक पैसा देंगे, वह लाख पैसा भिजवाएगा; यह उसका सिद्धांत है. वहीं सिर्फ अपनी चिंता करनेवाला एक नहीं तो दूसरी परेशानी से घिरा ही रहेगा, यह भी नियम है.
- आपके सामने जो कुछ भी घट रहा है वो सिर्फ आपके लिए घट रहा है. समझदार वह है जो हर घटी हुई घटना का फायदा उठाना जानता हो.
- 'पलभर' को भी किसी मनुष्य के सामने ऐसा कुछ कभी नहीं घट रहा जो उसके लिए उपयोगी न हो.
- जब कभी आप टाइम और स्पेस के सिद्धांत को तोड़ते हैं, तभी जाकर जीवन में संकट आते हैं.
- हर परिस्थिति हजारों मनुष्य के लाखों कर्मों से बन रही है. सो हर बनती-बिगड़ती परिस्थितियों में आप पिक्चर में हों ही, ऐसा जरूरी नहीं है. सो बात, बिना बात कूद पड़ने की आदत से छुटकारा पा लो.
- प्रकृति में समस्या व समाधान एक साथ पैदा होते हैं. दोनों के बीच फासला सिर्फ समय का होता है. अत: इंतजार कर सकनेवाले के लिए कोई समस्या... 'समस्या' नहीं रह जाती है.
- दुविधा में हो, तो तबतक निर्णय मत करो जबतक कि दो में से एक चीज डिलिट नहीं हो जाती है. एक के डिलिट होते ही फैसला लेना नहीं पड़ता है, स्वत: हो जाता है. ...और वही प्रकृति की मरजी होती है.
- दुविधा में हो तो निर्णय मत करो, और समस्या का वन-पॉइंट सोल्यूशन नहीं है तो उसे सॉल्व करने की कोशिश मत करो. बस यह दोनों तमाम प्रकार की समस्याओं से निपटने के सबसे बड़े ब्रह्मसूत्र हैं.
- मनुष्य की सिस्टम और प्रकृति की सत्ता, ये दो ही ''सनातन सत्य'' हैं. और ये दो ही हैं जो कि मनुष्य-जीवन को प्रभावित भी कर रहे हैं. अत: इन दोनों की ट्यूनिंग ही मनुष्य को सुख और सफलता की राह पे लगा सकती है.
- कमाल है! यहां-वहां अपना भाग्य पूछते फिर रहे हो. अरे, मनुष्य जन्म मिला है, कुर्सी या पलंग बने नहीं पड़े हुए हो; भला इससे खूबसूरत भाग्य और क्या होगा?
- बीज का पेड़ बनके उगना, एक स्वाभाविक प्रक्रिया है. ऐसे ही बच्चों का सुखी और सफल होना भी उनकी एक स्वाभाविक प्रक्रिया है. परंतु कोई बच्चों को उनके मार्ग पर चलने दे, तब न.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- मनुष्य की पूरी असफलता का राज यह है कि उसकी बागवानी गलत हो रही है. उसके बच्चों को आवश्यक खाद-पानी नहीं मिल रहा है... और यही एकमात्र कारण है कि 'मनुष्य' जिसका कि भाग्य सुख और सफलता होना चाहिए था, वह दु:ख और असफलता के भंवर में फंस गया है.
- बच्चों की फ्रिक्वेन्सी पवित्र होती है, उनकी निर्दोषता अच्छी होती है... और उनकी सरलता भी गजब की होती है. मनुष्य बड़े होते-होते यही बचाए रख ले तो भी वो कहां-से-कहां पहुंच जाए.
- पैदा होते वक्त उस जहां से आप सबकुछ लेकर आए थे, दिक्कत यह खड़ी हो गई कि बड़े होते-होते इस जहां ने सबकुछ लूट लिया.
- प्रकृति का नियम है कि यहां पर मनुष्य हो या कोई अन्य; न एक नया कण पैदा कर सकता है, न किसी मौजूद कण को मिटा सकता है. और यही नियम मन के भावों पर भी लागू है. यह समझ लोगे तो जीवन बनाने हेतु अन्य किसी ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी.
- मेहरबानीकर एकबार आप अपने होने से राजी हो जाएं. ...बस फिर आपका जीवन उसी क्षण से बढ़ना शुरू हो जाएगा.
- जो बच्चा सुपर-कोन्शियस माइंड में बैठा है, अगर वह एक कदम चल ले और कलेक्टिव कोन्शियस माइंड में झांक ले, तो ये प्रकृति का नियम है कि फिर वह बच्चा 'क्रूझ-कन्ट्रोल' में आ जाता है. ...फिर उसको प्रकृति थाम लेती है. परंतु गलत व नॉन-सायकोलोजिकल शिक्षाएं बच्चे को वह एक कदम तक चलने कहां दे रही है?
- मन के साथ बहने में सबसे ज्यादा साहस चाहिए. यह एक साहस कर लो, बाकी तो सब... दो-चार खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ सबकुछ अपनेआप सेट हो जाएगा.
- जीवन में भटक चूके लोगों के लिए बात ''सुपर-कोन्शियस माइंड'' में वापस आने की ही है, फिर तो तत्काल प्रकृति थाम लेती है. तत्पश्चात तो क्रूझ कंट्रोल में जीवन बहता चला जाएगा और सब बैठे-बिठाए मिलता चला जाएगा.
- अगर आपको भीतर कुछ भी नहीं चाहिए तो आपको सबकुछ मिल जाएगा. इसीलिए तो 'चाह' मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है.
- जो मनुष्य जैसा है...वैसा कम-से-कम उसके लिए तो परफेक्ट ही है. ...क्योंकि अपने को ऐसा उसी ने बनाया है.
- प्रकृति कोई ऐसा मनुष्य नहीं भेजती जो महान कार्य करे बगैर और ऐतिहासिक सुख और सफलता भोगे बगैर यह संसार छोड़ दे. यह तो मनुष्य की अपनी मेहनत का कमाल है कि लाखों में एक कोई महान कार्य कर पा रहा है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- आप जैसे हैं वैसे परफेक्ट हैं, क्योंकि आपका वजूद टिके रहना बहुत जरूरी है. क्यों...? क्योंकि आपका ऐतिहासिक महत्व ही यह है कि आपके जैसा दूसरा कोई कभी पैदा नहीं होनेवाला है. अपना नेचरल वजूद खो दोगे, तो एक महान अवसर भी खो दोगे.
- मन का एक खराब भाव आपको जीवन में पीछे ले जाता है और मन का एक अच्छा भाव आपको जीवन में आगे ले जाता है. अत: निरंतर श्रेष्ठ भावों में रहने की कोशिश करो.
- कोई 'वर्तमान' ऐसा नहीं है कि जिसमें कुदरत का वरदान मनुष्य को उपलब्ध न हो. और कोई 'भूतकाल' या 'भविष्य' ऐसा नहीं है, जहां कुदरत आपके साथ खड़ी हो. यही वर्तमान में जीने का महत्व है.
- जीवन की तमाम झंझटों से मुक्ति का एक ही मार्ग है कि एकबार को आप स्वयं को 'जैसे हैं...वैसा स्वीकार लो'. जबरदस्ती के बदलाहटों की चाहें खत्म, झंझट खत्म.
- इन्वोल्वमेन्ट और एक्सपेक्टेशन अपनेआप में कोई फोर्स नहीं है, बल्कि यह पैदा होती है पक्षपात और चुनावों से. जीवन से "पक्षपात और चुनाव" हटा दो, आप ना सिर्फ दु:ख-दर्दों से छुटकारा पा लेंगे, बल्कि एक महान जीवन की ओर अग्रेसर भी होते चले जाएंगे.
- प्रकृति के सामने हम जो इतने बौने और छोटे नजर आते हैं, यह हमारी बौद्धिक और शारीरिक सीमा है. बाकी चेतना के स्तर पर, इंटेलिजेन्स और क्रिएटिविटी के स्तर पर यह मनुष्य किसी कीमत पर इस प्रकृति से कम नहीं है. ...पर यह उन चन्द लोगों की बात है जो चेतना के शिखर छू रहे हैं.
- इंटेलिजेन्ट व्यक्ति का पहला लक्षण यह है कि वह कुदरत की ओर से उसे मिली "नेचरल इंटेलिजेन्स" को ज्यादा महत्व देता है. इसलिए उसको अपनी "शांति और मस्ती" से ज्यादा प्रिय अन्य कुछ नहीं होता है.
- प्रकृति से ट्यून्ड रहना एकमात्र ज्ञान है. और आश्चर्य यह है कि मनुष्य प्रकृति से ट्यून्ड ही पैदा होता है. इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि मनुष्य पैदाइशी ज्ञानी है. फिर यह इतना अज्ञानी लगता क्यों है? ...ज्ञान की खोज में जो निकल पड़ा है.
- बंदर के बच्चे को उछलते सिखाने की क्लास नहीं होती, शेर के बच्चे को शिकार करते सिखाने की क्लास नहीं होती, गुलाब के बीज को गुलाब का पेड़ बनाने की क्लास नहीं होती. क्लासों की जरूरत तो मनुष्य को भी नहीं है, यदि उसे ज्ञान अपने भीतर से सिंचते आ जाए तो.
- हम कहते हैं कि बच्चा भगवान का स्वरूप है. ...यकीनन है. निवेदन सिर्फ इतना है कि उसे अपना वह स्वरूप टिकाए रखने दो.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- बार-बार कहते हैं कि लक्ष्मी उल्लू पे बैठती है. आश्चर्य यह कि फिर भी उल्लू बनने को तैयार कौन है? जिसे देखो वह दूसरे को उल्लू बनाने में लगा है, ऐसे में उसपर लक्ष्मी बैठे तो भी कैसे?
- जीवन में जो भी सफलता की राह पर बढ़ रहे हैं समझ लेना कि वे गति देनेवालों और अवरोध पैदा करनेवालों से बचना सीख गए हैं. ...अर्थात वे अपनी राह खुद चल पड़े हैं.
- छोड़ने की प्रोसेस में कभी मत पड़ना, कुछ छूटनेवाला नहीं है, उल्टा डबल से पकड़ बैठेंगे और एकदिन विकृत हो जाएंगे. यहां सबकुछ ऑटोमैटिक है. तभी तो कहते हैं कि पकड़ने से बचना भी एक आर्ट है, और पकड़े को छोड़ना तो महाआर्ट है.
- आप जल्दी-जल्दी बदलने की जिद मत करो. कुछ इंतजार करो. कुछ तसल्ली रखो. उससे आपमें पावर ऑफ ट्रान्सफॉर्मेशन आ जाएगा. ...फिर सब स्वत: ही बदल जाएगा.
- जो भी सफल हैं, उन्होंने अपनी नेचरल इंटेलिजेन्स का उपयोग किया है. जीवन के धक्के तो वे खा रहे हैं जो बाहर से ओढ़ी इंटेलिजेन्स लिए घूम रहे हैं.
- आप ध्यान सिर्फ जीने पर दो. क्योंकि आपका 'जिंदा' रहना जरूरी है. जीते-जीते ही भीतर-बाहर सारे सकारात्मक परिवर्तन आ जाएंगे. मर-मर के जिए तो चूक जाओगे. क्योंकि 'मुर्दों' में कोई परिवर्तन नहीं आते.
- कोई दुनिया में ऐसा नहीं जो परमात्मा की तरफ नहीं जा रहा है. फर्क सिर्फ इतना है कि किसी ने सीधा रास्ता पकड़ा हुआ है तो कोई लंबे मार्ग से जा रहा है. ...ऐसे में घृणा किससे करना?
- आपने जो पकड़ा है, उसमें जी लो. जीते-जीते एक दिन वह भी छूट जाएगा. ...और छूटते ही दो कदम और परमात्मा की तरफ बढ़ जाओगे. यह करते-करते कब स्वयं परमात्मा हो जाओगे, पता ही नहीं चलेगा.
- मनुष्य भी कमाल है. बुराइयां भीतर ताले में छिपाकर बाहर अच्छाइयों का नाटक कर रहा है. वह समझ ही नहीं रहा है कि जीवन में परिणाम नाटक के नहीं, असलियत के आ रहे हैं. सो सारे नाटक बंद कर ध्यान अपनी असलियत ठीक करने पर लगाओ.
- अगर आपके भीतर के एहसास में... आनंद, शांति, सुकून, मस्ती और संतोष बना रहेगा तो ही जीवन बाहर समृद्धियों के शिखर छूएगा.
- आप पत्नी के सामने कुछ और, पिताजी के सामने कुछ और, बॉस के सामने कुछ और तथा अपने बच्चों के सामने कुछ और हैं. यही नहीं, आप एक दोस्त के सामने कुछ और हैं तो दूसरे दोस्त के सामने कुछ और हैं. इतने चेहरे हो गए हैं

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

आपके कि अब आपको स्वयं को नहीं मालूम कि आपका वास्तविक चेहरा कौन-सा है. हिपोक्रेसी का यही सबसे बड़ा दुष्परिणाम है. क्योंकि 'भाग्य' आपका बनेगा, आपके चेहरों का नहीं.

- मनुष्य से बड़ा सदभागी और कौन हो सकता है? फिर भी लोगबाग अपने भाग्य को कोसते हैं. बस यहीं से उनके जीवन में दुर्भाग्य दस्तक देना शुरू हो जाता है.
- आपको अपने भगवान की चिंता नहीं, आपको प्रकृति पे विश्वास नहीं. आपको चिंता है तो दूसरों की मान्यताओं की... कि उनको आप में बुराई नहीं दिखनी चाहिए. ...भला आप फरिश्ता बनने की कोशिश में क्यों लगे हो? इसी कोशिश में तो भगवान व प्रकृति से बिछड़ रहे हो.
- इस प्रकृति में आपको कुछ भी मांगने की जरूरत नहीं है. यह पूर्णत: नियम और कायदे से चल रही है. आपने जो राह पकड़ी होगी उस अनुसार आपको मिल जाएगा. सो मांगने की बजाए ध्यान सही राह पकड़ने पर लगाओ.
- जो व्यक्ति अपने भीतर की क्रिएटिविटी को नहीं जगा सकता, वो कभी भी न तो ऐतिहासिक हो सकता है, न महान हो सकता है...और न सफल ही हो सकता है.
- क्रिएटिविटी पे कुदरत का एकाधिकार है, मनुष्य को क्रिएटिविटी की सत्ता नहीं है. क्रिएटिविटी तो कुदरत से ट्यून्ड होने पर मनुष्य के भीतर से बह जाती है. यही नेचरल रहने का तथा कुदरत से ट्यून्ड होने का सबसे सीधा फायदा है.
- जो भी हृदय से सम्राट होगा उसका अपना एक अद्भुत ओरा होगा.
- अगर कोई मनुष्य कुछ महान क्रिएटिविटी का हिस्सा बने बगैर मरता है तो उसे समझ लेना चाहिए कि उसने अपने भीतर बैठे भगवान को मार डाला.
- जीवन का खेल भी अजीब है. भागादौड़ी मचाए हुए लोग खाली हाथ हैं और सब्र रखनेवालों को सबकुछ घर बैठे मिल रहा है. फिर भी भागादौड़ी छोड़े कौन व सब्र रखे कौन?
- प्रकृति की हर वस्तु अगर समृद्ध है, तो आप तो मनुष्य हो. आपको निश्चित ही बेहतर अवसर उपलब्ध हैं. बस परिस्थितियों को कोसना बंद कर दो. ...बाकी की राह अपनेआप मिल जाएगी.
- हर आदमी, हर वस्तु, हर कण एक मकसद से आता है, और फिर उसके दो ही भाग्य होते हैं; या तो प्रकृति से सहयोग कर जो बनने आया है वह बन जाए या फिर जिदपूर्वक कुछ और बनने की कोशिश में नष्ट हो जाए. इशारा हो चुका, और समझदारों को इशारा काफी होता है.
- जिस किसी भी मनुष्य ने अपने आने का मकसद पा लिया; उसको सायकोलोजिकल भाषा में कह सकते हैं कि उसने अपने ''मैक्झिमम

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

पोटेन्शियल” को छू लिया.

- जिसे अपने आने के मकसद का अंदाजा लग रहा है, सिर्फ उसे ही समझना चाहिए कि उसका जीवन सही दिशा में जा रहा है.
- वस्तु अपने अंजाम पर पहुंच जाए, तो वह समृद्ध. बीज पेड़ बने व उसपर फल-फूल उग आए, तो वह समृद्ध. बस ऐसा ही मनुष्य का है; वह आनंद की ऊंचाइयां छू ले तथा उसमें क्रिएटिविटी के पर निकल आए, तो वह समृद्ध.
- यहां पर हर मनुष्य अद्धितीय है, अलौकिक है और इकलौता है. प्रकृति की क्रिएटिविटी इतनी भी नहीं बिगड़ी कि कोई मनुष्य यहां रिपीट हो जाए. यह तो छोड़ो, प्रकृति तो इतनी क्रिएटिव है कि किसी का बिताया एक पल यहां किसी दूसरे को नसीब नहीं हो रहा है. आश्चर्य यह है कि फिर भी यहां हर बात के और हर व्यक्ति के फॉलोवर मिल जाते हैं.
- किसी भी दो मनुष्यों का अंतिम मकसद न आज मिला है, न कल मिलेगा.
- मनुष्य-जीवन की पूरी यात्रा दो स्टेज में होती है - मकसद पहचानना और मकसद पाना. ...बाहर के आकर्षण इसमें परम-बाधा है.
- किसी भी मनुष्य के आने का मकसद दो ही लोग जान सकते हैं - एक मनुष्य स्वयं और दूसरा कोई पक्का सायकोलोजिस्ट.
- गुलाब का बीज गुलाब का पेड़ बनने हेतु अस्तित्व में आया होता है. वैसे ही हर मनुष्य भी, यहां एक मकसद से ही आया होता है. लेकिन दिक्कत यह है कि आधों को आने का मकसद नहीं मालूम पड़ता है, और बचे हुए आधे मकसद से भटक जाते हैं.
- मनुष्य के जीवन में जो भी भटकाव है, वह उसके अपने आने के मकसद से विपरीत की दिशा पकड़ लेने का सबूत है.
- मनुष्य को समृद्ध उसकी ‘प्रतिभा’ बनाती हैं. और यह स्पष्ट समझ लो कि प्रतिभा पैदा नहीं की जा सकती है, उसे सिर्फ निखारा जा सकता है.
- प्रतिभा दिखाने के हजारों क्षेत्र हैं, और सब-के-सब महत्त्वपूर्ण हैं. उसमें से किसी को ऊंचा या नीचा समझना हमेशा भटकाने वाला सिद्ध होता है.
- जब आप बाहर से बात-बात पर प्रभावित होना बंद करेंगे, तभी आप अपने भीतर खोज पाएंगे कि आपके आने का मकसद क्या है?
- जिसने अपने पैदा होने का मकसद पा लिया उसे कहीं पर भी खड़ा कर दो, वह शोभेगा ही. यही ‘बुद्ध’ के तेज का रहस्य है.
- चूंकि आप अपने मकसद से भटक गए हैं... इसीलिए आपके जीवन में इतने कष्ट और संकट आ रहे हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- पक्षपात और चुनाव की आदत ने मनुष्य को बर्बाद कर दिया है. आश्चर्य यह है कि मनुष्य के जीवन बनाने का दावा करनेवाले सभी समाज तथा सभी तथाकथित धर्म ''पक्षपात और चुनाव'' के अलावा कुछ नहीं सिखा रहे हैं. परिणाम में मनुष्य अपने 'भाग्य' से बिछड़ता चला जा रहा है. और सबूत के तौरपर मनुष्यों के जीवन का हाल आंखों के सामने है.
- मनुष्य को मकसद पाने की भी और उससे भटकने की भी, दोनों की पूर्ण स्वतंत्रता उपलब्ध है. लेकिन ध्यान रख लेना कि उसे मकसद चुनने की स्वतंत्रता उपलब्ध नहीं है.
- मनुष्य को अपने जीवन के मकसद तक उसकी 'प्रतिभा' पहुंचाती है. अत: जीवन बनाने हेतु अपनी प्रतिभा पहचानना व उसे निखारना मनुष्य का एकमात्र कर्तव्य रह जाता है.
- जो कुछ पैदाइशी प्रतिभा मनुष्य के भीतर होती है वह उसकी जन्मों की पूंजी होती है. और वो छिपी प्रतिभा ही उसका जीवन बना सकती है. और यही कारण है कि ''प्रतिभा पहचानने'' की जगह ''प्रतिभा पैदा करनेवाली'' तमाम शिक्षाएं अंत में भटकानेवाली सिद्ध होती है.
- हरेक को यहां यह समझ लेना चाहिए कि प्रतिभा हर मनुष्य की अपनी होती है, सिर्फ उसे निखारने हेतु मनुष्य को दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है.
- जो मनुष्य अपने आने का मकसद जानने में लग जाता है वो धार्मिक, और जो भी शिक्षा उसको अपना मकसद निखारने हेतु सहायता करती है, वो धर्म.
- बच्चों को बचपन से ही उसकी प्रतिभा के क्षेत्र में खेलने दो, देखो वह क्या-से-क्या बन जाता है.
- यह आपकी प्रतिभा ही है, जो आपको उस मुकाम तक पहुंचा सकती है, जिसके आप अधिकारी हैं.
- जो अपने आने के मकसद से भटक गए हैं, वे चुपचाप श्रेष्ठ सायकोलोजी की शरण में चले जाएं.
- प्रतिभा को पकड़ना... और इतनी दृढ़तापूर्वक पकड़ना कि फिर जीवन उस प्रतिभा के आसपास ही केन्द्रित हो जाए. यह कर दिखाया तो फिर आपको महान बनने से कौन रोक सकता है?
- ''कड़ी मेहनत, पक्का इरादा, अनुशासन, काम ज्यादा'', इसके लिए मनुष्य बना ही नहीं है. और जिस किसी को भी जीवन में कड़ी मेहनत करनी पड़ रही है, बात-बात पर इरादे पक्के करने पड़ रहे हैं... वह समझ ही ले कि वह अपने आने के मकसद से भटक गया है. क्योंकि मकसद की राह पर तो कुदरत की पूरी

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

ऊर्जा आपके साथ होती है. ...फिर तो सारे काम मस्ती से ऑटोमैटिक निपटते हैं.

- अगर आप अपनी प्रतिभा के क्षेत्र में कार्यरत होंगे और आपका टारगेट अपने मकसद पर होगा, तो आपके सारे कार्य मस्तीपूर्वक निपटेंगे. आपको कार्य करने का एहसास तक नहीं होगा, क्योंकि आपके सारे कार्य कुदरत की परम-शक्ति से अपनेआप सलट रहे होंगे.
- अपनी प्रतिभा पर श्रद्धा करो और सब्र बनाए रखो, क्योंकि दुनिया की कोई ताकत अपनी प्रतिभा के पीछे भागते हुए आदमी को लंबे वक्त तक असफल नहीं रख सकती है.
- अगर आप जीवन में कोई भी सफलता चाहते हैं तो सबसे पहले जरूरी हैं कि आप अपनी प्रतिभा पर विश्वास करें.
- सिर्फ "अपने विश्वास" तथा "अपनी शंका" पे भरोसा करो. विश्वास हो तो आगे बढ़ो, शंका हो तो रुक जाओ. ...बस आपके जीवन में सारी चीजें तेजी से बदलनी शुरू हो जाएगी.
- जितनी जल्दी आप 'विश्वास' बाहर से समेटकर खुद पे करना प्रारंभ कर देंगे, उतनी जल्दी आपके जीवन में चमत्कार होने शुरू हो जाएंगे.
- आप असफल क्यों हैं? क्योंकि आप दूसरों पे विश्वास करके चल रहे हैं. बचपन में आप ऐसे नहीं थे. न मानो तो अपने बचपन में झांक लो, आप बच्चे थे तब विश्वास से जी ही रहे थे!
- मनुष्य जीवन में जितना फंसता चला जाता है, उतने ही बाहरी विश्वास खोजता चला जाता है. और इस प्रक्रिया में उसका अपना विश्वास कमजोर होता चला जाता है. इस कारण वह जीवन में और फंसता चला जाता है. फिर और फंसने पर बेचारा और नए बाहरी विश्वास खोजने में लग जाता है. करीब-करीब सभी इस कुचक्र में फंसे पड़े हैं.
- "विश्वास और शंका के कंपन" जो आप पकड़ते हैं, वह आपकी एक बहुत बड़ी ताकत है. ...सिर्फ उसपर भरोसा बढ़ाइए. जैसे ही आप उसपर भरोसा बढ़ाएंगे, अपनेआप आपके निर्णय सही होते चले जाएंगे.
- अगर मनुष्य अपना भविष्य जान नहीं सकता, अपना भविष्य बदल नहीं सकता... तब तो उसे चिंता का भी कोई कारण मौजूद नहीं है. लेकिन सत्य यह है कि मनुष्य अपना भविष्य जान भी सकता है और बदल भी सकता है. सो चिंता का एकमात्र विषय यह है कि यह कला हम कैसे विकसित करें? ...निश्चित ही, अच्छी सायकोलोजी पढ़कर.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- यदि आप वाकई कुछ बड़ा बनना चाहते हैं तो आपको यह समझना ही पड़ेगा कि आप आज जो कुछ हैं, वह आप ही के कारण है. आपको हर अच्छे हेतु अपने को श्रेय भी देना होगा व हर बुरे हेतु जिम्मेदारी भी लेनी ही होगी. बात-बात पर अपने वर्तमान हाल हेतु भाग्य, भगवान या संसार को बीच में लाएंगे तो कभी सुखी नहीं हो पाएंगे.
- मनुष्य का जीवन सिर्फ उसके विश्वास पर आधारित है. एक ओर जहां उसका विश्वास उसका जीवन बना रहा है, वहीं दूसरी ओर उसी का अविश्वास उसके लिए नित नई मुसीबतें खड़ी कर रहा है.
- आपके जीवन की तमाम भाग-दौड़ सिर्फ आपके विश्वास और शंका के हाथ में है. अगर आपको विश्वास है तो समझ लेना आसार अच्छे हैं, और आपको शंका है तो समझ लेना कि कहीं-कुछ गड़बड़ है. मध्य में हो तो सब्र बनाए रखो. ...पर चाहे जो हो जाए, अधूरे मन से कभी आगे मत बढ़ो.
- इंट्यूशन आपका एक बहुत बड़ा पावर है, लेकिन आप उसे महत्व नहीं देते. इंट्यूशन का मतलब है भविष्य के कंपन पकड़ना. और यह कोई बहुत बड़ी बात थोड़े ही है? यह आप ही के मन की एक छोटी-सी शक्ति है. भविष्य के कंपन तो पेड़-पौधे व जानवर तक पकड़ लेते हैं.
- मनुष्य सिर्फ उन चीजों के प्रति ही ''पूर्ण विश्वास'' के कंपन पकड़ सकता है...जिसके घटने के आसार होते हैं.
- जहां-जहां आपको विश्वास है, वहां-वहां गड़बड़ नहीं हो रही है. और जहां गड़बड़ होने की संभावना है वहां आपका विश्वास ही नहीं जाग रहा है. ...फिर भी जीवन उलझा पड़ा है, यही आश्चर्य है.
- बाह्य प्रभाव नहीं, बल्कि ''आपकी नेचरल प्रतिभा'' आपको दौड़ानी चाहिए. ...तभी जीवन बनेगा.
- आप रत्तीभर उन चीजों पे अविश्वास नहीं करते जो आपके अनुभव हैं. आप अविश्वास कुदरत पर भी नहीं करते; जैसे पृथ्वी का घूमना, हवा में ऑक्सीजन का आना... वगैरह. आप मानकर ही चलते हैं कि यह सब भी होने ही वाला है. तो खोजो यह कि आप अविश्वास कहां करते हैं? यह खोजना इसलिए जरूरी है कि वहीं पर सारी गड़बड़ें हो रही हैं.
- प्रकृति की रचना में सबका हित हमेशा के लिए सधा ही हुआ है. यह तो मनुष्य भविष्य पर अविश्वास कर स्वयं अपने हाथों अपना भविष्य बिगाड़ रहा है.
- मनुष्य को प्राप्त करने योग्य एक ही चीज है - उसके आने का मकसद!
- आपका विश्वास न बैठना इस बात की खबर है कि उस चीज में कोई गड़बड़ है. लेकिन आप उसकी परवाह नहीं करते. क्यों...? लोभ की आशा में. अब तो

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

समझो कि लोभ कितना खतरनाक है.

- इस क्षण को जो करना है वो आपको ही करना है, क्योंकि वो मौका आपके अलावा किसी को उपलब्ध नहीं है. अत: बेकार के आसरे मत खोजो. क्षण बीत जाएगा, तो मौका चूक जाएगा.
- आप जैसे ही संतोष में आओगे, आपकी तमाम भागा-दौड़ियों का अंत आ जाएगा. क्योंकि आपके तमाम अज्ञान उसी समय भस्म हो जाएंगे. आपको प्रकृति की महासत्ता का अनुभव हो जाएगा. फिर तो सारा मिलना-बिछड़ना प्रकृति भरोसे चलता रहेगा. 'संतोष' की यह परमसत्ता समझ जाओगे, तो उद्धार हो जाएगा.
- जो अपने भीतर झांकेगा उसके जीवन में जादू होना शुरू हो जाएगा, क्योंकि फिर उसको मालूम पड़ने लगेगा कि उसकी प्रतिभा क्या है, उसकी क्षमता क्या है और प्रकृति की ओर से उसे कौन-कौन से गुण मिले हुए हैं. और जिसको इन सबका अंदाजा हो जाए, उसे कौन रोक सकता है?
- मेहरबानीकर एक पल को ही सही, ठहर तो जाओ. क्योंकि जहां आप ठहरोगे वही आपकी कर्मभूमि हो जाएगी. फिर वहीं आपका मंदिर होगा और वहीं आपके भगवान भी विराजमान हो जाएंगे. समझते क्यों नहीं कि ठहरे हुए व्यक्ति को तो सब अपनेआप मिल जाता है.
- जिसके भीतर 'धन्यवाद' का भाव जागेगा, वह जीवन की सही दिशा पकड़ लेगा. जो अपने ही अहंकारों में जिएगा, वो पिटता चला जाएगा. क्योंकि अंत में तो 'जीवन' हजारों दूसरों पर निर्भर है ही.
- मकसद में एकेन्द्रिय होकर डूब जाने में बड़ी ऊर्जा लगती है. और उस ऊर्जा की पूर्ति सिर्फ मन का संतोष कर सकता है. इसीलिए तो कहते हैं कि संतोष से बड़ा कोई परमधन नहीं है.
- अगर भय और लोभ से हिल रहे हैं तो आप बर्बादी के मार्ग पे जा रहे हैं. वहीं अगर आपको ''आनंद और संतोष'' हिला रहे हैं तो समझ लो कि आप अपने मकसद के करीब जा रहे हैं.
- यहां पर किसी भी कण का अलग से कोई भी अस्तित्व नहीं है. सब-के-सब संयुक्तता की एक डोर से बंधे हुए हैं. इसमें मनुष्य भी अपवाद नहीं है. उसका भी कोई जाती-अस्तित्व नहीं है. और देखो, जिनके जाती-अस्तित्व नहीं थे; वे सब-के-सब सुखी व सफल हो गए.
- अपना इन्डिविजुअल अस्तित्व मानना मनुष्य का सबसे बड़ा भ्रम है. वह भ्रम टूटते ही कुदरत के सारे द्वार उसके लिए खुल जाते हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- हर किसी ने यहां स्वार्थ के वश में आकर अपनी एक अलग दुनिया बनाई है. और उसी से वह परेशान है. ...जबकि सुखी लोगों ने पूरे जगत को अपनाया है. और यही उनकी खुशी का राज है.
- "ये मेरा बच्चा" यह पहली इंडिविजुअलिटी है जो मनुष्य को मिलती है. और इस एक चूक से उसके प्रकृति के खूबसूरत ऑटोमेशन से टूटने की नींव डल जाती है. आप समझते क्यों नहीं कि हर बच्चा कुदरत की अमानत है. ...सो मेहरबानीकर उसे कुदरत की ही अमानत रहने दो.
- आपका आनंद, आपका संतोष, आपकी मस्ती ही आपका वो मार्ग है जो आपको जीवन की सफलता दिलवा सकती है.
- अहंकार से बड़ा बहुरूपिया कोई नहीं है. जो क्षण आया नहीं उस बाबत भी तय कर लेना, आपके अहंकार का ही एक स्वरूप है. और यह अहंकार का बड़ा ही खतरनाक स्वरूप है. ...क्योंकि यही मनुष्य को उसके जीवन की राह से भटका रहा है.
- आपको महान बातों के नाम पर नॉन-सायकोलोजिकल शिक्षाएं दी जा रही हैं. आप यह समझ ही लो कि जिद अहंकार है, जिद अधर्म है! समय, संजोग और परिस्थिति के अनुसार तय करते चले जाना ही धर्म की पहली सीढ़ी है. ...और इसमें किसी भी प्रकार की 'जिद' समा ही कैसे सकती है?
- शरीर को वहां ले जाओ जहां मन जाना चाहता है. दो-चार थपेड़े खाकर सबकुछ अपनेआप ठिकाने पड़ जाएगा.
- आपकी प्रतिभा भी मनुष्यता के लिए है, आपकी सत्ता भी मनुष्यता के लिए है और आपके धन पर भी मनुष्यता का ही अधिकार है. जिस रोज यह आपकी सोच हो जाएगी, आप महान हो जाएंगे.
- जितनी ज्यादा आप कुदरत के साथ ताल मिलाकर चलेंगे, उतनी जल्दी आप महान-से-महानतम होते चले जाएंगे.
- "क्या करूं और क्या न करूं" इस कन्फ्यूजन का सीधा अर्थ यह है कि आप सोच रहे हैं कि आपके पास ऑप्शन हैं. जबकि सत्य यह है कि आपके पास कोई ऑप्शन है ही नहीं. आपके सारे ऑप्शन स्वार्थजनित सोच से उत्पन्न हैं. और यह समझ लेना धर्म की अंतिम ऊंचाई है.
- इस जहां में दो शक्तियां हैं - एक कुदरत का ऑटोमेशन और दूसरी आपकी अपनी चेतना. बस इन दो की शरण में चले जाओ, आपका उद्धार हो जाएगा.
- मन के ऑटोमेशन में न होने के कारण मनुष्य परेशानी झेल रहा है. अगर वो मन के ऑटोमेशन में स्थित होने की क्षमता पा ले तो जल्द ही दु:ख, संकट, चिंता व परेशानियों से उसका छुटकारा हो जाए.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- किसी की फोटोकॉपी बनने की कोशिश मत करें. क्योंकि आप ‘‘एक ऐसे ओरिजनल पीस हैं’’ जो कुछ नया व धमाकेदार करने इस विश्व में आया है.
- बुद्धि और अहंकार ये दोनों वे स्वतंत्र शक्तियां हैं जिन पर ना तो प्रकृति का और ना ही मनुष्य के मन का कोई नियंत्रण है. परंतु अपने उद्धार हेतु मनुष्य को अपने ‘‘बुद्धि और अहंकार का’’ समर्पण करना आवश्यक है.
- ‘‘भेद और पक्षपात’’ की तमाम शिक्षाओं से अपनेआप को बचा लो... बस फिर स्वत: ही आपका जीवन सही राह पर लग जाएगा. क्योंकि तब आप अपने बजाए प्रकृति की सुनना प्रारंभ कर देंगे. सीधी बात है, भेद और पक्षपात नहीं, तो सब प्रकृति का.
- अगर आपको प्रकृति का पूरा सहयोग चाहिए तो अपने रिश्तों और पक्षपातों की बजाए मनुष्य के ‘‘योग्यता व गुणों’’ को तवज्जो देना प्रारंभ कर दो.
- आप उन कार्यों के कर्ता हो जाते हैं, जिनके ‘कारण’ आपको मालूम होते हैं. जो कार्य आप अकारण करते हैं, उनके आप कर्ता कभी नहीं होते हैं. और अपने जीवन पर गौर कर लेना, जो कुछ भी आपके पास श्रेष्ठ है, वह अकारण किए कार्यों का ही परिणाम है.
- हर एक मनुष्य का अपने मन का एक इन्डिविजुअल ऑटोमेशन है. और उसी की शरण में उसका उद्धार है.
- ‘‘बिग पॉझिटिव’’ पकड़कर चलते रहो, सब अपनी जगह अपनेआप सेट हो जाएगा.
- आप जैसा चाहें बोल सकते हैं, सोच सकते हैं, मान सकते हैं; आप चाहें तो पाप की तमाम लिमिट क्रॉस कर सकते हैं. फिर भी इस मिली स्वतंत्रता का उपयोग न करना ही बेहतर है. क्योंकि हर करे का यहां भुगतना भी स्वयं को ही पड़ता है. और यह प्रक्रिया पूरी तरह से ऑटोमैटिक है.
- यदि प्रकृति ने मनुष्य को अपने उद्धार हेतु अकेला छोड़ रखा है, तो इसलिए कि उसने उसे पूर्ण सक्षम बनाया भी है.
- किसी के भीतर ज्ञान, इंटेलिजेंस और ऊर्जा की कहीं कोई कमी नहीं हैं. सवाल सिर्फ उसे सही दिशा में लगाने का है.
- कोई भी बड़ा परिणामकारी कार्य तभी होता है जब मनुष्य अपना अस्तित्व मिटाकर उसमें डूब जाता है.
- मनुष्य को सबसे बड़ी गलतफहमी मन और बुद्धि को लेकर है. मनुष्य ‘बुद्धि’ से अपना उद्धार करने में लगा हुआ है, जबकि यह कार्य उसे अपने ‘मन’ को सौंप देना चाहिए. क्योंकि प्रकृति का कम्युनिकेशन मन से है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- सीधा सत्य यह है कि आपको अपने मन के ऑटोमेशन के साथ बहना पड़ेगा. उसमें छेड़खानी आपको हमेशा महंगी पड़ेगी.
- पिता को चाहिए कि वह पुत्र को अपने जैसा बनाने की जिद न करे. वहीं पुत्र को भी चाहिए कि वह अकारण पिता जैसा बनने की कोशिश न करे. क्योंकि अक्सर पुत्र को पिता जैसा बनने में और पिता द्वारा अपने पुत्र को अपने जैसा बनाने में, दोनों को "अपने जीवन की राह" भूलते देखा गया है.
- जीवन का मकसद भी प्रकृति ही समझाती है और जीवन को राह भी सिर्फ प्रकृति ही दिखा सकती है. सवाल यहां-वहां भटकने की जगह उससे ट्यून्ड रहने का ही है.
- हवा में इधर-उधर झूलता पत्ता हमें यह सिखाता ही है कि जीवन के उतार-चढ़ावों से विचलित मत होओ, अपने जीवन को इन झोकों के हवाले कर दो; मेरी तरह आप भी एकदिन सफलता-असफलता का स्वाद चखते हुए मंजिल तक पहुंच ही जाओगे.
- आपके कर्म ही आपके भाग्य का निर्माण कर रहे हैं. मनुष्य हो...! भला आप अपना भाग्य लिखने का अधिकार अन्य किसी को दे ही कैसे सकते हो?
- आदमी को अपनी तकदीर कुदरत से ट्यून्ड होकर... अपनी मेहनत व इंटेलिजेंस के बल पर स्वयं बनानी होती है.
- बात-बात पर दर्द पालनेवाले को कभी कोई बड़ा दर्द पालने का मौका कुदरत से नहीं मिलता है. क्योंकि कुदरत से दर्द भी मनुष्य की क्षमतानुसार ही मिलता है. लेकिन यह बात ध्यान रख लेना कि बड़ा दर्द पाले बिना कोई महान नहीं बन सकता है.
- यह पूरी प्रकृति ऑटोमेशन पर है. जिस रोज आप अपनेआप को पूरी तरह से उस ऑटोमेशन को सौंप दोगे, उस दिन आप क्राइस्ट, बुद्ध, एडीसन, आइन्स्टाइन, मोजार्ट या पिकासो वगैरह की तरह हो ही जाओगे. यह भाग्य का परमसिद्धांत है.
- जो हो रहा है वह हो जाने दो... और जो नहीं हो रहा है उसकी जिद मत करो. जीवन की पूरी पहेली स्वयं ही सुलझ जाएगी.
- हजारों कामनाओं में जीना मनुष्य की तमाम असफलताओं के पीछे का सबसे प्रमुख कारण है. बाकी तो, एक उद्देश्य के साथ जी रहे व्यक्ति का साथ तो पूरी कुदरत देती ही है.
- यदि आपके पास "क्या करने से ज्यादा आनंद आएगा" की हजार चॉइस उपलब्ध है तो आपका जीवन सही दिशा में आगे बढ़ रहा है. और यदि आप

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

‘‘क्या करने से टेंशन कम होंगे’’ की जद्दोजहद में पड़े हैं, तो निश्चित ही जीवन गलत दिशा में आगे बढ़ रहा है.

- अक्सर बुरा इसलिए घटता है, ताकि आप उस अनुभव से कुछ सीख सकें. लेकिन आप अनुभव से सीखने की बजाए बुरा घटने का रोना लेकर बैठ जाते हैं.
- मुकद्दर उन्हीं का बनता है जो अपना मुकद्दर कुदरत से ट्यून्ड होकर बनाते हैं. बाकी तो जो सौ-दो सौ रुपए में मुकद्दर बनाने के पचासों उपाय जानते हैं, उनका हाल किसी से छिपा नहीं है.
- जो जवाबदारी आपकी है ही नहीं, वह भी उठाना कौन-सी बुद्धिमानी है? समझते क्यों नहीं कि आपका जीवन बनाना प्रकृति की जिम्मेदारी में आता है.
- भिखारीपन भी एक मानसिकता है और सम्राटपन भी एक मानसिकता है. भिखारीपन का अर्थ है बात-बात पर मांगने की आदत वाला. फिर वह मांगना चाहे मित्रों से हो या परिवार वालों से, या फिर ज्योतिष व वास्तु से हो या मंदिर-मस्जिद-चर्चों से; कोई फर्क नहीं पड़ता. जबकि सम्राट का अर्थ ही है कि जो सिर्फ अपने बलबूते पर आगे बढ़ने में विश्वास करता है. और प्रकृति हमेशा सम्राटों पर ही मेहरबान होती है. ...वह सिर्फ उन्हें ही दोनों हाथों से देती चली जाती है.
- ‘बिग-पॉझिटिव’ को पकड़कर चलते रहना ही जीवन को सही राह पर ले जाने का एकमात्र उपाय है.
- अपनी इच्छा और मूड को आप अपना शत्रु क्यों मानते हैं? वे ही तो हैं, जो आपको आगे की राह दिखाते हैं.
- अपनी नेचरल रिएक्शनों पर भरोसा करो, आबाद हो जाओगे. भाग्य के सिद्धांत से जीवन बनाने का इससे सरल दूसरा कोई उपाय नहीं है.
- सर्वहित को ध्यान में रखकर किए जानेवाले कार्यों हेतु दुनिया की परवाह थोड़े ही करनी होती है.
- ‘भय’ और ‘लोभ’ दो ही कारणों से आप अपनी नेचरल रिएक्शन दबाते हैं. और दबाते ही अपनी राह से बिछड़ जाते हैं. यह ‘भाग्य’ का परमसिद्धांत है.
- जो भीतर नहीं है वह नहीं ही है, उसे दिखाने का भी क्या फायदा?
- हमारे साथ घटने वाली हर घटना वास्तव में हमारे साथ ही पीछे घटी कई घटनाओं का जोड़ है. ...इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि वर्तमान के उतार-चढ़ाव का ताल्लुक भविष्य में घटने वाली किसी बड़ी घटना की कड़ी मात्र है.
- सही दृष्टि से देखा जाए तो मनुष्य के कुदरत की मर्जी के खिलाफ जाने की जिद के कारण ही उसके जीवन में इतने कष्ट हैं. मनुष्य की दिक्कत ही यह है कि वह

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अपने जीवन के हर फैसले स्वयं की बुद्धि से करना चाहता है, जबकि जीवन के तमाम अहम सवाल कुदरत के न्याय पर छोड़ना ही बेहतर है.

- अहंकार की यही तो दिक्कत है कि वह मरना या मारना तो जानता है, लेकिन परिस्थिति की नाजुकता को समझते हुए झुककर बच निकलना नहीं जानता.
- उद्देश्य की पूर्ति के लिए सवाल अच्छे-बुरे या पाप-पुण्य का है ही नहीं; असली सवाल तो एक और अनेक का है. एक इच्छा मनुष्य को मंजिल तक पहुंचा देती है, जबकि अनेक इच्छाएं मनुष्य को भटका देती है. कड़वा सही, पर जीवन का सत्य यही है.
- कुछ बड़ा पाने के लिए मेहनत की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि कुदरत के साथ बह जाने की. क्योंकि घटनाएं अपने आप घट ही रही हैं, सवाल यह है कि आप उन घटनाओं के साथ बह पा रहे हैं या नहीं?
- सर्वहित में, अपना हित समाया ही होता है. वैसे भी दोनों अलग-अलग कैसे हो सकते हैं, आखिर 'सर्व' में 'आप' भी तो समाए ही हुए हैं. पता नहीं क्यों यह सीधी बात स्वार्थियों को युगों से समझ में नहीं आ रही है.
- आपकी मर्जी में कुदरत की मर्जी भी शामिल हो जाए तो सबकुछ बड़ा आसान हो जाता है. तभी तो कहते हैं कि उसके पास लाखों हाथ हैं.
- यदि मनुष्य हर परिस्थिति में उम्मीद व आत्मविश्वास बनाए रखे और अंतिम क्षण तक पूरी कर्मठता से कर्म करे, तो संभावनाओं के द्वार खुल ही जाते हैं.
- कुदरत का एक नियम अच्छे से जान लो कि समस्या कितनी ही बड़ी व गहरी क्यों न हो, फिर भी उसको सुलझाने का कोई-न-कोई मार्ग अवश्य होता है. समस्या रूपी सारे ताले खुलते ही हैं, बशर्ते... ''ठीक समय का इंतजार करके-ठीक चाबी घुमा दी जाए''.
- जब मनुष्य की इच्छाएं और उसके कर्तव्य... भिन्न-भिन्न होते हैं, तभी उसे मर-मरकर जीना पड़ता है. लेकिन जब दोनों एक हो तो ना सिर्फ जीने का बल्कि काम करने का भी मजा आ जाता है.
- सफल होना चाहते हो तो अपने को कुदरत के सामने खुला छोड़ दो. जब जहां मरजी हो, ले जाए. जब जो करवाना चाहे, करवा ले. उसकी मर्जी ही आपकी मरजी हो जाए... तो तत्काल जीवन की तमाम समस्याओं का अंत आ जाए.
- अहंकार की एक ही दिक्कत है कि वह बढ़ा नहीं कि कुदरत ने उसे तोड़ा नहीं.
- जीवन एक ऐसा खेल है कि इसमें वही जीत सकता है जो अभिनय का सम्राट हो; बस ध्यान इतना रखना पड़ता है कि यह नाटक सर्वहित में किया गया हो... स्वार्थ में नहीं. अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए नाटक करनेवालों को तो जीवनभर रोना ही पड़ता है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(***Click Here To Join***)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

- कुदरत की महान सत्ता के सामने हमारी हस्ती ही क्या है? सो जो घट ही चुका है, उसे स्वीकारने में ही बुद्धिमानी है. प्रकृति से संघर्ष व्यर्थ है. कभी कोई उससे नहीं जीत पाया है. आप ही बताओ, क्या कभी कोई किसी घटे को 'अनघटा' कर पाया है? इतना समझ लोगे, तो जीवन के अधिकांश संघर्षों से तत्काल छुटकारा पा लोगे.
- आपके होते-सोते किश्ती किनारे तक आकर डूब जाए, यह तो होना ही नहीं चाहिए. 'कर्मवीर' का अर्थ ही होता है कि जो सोचा, वह होना ही चाहिए. साम, दाम, दंड, भेद चाहे जैसे... पर हां, इतना ध्यान अवश्य रखना कि कर्म में ''स्वार्थ का अभाव'' ही सच्चे कर्मवीर की पहचान है.
- मोह दो-तरफा होता है. पकड़ का मोह तो होता ही होता है, पर उससे कहीं विकृत छोड़ने का मोह होता है. और छोड़ने का मोह ऐसा खतरनाक होता है कि वह होते-सोते भी मनुष्य को नहीं भोगने देता है.
- श्रेष्ठ मनुष्य वह है जिसपर दु:ख, प्रेम, लोभ, भय या क्रोध जैसा कोई भी हथियार काम न करता हो. जो होना चाहिए वो होना ही चाहिए, उसमें इन सबको बाधा बनने ही क्यों देना?
- यदि मनुष्य लगातार सही दिशा में बढ़ता रहे तो वह क्या नहीं कर सकता? जीवन में बाधा ही गलत दिशा पकड़ने के कारण आ रही है.
- ''स्वयं व सर्व'' में कोई फर्क नहीं होता. स्वयं के लिए जीओ या सर्व के लिए कुछ करो; दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. क्योंकि अपना अच्छे से ध्यान रखनेवाला सबका ध्यान रख ही लेता है.
- ''टाइम और स्पेस'' दोनों नियम के एक डोर से बंधे हुए हैं. यही कारण है कि प्रकृति की लीलाएं हों या मनुष्य-जीवन की घटनाएं, सब नियमपूर्वक ही बरत रही हैं.
- समय से ही समानांतर रूप से स्पेस का निर्माण हुआ है. अत: ब्रह्मांड की हर स्पेस पर समय का नियंत्रण है. मनुष्य-जीवन भी इसमें अपवाद नहीं है.
- ''टाइम और स्पेस'' के मिलन हो जाने पर मनुष्य के भीतर के 'समय' की गति तत्क्षण तेज हो जाती है. और समय की यह बढ़ी गति ही उसका जीवन बनाती है. फिर भी ''टाइम और स्पेस के मिलन को'' पाप कहनेवाली बातों से संसार भरा पड़ा है. ऐसे में मनुष्य के मन के समय की गति तेज हो भी, तो कैसे...?
- हर मनुष्य का अपना एक जगत है, और उसके जगत में जो कुछ भी है वो उसी की मरजी और सहयोग से है. सो अपने जगत से नाराज रहना कहीं की भी बुद्धिमानी नहीं है. अत: नाराजगी हटाओ. नाराजी हटे, तो सही राह मिले.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- हर मनुष्य का अपना एक विश्व है...और वही अपने विश्व का ब्रह्मा, विष्णु और महेश है.
- अपना जगत फैलाने की जगह उसे समेटने पर ध्यान देना ही अक्लमंदी है. क्योंकि जगत कितना भी हो, उसका पूर्ण नियंत्रण में होना जरूरी है. और आपका अपने अलावा किसी पर नियंत्रण नहीं है. ...अंतिम इशारा हो तो गया.
- मनुष्य के अपने जगत का हर फैलाव उसके ''मनरूपी कम्प्यूटर'' में डेटा डालने से होता है. सो जो चीज अपने जगत में नहीं चाहते, मेहरबानीकर उस चीज का अपने ''मनरूपी कम्प्यूटर'' में डेटा ही मत डालो. कितनी सीधी तो बात है.
- अपने मनरूपी कम्प्यूटर में ठीक-ठीक डेटा डालते सीखना मनुष्य की पहली जरूरत है.
- सही ही कहते हैं कि समय बलवान तो गधा पहलवान.
- मनुष्य के भीतर के समय की गति ही उसका भविष्य तय करती है. मन की गति जितनी तेज उतना उज्ज्वल भविष्य.
- मनुष्य अपना टाइम यानी 'मन' बदल दे, आसपास की स्पेस अपनेआप बदल जाएगी.
- चूंकि मनुष्य को मिली पूर्ण स्वतंत्रता के कारण यहां हरकोई अपने जीवन का स्वयं भगवान है, अत: समय की बहती धारा में मदद करने वाले किसी भगवान की कोई जगह नहीं है.
- अपने जीवन की बागडोर 'बुद्धि' के बजाए अपनी नाभि में स्थित एहसास को सौंपना, आपके लिए ज्यादा हितकर है.
- विज्ञान ने सारी बड़ी सफलताएं पीछे के ओर की यात्रा करके ही प्राप्त की है. मनुष्य-जीवन की सफलता भी मन में पीछे जाने पर ही टिकी हुई है. क्योंकि वह उसका बीज है. और उसी में उसके आने के सारे राज छिपे हुए हैं.
- क्रिया और प्रतिक्रियाओं के तमाम नियम फिक्स्ड हैं, अत: उनमें कोई फेर-बदल संभव नहीं. अत: चिंता 'प्रतिक्रियाओं' की बजाए अपनी 'क्रियाओं' की करो.
- समय में पीछे जाने पर ही आप सफलता के शिखर छू सकते हैं. क्योंकि सारे नक्शे बीजों में ही छिपे पड़े हैं. ...सोचो, ऐसे में पेड़ों की जानकारियां बंटोरने से क्या हासिल होगा?
- आप जीवन में सिर्फ उन्हीं चीजों का आनंद ले सकते हैं जिनका आपके होनेपन से मिलन हो जाता है, और वह भी उतने ही समय के लिए जितने समय के लिए मिलन रहता है. ...फिर आप किसी भी चीज को स्थायी तौरपर अपना मान ही कैसे सकते हैं?

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- किसी भी बाबत पहले से तय कर लेना ‘‘समय के विरुद्ध जाने की तैयारी’’ करने के समान है.
- ‘‘समय का एक निर्णायक स्वरूप भी है’’ और वो ही सबकुछ तय करता है. उसके तय किए के खिलाफ जाने की सोचने से बड़ी मूर्खता और कोई नहीं है.
- राजा को रंक, और रंक को राजा बनाना समय का ही काम है.
- मनुष्य का ‘‘अपना मूड’’ समय का सबसे बड़ा इशारा है.
- समय हरहमेशा हर मनुष्य का सिर्फ हित चाहता है. ...पर उसकी आवाज सुने कौन?
- किस मनुष्य में कौन-से क्षेत्र की प्रतिभा छिपी पड़ी है, यह सिर्फ समय जानता है. यही समय के साथ बहने का सबसे बड़ा लाभ है.
- समय के साथ तो वो सेटिंग हो सकती है कि जब जो चाहो मिल जाए.
- ‘‘अनावश्यकों को जीवन से हटाना’’ तथा ‘‘आवश्यकों को निकट लाना’’ यह दोनों समय का काम है. आप इस कोशिश में लगो ही मत.
- वक्त से पहले व किस्मत से ज्यादा ना मिला है ना मिलेगा. जो यह बात समझ लेगा, वह समय का पूरा खेल जान लेगा.
- जिसने अपना सेल्फ अच्छे से मैनेज कर लिया, उसे ‘बाहर’ जो चाहिए वो मिलेगा.
- प्रकृति में सबकुछ अकारण हो रहा है. मनुष्य कारण की खोज के चक्कर में उलझ गया है.
- भविष्य बनाना हरकोई चाहता है. परंतु दृढ़तापूर्वक वर्तमान में स्थित हुए बगैर कोई अपना भविष्य बना ही कैसे सकता है? ...बस इसीलिए तो हजार कोशिशों के बावजूद भविष्य बन नहीं पा रहा है.
- बगैर कोई नई बात घटे कोई कभी बदल नहीं सकता है. सो अपने को बदलने की जल्दी करने की बजाए कुछ नया घटने का इंतजार करो.
- हर पल नई परिस्थिति मुंह फाड़े खड़ी हो जाती है. ऐसे में यह ज्ञान देना बुनियादी तौर पर गलत है कि यह करना और वो ना करना, ये वस्तु अच्छी और ये वस्तु खराब. ...सवाल सिर्फ परिस्थिति की मांग पर बिना स्वार्थ के कर्म करने का ही है.
- मनुष्य की उसकी स्पोन्टेनिटी में उसका हित छिपा ही हुआ है. पर सवाल यह है कि ‘‘कारण और परिणाम की चिंता छोड़कर’’ अपनी स्पोन्टेनिटी की शरण जाए कौन?
- किसी भी ‘कारण’ से किया गया कर्म बेइमानी है, क्योंकि सारे कारण स्वार्थ की उपज हैं. वास्तव में कर्म ‘भीतर’ से फूटना चाहिए. और ऐसे स्वस्फुरित व

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

स्वार्थरहित कर्म ही जीवन को सही दिशा देते हैं.

- जिसकी चेतना जागी हुई है... उसके किसी कर्म में रत्तीभर गड़बड़ नहीं है. और सोई हुई चेतना से किए गए कार्य परमात्मा को स्वीकार नहीं है. इसलिए कार्य के मामले में "क्या कर रहे हो" नहीं, बल्कि "कौन कर रहा है" यह महत्वपूर्ण है.
- गालिब ने शायरी लिख दी, कृष्ण ने गीता कह दी और एडीसन ने लाइट खोज ली. और ये सब हमें बिन मांगे उपलब्ध हो गया. और एक हम हैं जो बिन मांगे तो छोड़ो, मांगने पर भी किसी को कुछ नहीं देते हैं. खैर, तभी तो हमारे से ऐसे महान कार्य हो भी नहीं रहे हैं.
- कर्तव्य हंसते-गाते हो रहे हैं तो जीवन सही दिशा में जा रहा है. यदि बेमन से करने पड़ रहे हैं तो समझ लो कि आपने अपना जीवन उलझा दिया है.
- समुद्र का कुछ बनना-बिगड़ना नहीं है. सारा बनना-बिगड़ना बूंदों का है. समझदार हो, तो इशारा काफी है.
- आप जैसे हैं; अच्छे-बुरे, चालाक या कमजोर, अमीर या गरीब, सुंदर या साधारण; अपने को स्वीकार लें. सिर्फ अपने को ही नहीं, अपनी अक्षमताओं व बुराइयों को भी स्वीकार लें. बस इस एक कदम से धीरे-धीरे सब ठीक होना प्रारंभ हो जाएगा.
- "स्व से सर्व" तथा "सर्व से स्व" कनेक्टेड है. इनके बीच कोई ब्रिज नहीं है. ...परंतु आप चूंकि बीच में हैं, इसलिए आपके कुदरत से सारे कनेक्शन टूट चुके हैं.
- हमें अपनी और अपनों की उतनी ही सेवा करनी चाहिए जितनी कि आवश्यक है. बाकी का सबकुछ सर्व हेतु लुटाने को हमेशा तैयार रहना चाहिए. क्योंकि भाग्य की लकीर सीधे तौरपर 'सर्व' से कनेक्टेड है.
- मन के सत्य के साथ बहते-बहते ना सिर्फ मन, बल्कि अन्य तमाम चीजें सेट हो ही जाती है.
- हमारे भीतर का कम्प्यूटर "स्व और सर्व" पर सेट है. और यही प्रगति का सीधा मार्ग है. परंतु निगाह स्वार्थ पे लगी होने के कारण उस कम्प्यूटर के अनुसार जो होना चाहिए वो नहीं हो रहा है. ...और जो नहीं होना चाहिए वो करे चले जा रहे हैं.
- जैसे-जैसे आप जीवन में से एक-एककर अनावश्यक वस्तुओं, व्यक्तियों तथा विचारों को काटते चले जाएंगे, वैसे-वैसे आपका जीवन सेट होता चला जाएगा.
- जो आपके हित में है, वो ही सर्व के हित में है. भला आप कोई सर्व से अलग थोड़े ही हो.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- जब गुलाब का बीज बिना किसी ज्ञान के गुलाब का पेड़ बन जाता है, तो फिर हम 'हम' क्यों नहीं बन पाते हैं? क्योंकि हम... 'हम' बनने हेतु ज्ञान बाहर से ले रहे हैं.
- चेतना का काम इतना ही है कि आपके धरती पर आने के मकसद को हासिल कर ले. और यह काम आपकी चेतना के अलावा कोई नहीं कर सकता है. इसीलिए चेतना जगाना जरूरी है.
- भविष्य पूरी तरह अप्रत्याशित है, उसे तय करने की कोशिश करने से बड़ी मूर्खता और कोई नहीं है. सो अपनी पूरी ताकत वर्तमान में झोंकना बुद्धिमानी है.
- अपने भीतर छिपी रुचियों को ना सिर्फ सम्भालें, बल्कि पूरी दृढ़ता व अदम्य साहस के साथ उन्हें संवारें और निखारें. क्योंकि आपकी रुचि ही आपके जीवन को सही राह दिखाती चली जाएगी.
- जिस क्षेत्र में आपकी बार-बार रुचि जागे, जो कार्य करने में आपका ध्यान भी लगे और करने में मजा भी आए; समझ लेना कि जीवन आपको उस राह पर ले जाना चाहता है.
- जीवन मिला ही दिल खोलकर उसका आनंद लेने हेतु है. परंतु हां, उस आनंद लेने में इतना भी नहीं खो जाना है कि अपने आने के मकसद से ही भटक जाओ.
- जीवन की सारी सफलताएं लोगों को अप्रत्याशित रूप से... अप्रत्याशित समय पर ही मिली हैं. सो अपने को भटका हुआ कभी मत मानो.
- प्रकृति से ट्यून्ड होने का मनुष्य के पास एक ही जरिया है, और वह है कोन्सन्ट्रेशन.
- सफलता कार्य करने से मिलती है... और सफलता का अनुपात कार्य की गुणवत्ता पर निर्भर है. इसके अलावा की किसी चीज से सफलता का कोई ताल्लुक नहीं. लिखे हुए भाग्य की बातें तो हारे हुए लोग करते हैं.
- दूसरों की बातों पर गौर करना एक गुण है, परंतु अंतिम निर्णय हेतु सिर्फ स्वयं की सोच व प्रतिभा पर विश्वास करना जरूरी है.
- समय के अनुसार अपने को ढालने हेतु तैयार रहना सहिष्णुता है. और यह सहिष्णुता है, तो ही विकास है. तो ही सुख व आनंद है. ...वरना अकड़नेवालों का तो "अशांति और विनाश" भाग्य है.
- आपका क्षेत्र वही है, जिसमें आपकी प्रतिभा है. आपका जीवन वही है, जो आपके शौक हैं. और जो "अपनी प्रतिभा व अपने शौक" दोनों की रक्षा कर पाते हैं, वे ही "सुख और सफलता" दोनों का स्वाद चख पाते हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- वे ही कार्य करना जिन्हें आप विश्वास के साथ कर सकते हों. क्योंकि आपका विश्वास ही वह मार्ग है जो आपको आपकी मंजिल तक पहुंचा सकता है.
- श्रेष्ठ कर्म मनुष्य अपनी प्रतिभा के क्षेत्र में ही कर सकता है. और मनुष्य की प्रतिभा जन्मों-जन्मांतर के कर्मजनित संस्कारों से तय होती है. इसीलिए प्रतिभा के विपरीत के क्षेत्र में हाथ आजमाना हमेशा घातक सिद्ध होता है.
- एक फिलोसोफर ही स्वधर्म को अच्छे से समझ सकता है. एक फिलोसोफर ही यह जान सकता है कि स्वधर्म के मार्ग में सिवाय 'स्वधर्म' के और कुछ नहीं समा सकता है. इसीलिए एक सच्चे स्वधर्मी के लिए दुनिया के बाकी सब धर्म बेमानी हो जाते हैं.
- आप तमाम सायकोलोजिकल बीमारियों से छूटना चाहते हो, तो सबसे पहले अपने स्वयं को हर बात के लिए 'क्षमा' करो. यह एक दया आप अपने पर कर दो, बाकी सब स्वत: ही सेट हो जाएगा.
- जिस मात्रा में जिसका द्रष्टा जागेगा, उसी मात्रा में हाथोंहाथ उसके मन के ऑटोमेशन का स्तर चेन्ज हो जाएगा. यह महत्वपूर्ण इसलिए है कि मनुष्य के जीवन की राह उसके ''मन का ऑटोमेशन'' स्वत: तय करते चले जा रहा है.
- हर कर्म का कर्ता नहीं बना जा सकता है. पृथ्वी घुमाना या चांद-तारे सम्भाले रखना किसी के बस का नहीं. ...परंतु द्रष्टा तमाम कर्मों का हुआ जा सकता है.
- बिना प्रयास के कर्म करना सीख जाओ, जहां तक निगाह उठेगी, वह सबकुछ तुम्हारा हो जाएगा.
- यदि किसी भी कर्म का हाथोंहाथ फल नहीं मिल रहा है, तो समझ लो कि आप गलत कर्म में लगे पड़े हैं.
- भाग्य की ट्रेन सबको अपने डेस्टिनेशन पर पहुंचाने हेतु चल ही रही है. डेस्टिनेशन खुद चुनने के चक्कर में ट्रेन बदलोगे, तो सब नष्ट हो जाएगा.
- सबको यह ध्यान रख ही लेना चाहिए कि बीज मौसम के अनुसार बोए जाते हैं, बोए बीजों के अनुसार मौसम नहीं बदलता है.
- जीवन 'ऑटोमोड' पर है... आप उसमें फल की कामना करके और जमानेभर के प्रयास करके...अपनी अच्छी-खासी चल रही फिल्म को बिगाड़ते चले जा रहे हैं.
- हवा ना तो बहने की कोशिश कर रही है और ना वो यह तय करके रोज निकलती है कि अपने साथ ऑक्सीजन ले ही जाना है; सबकुछ ऑटोमैटिक है, और ऑटोमेशन से कोई चूक कभी नहीं होती. परंतु चूंकि हम अपने को मिली स्वतंत्रता के बलपर अपने ऑटोमेशन के बीच में आ रहे हैं, बस इसी से सारी गड़बड़ें हो रही है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- मनुष्य-जीवन एक ऑटोमेशन है. और जब ऑटोमेशन है तो स्वाभाविक रूप से यहां किसी के पास कोई चॉइस नहीं है.
- जितने ज्यादा भेद और चुनाव करेंगे, उतने ही ज्यादा ''भाग्य के ऑटोमेशन'' से टूटते चले जाएंगे.
- फल की कामना क्यों है? क्योंकि आप मानते हैं कि आपके पास चॉइस है. प्रयास क्यों है? क्योंकि आप मानते हैं कि आप कुछ कर सकते हैं. समाधि की बातें क्यों है? क्योंकि आप मानते हैं कि अभी 'आप' ईश्वर नहीं हैं.
- ''भाग्य के ऑटोमेशन'' के साथ बहनेवाले को किसी प्रयास की आवश्यकता ही कहां है? उसका तो 'पाना-खोना' और 'मिलना-बिछड़ना' सब ऑटोमैटिक होता चला जा रहा है.
- दो ही समस्या है मनुष्य की. एक, भीतर 'भ्रम' है कि यह करूं या वह करूं? और दूसरी समस्या यह कि वह 'द्वैत' का शिकार है कि यह अच्छा और यह बुरा... जबकि दोनों बुनियादी तौरपर गलत हैं.
- जो अपने जीवन में जितनी दखलंदाजी कर रहा है, उतना ही वह अपने 'भाग्य' से बिछड़ता चला जा रहा है.
- अहंकार के रास्ते ऐसे हैं कि वहां छोटे-मोटे पांच नफे होते ही बड़ा नुकसान दस्तक दे जाता है. भाग्य का रास्ता ऐसा है कि वहां छोटे-मोटे... पांच-सात नुकसान झेलने के बाद एक बड़ी लॉटरी लग जाती है.
- प्रकृति की इस लीला में पृथ्वी को घूमने का या सूर्य को रोशनी देने का कोई भार नहीं है. क्यों? क्योंकि प्रकृति ये सारे बोझ उठाए हुए है. लेकिन एक आप हैं... जो अपने जीवन का बोझ उसे सौंपने के लिए तैयार ही नहीं हैं.
- न आपका शरीर है, ना मन और ना इन्द्रियां ही आपकी हैं. ये सब ऑटोमेशन पर है. ऐसे में आप उनपर शासन करने की सोच ही कैसे सकते हैं? ...इसी एक कोशिश ने मनुष्य को सबसे ज्यादा मारा है. क्योंकि ये सीधे तौरपर प्रकृति से झगड़ा है.
- जो कोई कुदरत के ऑटोमेशन से एक है, उसका भला होते चला जा रहा है.
- बने वहां तक इस दुनिया में किसी के ऑटोमेशन का तिरस्कार मत करो. वरना इस चक्कर में आप अपने भाग्य की राह से बिछड़ जाओगे.
- सहिष्णुता का अर्थ इतना ही है कि परमात्मा की चल रही लीला को 'मैं'... बिना दखलंदाजी के चलने दे रहा हूँ. बस आपको यही एक एहसान परमात्मा पर करना है.
- क्यों करना? क्या करना? क्या होगा? इन सब सवालों पर विचार करने की फुरसत ही उन्हें मिल रही है, जो अपने भाग्य से भटक गए हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- यदि... आनंद, मस्ती, शांति, सुकून वगैरह कार्य करने के 'कारण' हैं, तो समझ लेना कि आपने 'भाग्य' की लकीर पकड़ रखी है.
- आप सबकुछ सोचना और करना बंद कर देंगे, तो सब अच्छा-अच्छा आपको ढूंढ़ते हुए आएगा ...और सारा खराब आपके जीवन से गायब होता चला जाएगा. यह एक ऑटोमैटिक प्रक्रिया है.
- आप से अपना बिगड़ा काम नहीं संवरेगा, वो कार्य परमात्मा का ही है. सो उसका काम उसको सौंप क्यों नहीं देते हो?
- जबतक आप यह अनुभव नहीं कर लेते कि यहां सब ऑटोमैटिक हो रहा है, तबतक आप भटकते ही रहेंगे.
- सोचना गुनाह है. क्यों...? क्योंकि हर सोचना एक 'ठहराव' है. जबकि जीवन एक बहती धारा है. अत: जहां रुक जाओ वहां सोचने की जगह इंतजार करते सीखो. इसीलिए 'सब्र' महान गुण माना गया है.
- हरकोई भाग रहा है, और इतनी जोर भाग रहा है कि अब उसे समझ में ही नहीं आ रहा है कि "बिन भागे" मिलता कैसे है?
- आप जिस रोज कुछ भी बदलना नहीं चाहेंगे, उस रोज आपका उद्धार हो जाएगा.
- भगवान दिन-रात सबसे एक ही बात कह रहा है कि तू थक जाए तो बता देना... 'मैं' करना शुरू हो जाऊंगा.
- आपको 'आप' बनना है, और आपको 'आप' आपकी सिस्टम बना सकती है. लेकिन आप उसी को मारने और दबाने में लगे हुए हो. ...बस इसीलिए 'जोकर' बने घूम रहे हो.
- आप परमात्मा के निमित्त हो. अत: आपका कब, कैसे और कहां उपयोग करना, यह उसे तय करने दो.
- दुनिया में दो ही प्रकार के लोग हैं- एक भाग्यशाली, एक दुर्भाग्यशाली. जो ऑटोमेशन में हैं वो भाग्यशाली, और जो उसके विपरीत दिशा में जा रहे हैं वे दुर्भाग्यशाली.
- जिसके 'बुद्धि-अहंकार' उसके मन, शरीर और इंद्रियों के नियंत्रण में हैं, वो ऑटोमेशन में आना शुरू हो जाता है.
- आप एकबार में एक रोल निभा सकते हो. उसे दिल खोलकर निभाओ. ...बाकी के कार्य परमात्मा को सौंप दो. ...आखिर उसे व्यस्त रखना भी तो आपकी जिम्मेदारी में आता है.
- आपकी चिंता आपसे ज्यादा परमात्मा को है, जो इतना समझता है वो धार्मिक है. अपनी चिंता करनेवाला कतई धार्मिक नहीं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- आपकी दुनिया उतनी ही है... जितनी आपको दिख रही है.
- पॉझिटिव साइड पर उसकी मर्जी बिना पत्ता नहीं हिलता, निगेटिव साइड पर 'बुद्धि-अहंकार' अपना पूरा जीवन तहस-नहस करने हेतु स्वतंत्र हैं.
- हम डायरेक्टर की सुन कहां रहे हैं जो हमारा जीवन बनेगा? हम तो वह हैं जो अपना रोल तक ठीक से निभा नहीं पा रहे हैं. और-तो-और, जहां हमारा कोई रोल ही नहीं है, वहां जमाने भर के उपद्रव कर रहे हैं.
- जैसे ही आप कन्फ्यूज्ड होते हैं कि आप भाग्य और समय से बिछड़ जाते हैं. क्योंकि समय और भाग्य की धारा बहे चले जा रही है.
- इतना महान डायरेक्टर उपलब्ध होते हुए भी हरकोई यहां अपनी फिल्म स्वयं डायरेक्ट करने में लगा हुआ है. इसीलिए किसी के फिल्म की स्टोरी तक समझ में नहीं आ रही है.
- आप कितने जन्मों से कितना कुछ करते आ रहे हो, बात बनी क्या? नहीं न, तो अब तो सबकुछ उस परमात्मा पर छोड़ो.
- आपका अधिकार कर्म तक है; जैसे ही आपका कर्म खत्म, आपका रोल खत्म.
- ऑटोमेशन की शरण जाते ही ना सिर्फ आपकी रेन्ज बढ़ती है, बल्कि आपका रोल भी बड़ा होता चला जाता है.
- भाग्यशाली होने का अर्थ इतना ही है कि अब मैंने अपनी फिल्म का डायरेक्शन परमात्मा को सौंप दिया.
- मनुष्य भाग्य को छोड़कर दुर्भाग्य को चुन रहा है, और यही उसके दु:ख और असफलता का कारण है.
- रेंज बढ़ाने मत जाओ... और जिस चीज की आवश्यकता नहीं है, उसको रेंज में मत लाओ. इन दो चीजों का खयाल रख लोगे, तो अपने भाग्य से कभी नहीं बिछड़ोगे.
- संकल्प यानी मैं यह करूंगा, और विकल्प यानी मैं यह नहीं करूंगा. दोनों ही सूरतों में आप यह तय करते हैं कि चाहे जो हो जाए, मैं परमात्मा की मरजी तो नहीं ही चलने दूंगा.
- सब खेल उसका है, और जब उसका है तो कम-से-कम गर्व और शर्म किसी बात के लिए मत पालो. यह तय जान लो कि जब तक गर्व और शर्म है, आप परमात्मा की लीला के बीच में आते रहोगे.
- उसकी आवाज के साथ ही कार्य को अंजाम तक पहुंचाने की शक्ति और इंटेलिजेन्स दोनों आती हैं.
- अपने रोल के आगे जाना मत, और अपने को मिले रोल से कभी भागना मत. ...फिर देखो, जीवन क्या-से-क्या हो जाता है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- जो वर्तमान में आपका रोल है... उससे भागना नहीं, और रोल पूरा होते ही फिर वहां ठहरना नहीं. खुद गौर कर लो. सारे झमेले खेल खत्म होने के बाद भी रुकने पर ही आ रहे हैं.
- भगवान पूरी तरह से सर्वव्यापी है. वह ना तो किसी भूतकाल में है और ना किसी भविष्य में. और वर्तमान में भी कितना है, जितना आपका रोल है.
- जिस दिन 'दाने' पर जिसका नाम लिखा है, दाना उस तक पहुंचाते सीख जाओगे; उस दिन परमात्मा छप्पर फाड़ के देगा.
- भाग्यशाली का अर्थ इतना ही है कि वह अब रहने हेतु परमात्मा की दुनिया में चला गया.
- हर पल हरेक का रोल यहां तय होता चला जा रहा है. इस निरंतर चल रही प्रक्रिया में जो अपना वर्तमान रोल नहीं पहचानता है, वह भटक जाता है.
- मनुष्य का बुद्ध बनना, एडीसन बनना, बिल गेट्स बनना... ठीक वैसा ही है, जैसे गुलाब के किसी बीज का गुलाब का फूल बनना.
- इन्कार करने का अधिकार यहां किसी को नहीं.
- यदि आप हर बात के कारण खोज रहे हैं, तो अपनी कब्र खुद खोद रहे हैं.
- संकल्प लेते ही आप बहती धारा को रोकने में लग जाते हैं. और यह भाग्य के सिद्धांत के खिलाफ है.
- यहां हर कोई महान बनने आया है.
- आप अपना वर्तमान रोल अच्छे से निभाओ, परमात्मा और बड़ा रोल निभाने का अवसर देगा.
- उन मनुष्यों के जीवन में गड़बड़ है जो अपने 'बुद्धि-अहंकार' के बल पर तथा तरह-तरह के ''ज्ञान और संकल्पों'' का सहारा लेकर, अपना जीवन स्वयं बनाने की कोशिश में लगे हैं.
- महान ऑटोमेशन की करी जा रही अवहेलना का मनुष्य सर्वाधिक भुगत रहा है.
- मुक्त पुरुष कौन है? जिसने जान लिया कि सबकुछ अपनेआप हो रहा है. और जब अपनेआप हो रहा है तो मेरे करने को कुछ बचा ही नहीं.
- सबकुछ परमात्मा है तो फल की कामना की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जो भी मिलेगा, वह परमात्मा ही होगा.
- परमात्मा के यहां से आप डिफेक्टिव नहीं आए थे. ...तो फिर इतने डिफेक्टिव हो कैसे गए? इस एक सवाल का जवाब खोज लो, सबकुछ पा लोगे.
- आपके भीतर से जो निकल रहा है, वह एक लंबे गणित के तहत निकल रहा है. उसमें आपका 'स्थायी-हित' छिपा हुआ है. आप नजदीक के नुकसान से घबराकर अपने भीतर को दबाते हैं, और अपने 'महान भाग्य' से बिछड़ जाते हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- आप ना कुछ छोड़ने की कोशिश करो और ना कुछ पकड़ने की. सारा छोड़ना-पकड़ना अपनी सिस्टम पर छोड़ दो. जल्द ही सब सेट हो जाएगा.
- धीर पुरुष का अर्थ क्या है? यही कि परमात्मा जो और जितना भेजेगा, निकाल दूंगा. और उसके परिणामस्वरूप जो होगा, उसे परमात्मा की मरजी मानकर स्वीकार लूंगा.
- आप अपने लिए करने में लगे हैं, इसलिए बात नहीं बन रही है. आप परमात्मा के लिए करने में लग जाएं, बात बन जाएगी.
- आप अपने अहंकार को खत्म कर दो, क्योंकि आप हो ही नहीं... परमात्मा ही है. सो बस, परमात्मा के कहने पे करना है, और परमात्मा के लिए करना है.
- आपको दिया गया रोल पूरी कर्मठता से निभाना ही आपका एकमात्र कर्तव्य है.
- जो होता है, वह होने दो. करो कुछ मत... पहुंच जाओगे...जहां पहुंचना है.
- दूसरों को फॉलो करने वाले अपने भाग्य से बिछड़ जाते हैं.
- एक कर्म निपटते ही दूसरा कर्म पुकारता है. पुकार सुनते रहो और कर्म करते रहो, कहां-से-कहां पहुंच जाओगे और पता भी नहीं चलेगा.
- जीवन कर्मों की एक अविरल शृंखला है. इसमें पलभर का विराम नहीं है. भाग्य की राह पर चलने वाले यह बात समझते हैं, इसलिए वे ‘‘फल या कामनाओं’’ के चक्कर में नहीं उलझते हैं.
- आप भटक क्यों गए हैं? राह पूछने के चक्कर में. राह पूछना बंद कर दो, भटकना बंद हो जाओगे.
- मुसीबतें मनुष्य को इतनी तेजी से नहीं खोज रही हैं जितनी तत्परता से मनुष्य मुसीबतों को खोजता हुआ उसके पास पहुंच रहा है.
- फल की लालसा वे करें जिन्हें कर्म में मजा नहीं आ रहा है. सवाल यह कि फिर वे कर्म कर ही क्यों रहे हैं?
- हर किसी को लगता है कि उसे उसकी प्रतिभानुसार नहीं मिल रहा है. लेकिन ऐसा है नहीं... क्योंकि यहां प्रकृति में पल-पल ऑटोमैटिक न्याय हो रहा है. सो मार कहां खा रहे हो, इन कारणों का पता लगा लो. ...तभी आगे बात बन पाएगी.
- किसी भी चीज या कार्य को ‘‘प्रिय या अप्रिय’’ मानना खतरनाक है. क्योंकि पता नहीं भाग्य की बहती धारा में कब क्या करना पड़ जाए और कब किसे अपनाना पड़ जाए.
- कर्म में आवश्यक ‘‘ध्यान व ज्ञान’’ लगाने से ही कर्म के श्रेष्ठ परिणाम लाए जा सकते हैं. कर्म में आवश्यकता से कम या ज्यादा ‘‘ज्ञान या ध्यान’’ लगाने से कभी इच्छित परिणाम नहीं आने वाले.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- मन और शरीर में संघर्ष होने पर जो आप अनुभव करते हैं, उसे ही दु:ख, कष्ट, संकट, टेन्शन, और परेशानी कहते हैं. सवाल यह कि दोनों को साथ में लेकर चलना सीख क्यों नहीं जाते हैं?
- मन, शरीर और बुद्धि के चलते संघर्ष के साथ जो कार्य आप निपटmते हैं, वे ही 'कर्म' कहलाते हैं. और मन, शरीर तथा बुद्धि की हार्मोनी के साथ जो कार्य आप करते हैं, वे 'अकर्म' कहलाते हैं. और ऐसे अकर्मों से ही जीवन बनता है.
- यदि जीवन में मजबूरी है तो जान लो कि आपका प्रकृति के महान ऑटोमेशन से संपर्क टूट चुका है. संपर्क फिर से जोड़ना चाहते हो तो जीवन की सारी मजबूरियों को त्याग दो.
- कामनाएं मन को उड़ा ले जा रही हैं और संकल्प मन को बांधने की फिराक में है. ये दोनों ही जहर हैं, क्योंकि दोनों मन के बहते फ्लो के साथ दखलंदाजी कर रहे होते हैं.
- कृष्ण पूरी गीता में सबसे कड़ा प्रहार 'कामनाओं व संकल्पों' पर करते हैं. कृष्ण गलत हो ही नहीं सकते. दोनों को हटाकर देखिए, जल्द ही आपका ''प्राकृतिक भाग्य'' आपको थाम लेगा.
- जितनी गलतियां आप महान कलाकारों, वैज्ञानिकों और संतों के जीवन में निकाल रहे हैं, उतना ही आप परमात्मा से झगड़ा कर रहे हैं. क्योंकि वे लोग तो वो करके गए हैं, जो परमात्मा ने उन्हें करने को कहा था.
- दूसरों के हाथों अपना उद्धार चाहनेवालों का कभी उद्धार नहीं होता है. परंतु अपने हाथों अपना उद्धार करने में लगे मनुष्य से एकदिन पूरे जगत का उद्धार हो जाता है. सभी महान लोग इस बात के गवाह हैं.
- आम के बीज को आम का पेड़ बनने के लिए कोशिश नहीं करनी पड़ रही है, और ना ही किताबें पढ़नी पड़ रही है. देखो, फिर भी आम के पेड़ धड़ल्ले से उग ही रहे हैं.
- अपना जीवन बनाने के दो तरीके हैं- एक तो मिली स्वतंत्रता के बल पर स्वयं कोशिश करें, या फिर कुदरत के ऑटोमेशन को समर्पित हो जाएं. कोई भी एक राह दृढ़तापूर्वक पकड़ लें, सब सेट हो जाएगा.
- मन का सत्य हो या परिस्थिति, जब दोनों में से किसी को बदलने की सत्ता ही आपके पास नहीं है...तो फिर क्यों बेकार के प्रयास कर अपने को संकट में डाल रहे हो?
- सत्य के अलावा कुछ और मौजूद ही नहीं है. तभी तो उसे 'शाश्वत' कहते हैं. और आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि आप चौबीसों घंटे इस 'शाश्वतता' से भागने

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

में लगे हैं. यही आपका ज्ञान है, ये ही आपके कर्म हैं और ये ही आपके सारे प्रयास हैं. सवाल यह कि सत्य से भागकर जीवन बन ही कैसे सकता है?

- आप को 'आप' बनना है, आपको 'आप' सिर्फ आप ही बना सकते हैं - सो यहां-वहां पूछना छोड़ो और काम पे लगो.
- हजार समस्याओं से एकसाथ निपटना चाहते हो. ...यह रहा उपाय. एक से स्वयं निपटना शुरू करो बाकी भगवान भरोसे छोड़ दो. ...आखिर उसे भी तो कुछ काम चाहिए.
- आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि जीवन में कई चीजें अनायास ही आई हैं. कई तो ऐसी होंगी जिनकी आपने सपने में भी तमन्ना नहीं की होगी. और मजा यह कि जो अपने-आप आई हैं, उतनी ही सुखदाई चीजें आपके जीवन में हैं. सो, और कुछ नहीं तो कुछ मात्रा में तो अपनी कामनाएं कमजोर करो.
- परमात्मा आपको क्या बनाए यह ना तो आपके धर्म या समाज, और ना ही आपके पंडित, मौलवी और पादरी ही तय कर सकते हैं. ये केवल आपका और आपके परमात्मा के बीच का विषय है. इनको बीच में आने दिया, इसी से तो आप फंस गए हैं.
- अगर आपको एक साथ दसियों काम जरूरी नजर आ रहे हैं...तो एक भी मत करना, आप बच जाओगे.
- परमात्मा जो आपको बनाना चाह रहा है, वो आप बनने को राजी नहीं हो. आप जो अपने को बनाना चाह रहे हो, वह बनने में मजा नहीं है. ...फिर भी आप स्वतंत्र तो हैं ही.
- शरीर की सामान्य क्रियाओं में बने उतनी कम छेड़खानी करना ''शारीरिक स्वस्थता'' बनाए रखने में सहायक होता है.
- आप अपनी और दूसरों की जिद पूरी करने के चक्कर में रोज-रोज परमात्मा से बिछड़ते चले जा रहे हैं. चुपचाप परमात्मा की सारी इच्छाएं पूरी क्यों नहीं होने देते हैं? आपकी अपने से कोई दुश्मनी है क्या?
- सुख-सफलता, धार्मिकता और ईश्वर यह सब नेचरली उपलब्ध होनेवाली चीजें हैं. बुद्धि तो दु:ख व चिंताएं लाने हेतु लगानी पड़ती है.
- जो कुछ भी आप अपना मान रहे हैं, सब परमात्मा का मान लो. फिर वो आपकी संपत्ति हो या चिंताएं. जीवन की सारी समस्याएं समाप्त हो तो गई.
- आपने और आपके चाहनेवालों ने मिलकर जो मेहरबानियां 'आप' पर की हैं, उससे निपटने में ही आपका पूरा जीवन बीता जा रहा है. ...इससे तो बेहतर होता कि परमात्मा की मेहरबानी का इंतजार कर लेते.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- अगर आप किसी चीज के शौकीन हैं तो उसपर पहला अधिकार आपका है, कोई रोक नहीं रहा है. लेकिन अगर शौक नहीं है और फिर भी वह चीज आपको उपलब्ध है, तब उसपर अधिकार उसका बनता है जिसको शौक है. यही सर्वहित की धारा से जुड़े रहने का सीधा उपाय है.
- बाह्य ज्ञानों से मनुष्य केवल झेरोक्स या फोटोकॉपी हो सकता है. जबकि जगत में कीमत ओरिजनल की है. और मनुष्य अपना ओरिजनल स्वरूप सिर्फ अपने भीतर के निर्देशों का पालन करके ही पा सकता है.
- एक सीधा सिद्धांत क्यों नहीं समझते हैं कि परमात्मा का भेजा जहर भी 'अमृत' है और 'आपका' खोजा अमृत भी अंत में जहर ही सिद्ध होता है.
- अब मैं क्या करूं, यह सवाल जीवन में भटके होने का सबूत है. वास्तविक जीवन तो इतना फ्लो में बहता है कि जहां इतने फुरसत के क्षण आते ही नहीं.
- परमात्मा की दी हुई सिस्टम परमात्मा को ही चलाने दो, आपके चलाने से ही तो आपकी सिस्टम इतनी रिपेरिंग मांग रही है.
- कर्म में जान लगा दो तथा फल हंसते हुए स्वीकार लो. यह दो कार्य कर लोगे तो जीवन में झंझट बचेगी ही नहीं.
- यह समझ ही लो कि अपने सायकोलोजिकल दायरे को लांघने हेतु की जानेवाली हर कोशिश बड़े गंभीर दुष्परिणाम लेकर आ रही है.
- परमात्मा हमारा जीवन उसी तरह से चलाता है, जैसे वह पृथ्वी घुमाता है या हवाएं बहाता है. वह वाकई एक्सपर्ट है... सो उसे उसका कार्य करने दो, बीच में क्यों आते हो?
- हर एक नया आता हुआ 'पल' अपने साथ क्या करना की खबर लेकर आता है. यह एक बात समझ लोगे तो उसी क्षण जीवन की अंतिम ऊंचाई पा लोगे.
- किसी भी बाहरी प्रभाव के कारण आपने अपने अस्तित्व के साथ छेड़खानी की तो परिस्थिति बद-से-बदतर होती चली जाएगी.
- सच्चा धार्मिक सिर्फ दर्पण होता है. वह कभी छल करूंगा या प्रेम, यह तय करके नहीं बैठता है. वह छल करेगा या प्रेम, यह तो सामनेवाले व्यक्ति या सर पर आयी परिस्थिति पर निर्भर होता है.
- आपके अलावा अन्य कोई जीवित है, यही भ्रम जीवन के सारे उपद्रवों की जड़ है. जबकि सच तो यह है कि बाकी सब आपके लिए सिवाय 'निमित्त' के और कुछ नहीं है.
- हमारा आना-जाना हो या हमारी सिस्टम, सब ऑटोमैटिक है. ...इसमें रत्तीभर दखलंदाजी की गुंजाइश ही कहां है?

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- इस समय जो है...उससे बेहतर कुछ हो ही नहीं सकता है. जो जीवन के इस रहस्य को समझ जाएगा, वह तत्क्षण तमाम व्यर्थ की झंझटों से मुक्ति पा लेगा.
- आपके मन में जो नहीं है वो आप करेंगे तो परमात्मा की मार पड़ेगी, क्योंकि वो कार्य आप एक निश्चय से कभी नहीं कर पाएंगे. इसीलिए लगातार ''एक निश्चय से कर्म करते चले जाना'' धर्म की अंतिम ऊंचाई मानी गई है.
- कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करना ही परफेक्शन का सबूत है. लेकिन प्राय: सब कम या ज्यादा चेष्टा कर रहे हैं. और इसीलिए कर्मों के उचित परिणाम नहीं आ रहे हैं.
- प्रकृति की एक बड़ी ही खूबसूरत 'संयुक्त-लीला' चल रही है, मनुष्य भी इसी लीला का एक अंग है. जिसे यह बात समझ में आ जाती है, वो अपनी अलग से लीलाएं करना बंद कर देता है. ...बस उतने ही आबाद हो रहे हैं.
- मनुष्य ना जाने क्यों तय करने और चाहने से बाज नहीं आता है. जबकि सत्य यह है कि किसको क्या मिलना और क्या नहीं मिलना, यह उसके अधिकार क्षेत्र में आता ही नहीं है.
- कुछ भी तय करने से पूर्व एकबार गौर से देख तो लो कि प्रकृति की ओर से कुछ भी तय करने की ऑथोरिटी आपको उपलब्ध है भी या नहीं?
- किसी भी चीज से अगर लोभ और भय उत्पन्न होता है तो तुरंत समझ लो कि आप गलत दिशा में जा रहे हैं.
- कुछ बदलने की जरूरत नहीं है. क्योंकि आपको किसी सकारात्मक परिवर्तन की छूट ही नहीं है. क्योंकि सारे सकारात्मक कार्य ऑटोमैटिक हो रहे हैं.
- जो अपने सुख की चिंता कर रहा है, वह दुखी है. जो सबके सुख की चिंता कर रहा है, वो झूम रहा है.
- संयुक्तता का दूसरा नाम परमात्मा है. और जब सबकुछ संयुक्त है तो लाभ-हानि का सवाल ही कहां पैदा होता है? क्योंकि यहां एक की हानि दूसरे का लाभ है ही. सो, मजे लो... गंभीर क्यों होते हो?
- जो बूंद 'समुद्र' से अलग हो जाती है वो फिर कभी ढूंढ़े नहीं मिलती. इस सत्य को जानने के बावजूद सब बूंद बने जी रहे हैं, यही आश्चर्य है.
- मनुष्य अपनी सायकोलोजी में सदैव सुरक्षित है.
- जो प्रकृति से एकरस है उससे कोई नहीं उलझ सकता.
- कुदरत की रचना में मनुष्य को इस कदर आत्मनिर्भर बनाकर भेजा गया है कि जो कुछ भी उसके जानने और पाने लायक है, सब उसमें पहले से मौजूद है. और बचा हुआ, जीवन की बहती धारा उसे अपनेआप सिखा देती है.
- आदमी समझता है कि कष्ट उठाए बगैर कुछ नहीं मिलता - ये आपकी दुनिया का गणित है जो आपको समझाया गया है. एक दुनिया परमात्मा की भी है,

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

उसमें चले आओ; वहां सब बिन मांगे मिलता है.

- आपका अस्तित्व जादुई है. वह आपको एक-से-एक चमत्कारी बातें भेजेगा. थोड़ी अपने अस्तित्व पर श्रद्धा रखो. थोड़ी सबूरी रखो.
- आपका अस्तित्व तमाम शक्तियों से भरा पड़ा है, सिर्फ परिस्थिति की डिमान्ड तो आने दो.
- आपके जीवन का रहस्य आपके बुद्धि-अहंकार नहीं जानते, लेकिन आपका अस्तित्व जानता है. अपने अस्तित्व में ठहरो तो सही...
- आप दखल देना बंद कर दो, एक-एककर आपकी सारी परेशानियों का अंत आ जाएगा.
- परिस्थिति की मांग पर आप वह सबकुछ सीखते चले जाते हो... जो सीखना जरूरी है. बस अपने को परिस्थितियों के साथ बहाते सीख जाओ. इस एक कला से ही अनपढ़ एडीसन महान वैज्ञानिक हो गया.
- यहां पर हर एक को अपनी क्षमता के अनुसार मिल ही जाता है. आसरे-आश्वासनों की जरूरत उन्हें पड़ती है जो अपनी क्षमता से ऊपर का पाना चाहते हैं. पर यह नियम से संभव नहीं है.
- समुद्र पर क्या संकट? सारा संकट बूंदों पर है.
- जिन्हें इस संसार की न्याय-प्रणाली पर विश्वास नहीं है, वे ही लोग या तो चीजों को वक्त से पहले हासिल करना चाहते हैं या फिर अपनी क्षमता से ज्यादा चाहते हैं.
- अपने अस्तित्व के साथ मस्ती से जीएंगे तो बाहर सबकुछ बदल जाएगा.
- जो अपनी बूंद को जितना बचाने में लगा है, उसकी बूंद उतनी ही तहस-नहस होती जा रही है.
- जीवन एक बहती धारा है जिसमें आपको ना तो कोई चुनाव करना है और ना ही आपको कुछ तय करना है. आपको तो बस जीवन के साथ बह जाना है.
- इच्छाएं करने से कोई नहीं रोक रहा है. पहले तय सिर्फ इतना कर लो कि आपकी भलाई आपकी इच्छाओं में ज्यादा है या परमात्मा की इच्छाओं में.
- कर्म आपके हाथ में है, सो कर लो. फल आपके हाथ में नहीं, सो परमात्मा पर छोड़ दो. समझते क्यों नहीं कि कुछ पाने या खोने के डर से कुछ भी किया...तो मरोगे ही मरोगे.
- आपकी दुनिया में कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है, लेकिन परमात्मा की दुनिया में सिर्फ पाना ही पाना है. सो अपनी दुनिया छोड़ उसकी दुनिया में आ जाओ. जीवन के सारे 'रोने' खत्म करने का यही एक उपाय है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- ब्रह्मचर्य में स्थित हो जाओ, बस फिर सारी समस्या समाप्त. और ब्रह्मचर्य का अर्थ है "ब्रह्म जैसी चर्या" ...यानी ना इन्टफिअर करना है और ना किसी को इन्टरफिअर करने देना है.
- एक ही आवाज हमें सुननी चाहिए, उस एक ही आवाज की शरण में हमें रहना चाहिए... और उस एक ही आवाज से हमें एक होना चाहिए. और वह है परमात्मा की आवाज. अनेक आवाजों की भीड़ में उस एक आवाज को खोना नहीं चाहिए. क्योंकि उस एक आवाज में ही आपका उद्धार है.
- कोई बकरी शेर बनने की कोशिश नहीं कर रही है और ना ही कोई शेर शाकाहारी होने की कोशिश कर रहा है. ऐसी सारी जोकरों वाली हरकतें सिर्फ मनुष्य कर रहा है.
- सूर्य भी अपने धर्म में तभी तक स्थित है जबतक कि वह विटामिन-डी दे रहा है. आप भी तभी तक धार्मिक हैं, जबतक भगवान की दी जिम्मेदारी निभा रहे हैं.
- आवाज से अंजाम तय होता है, यह भाग्य का एक सिद्धांत है.
- हम संयुक्तता का हिस्सा हैं; सो संयुक्तता के लिए जीओ और उसी के लिए मरो. उसी संयुक्तता से लो और उसी संयुक्तता को दो. जाती हिसाब-किताब के चक्कर में पड़ते ही क्यों हो?
- ज्ञान हो या 'कर्म', प्रत्यक्ष फल देनेवाले श्रेष्ठ. क्योंकि कल यहां किसने देखा है?
- समुद्र की कोई बूंद प्राय: लहर के खिलाफ जाने की जिद नहीं करती है, और अगर कोई कोशिश करती भी है... तो वह समुद्र के बाहर आते ही खो जाती है. यही हाल सबके जाती अहंकारों का भी हो रहा है.
- अपने आनंद, मस्ती, सुख और शांति की पूंजी बढ़ाइए, वो ही आपका खजाना है... और वो ही आपके जीवन की सच्ची राह है.
- अपने आपको हो सके उतना समेट लो. जितना अपने को समेटोगे, उतना फैल जाओगे.
- जब आप मस्ती में होते हैं, शांति में होते हैं या उत्सव में होते हैं; तब समझ लेना कि आप ठीक जगह पर हैं.
- जब भी आप कष्ट में हैं, तब जान लेना कि आप गलत समय पर गलत जगह हाजिर हो गए हैं.
- जिसे फल में रस है उसे कर्म में मजा नहीं है. और जिसे कर्म में मजा है उसे फल में रस लेने की आवश्यकता ही क्या है?
- कर्म से फल का फासला सीधे तौरपर कर्म के परिणाम को प्रभावित करता है.
- समुद्र की चिंता करोगे तो ही आपकी 'बूंद' सलामत रहेगी.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- गुलाब का बीज या तो गुलाब का पेड़ बन सकता है या नष्ट हो सकता है - ऐसे ही मनुष्य की भी दो ही नियति है; या तो वो अपना स्वरूप पाकर आबाद हो जाए...या फिर अपने स्वरूप से विपरीत की दिशा पकड़ के बर्बाद हो जाए.
- कुदरत बिल्कुल पक्षपाती नहीं है. वह हर एक को महान मकसद से ही भेजती है. यह तो मनुष्य अपनी राह स्वयं चुनने के चक्कर में मकसद से भटक रहा है.
- आपका हर कर्म आपके मन के समय की गति को बढ़ानेवाला होना चाहिए.
- यहां सब एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं. सो हर एक को यह मालूम होना चाहिए कि कौन-कौन उसमें गुंथा हुआ है और वो खुद कितनों में गुंथा हुआ है.
- 'गुलामी' मनुष्यों के सारे दुखों की जड़ है. क्योंकि गुलाम हंसते नहीं, गुलाम जीते नहीं और गुलाम जीवन में बहुत कुछ करते नहीं. और ये गुलामियां आती कहां से है? भीड़ में खड़े रहने की आदत के कारण. अकेले अपनी राह चल पड़े को कोई गुलामी नहीं झेलनी पड़ती.
- चारों ओर जहां नजर घुमाओ, एक या दूसरे झंडे के तले खड़ी... भीड़-ही-भीड़ नजर आ रही है. बेचारी बड़ी परेशान है. मर-मर के जीने को मजबूर है. क्यों...? क्योंकि परमात्मा भीड़ की खबर ही नहीं लेता है. ...यही तो अकेले खड़े होने का महत्व है.
- आप अपने ज्ञान को इस पल की आवश्यकता तक समेटने की कला सीख जाओ... तो पूरा जहां पा सकते हो.
- जब कोई बंधन नहीं हो तो समय की धारा तेज हो जाती है, और समय की तेज बह रही धारा ही सकारात्मक परिस्थितियों का निर्माण करती है. इस एक वाक्य में सभी महान लोगों के 'महान' बनने का राज आ गया.
- समय से पहले व आवश्यकता से अधिक सीखने के चक्कर में ही मनुष्य अपनी महान स्पोन्टेनिटी नहीं निखार पा रहा है.
- मनुष्य के विश्व का निर्माण भी उसे ही करना होता है, और उसे संवारने की जवाबदारी भी उसी की होती है. जो यह जवाबदारी ठीक से निभा लेता है, वही आगे चलकर यह जवाबदारी परमात्मा को सौंप पाता है. ...और जवाबदारी परमात्मा को सौंपते ही वह उससे महान कार्य करवा लेता है.
- ये जगत रास खेलने के लिए है, और समय हर एक को उसके समय पर दांडिया खेलने के लिए उम्मीदवार भेज देता है. समय की बहती धारा में जी रहे को यहां साथी खोजने थोड़े ही जाना है.
- स्वार्थ के डांडिये खेलना बंद कर सर्व की रास में कूद पड़ो. देखो, कैसे आपका उद्धार हो जाता है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- मंजिल की चिंता उन्हें सता रही है जो गलत राह पर चल पड़े हैं. सही राह पर बढ़ रहे व्यक्ति के लिए तो राह और मंजिल में फर्क ही नहीं है.
- ऐसी कोई घटना नहीं है, जिसका सिर्फ नेगेटिव पहलू हो. सो आप निगाह हर घटना के पॉझिटिव पहलू पर लगाएं. इस एक आदत से आपकी दृष्टि विशाल हो जाएगी.
- हर मनुष्य को अपने जहन में रोज ये बात उतारनी चाहिए कि "जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा हो रहा है... और जो होगा वो भी अच्छा ही होगा". यही ऑटोमेशन का जादू है.
- पालने की जिम्मेदारी पैदा करनेवाले की होती है. सो जवाबदारी सौंप दो उसे.
- समुद्र अपनी सारी बूंदों को बिना पक्षपात के और बिना भेद के संभाले हुए है. लेकिन जो बूंद अलग हो जाती है, उसका 'समुद्र' कुछ नहीं कर सकता है.
- जीवन की दो धाराएं एकसाथ बह रही हैं - एक परमात्मीय धारा है, जहां जो हो रहा है वो अच्छा हो रहा है. दूसरी अहंकार की धारा है, जहां हर पल सिवाय बुरे के और कुछ नहीं हो रहा है. और आपके जीवन का फैसला आप किस धारा में बैठे हैं, उससे होता चला जा रहा है.
- जो कुछ भी हुआ उसमें सिर्फ बुरा तो नहीं ही हुआ होगा. कुछ तो अच्छा भी हुआ ही होगा. बस तो अच्छे को पकड़ के आगे बढ़ जाओ. यह भाग्य की राह पकड़ने का एक परम सिद्धांत है.
- जो हुआ वो आपको 'बुरा' क्यों लग रहा है, क्योंकि वो आपकी इच्छा के मुताबिक नहीं हो रहा है. सवाल यह कि जो कुछ आपकी इच्छा के मुताबिक हुआ, उसमें भी कौन-सा आपका भला हो गया?
- एक निश्चय से चलनेवाला हमेशा सुखी रहता है.
- कुछ बुरा ना घटे या आपकी आशा के अनुरूप घटे इस हेतु आप जमाने भर के कर्म कर रहे हैं, परंतु कुछ आशा के अनुरूप घट नहीं रहा है. घटेगा भी नहीं... क्योंकि आप एक ऐसी ट्रेन में सवार हैं जिसमें कोई अच्छा स्टेशन आनेवाला ही नहीं है. सो ट्रेन बदल लो. ...चुपचाप 'भाग्य' की ट्रेन पकड़ लो.
- 'मैं' को जितना मजबूत करना चाहो, कर लो. कौन रोकता है? पर यह ध्यान रखना कि जितना 'मैं' मजबूत होगा, जीवन उतना ही कष्टपूर्ण होगा.
- कष्ट इस बात का सबूत है कि आप परमात्मा की मरजी के खिलाफ कुछ पाने की कोशिश में लगे हैं.
- सारे धर्म, सारे शास्त्र, सारे समाज, सारी शिक्षा और सारे लोग एक-दूसरे को ऍडवाइस दे रहे हैं. और वे किस बूते पर दे रहे हैं? एक ही गलतफहमी के कारण कि मनुष्य के पास कुछ भी सकारात्मक करने की 'चॉईस' है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- जीवन का पूरा खेल मानसिक है. बाहर से 'जुल्म' व 'दंड' एक से लगते हैं, परंतु दोनों में बड़ा भेद है. और वह भी इतना बड़ा कि जुल्म करना नहीं चाहिए, और दंड देने से बचना नहीं चाहिए.
- यह सत्य है कि दाने-दाने पर खानेवाले का नाम लिखा है. और इसीलिए तो सही दाना सही मुंह तक पहुंचाना एकमात्र पुण्य है.
- जिनका जगत के उद्धार में योगदान है, उनको दिल से धन्यवाद देने-मात्र से आपके जीवन में फर्क आना शुरू हो जाएगा.
- ऐतिहासिक बनना चाहते हो? बड़ा आसान है... दूसरों को फॉलो करना बंद कर दो.
- हमारे जीवन पर कायदे से प्रकृति का पूर्ण अधिकार होना चाहिए. आपका जीना और मरना दोनों उसी के लिए होना चाहिए.
- समय की मांग पर कर्म कर लो - फिर वो कर्म शुभ है या अशुभ है, ये आपका विषय ही नहीं है.
- कन्फ्यूज रहने के कारण जीवन नहीं बन पा रहा है. पर आप कन्फ्यूज क्यों हैं? क्योंकि आप सोच रहे हैं कि आपके पास "क्या करना और क्या नहीं करना" का विकल्प उपलब्ध है. अर्जुन भी यही सोच रहा था, और कृष्ण यही समझा रहे थे कि कन्फ्यूज मत हो, तेरे पास युद्ध करने के अलावा का अन्य कोई विकल्प उपलब्ध ही नहीं है.
- समय की धारा में सबका उद्धार अपनेआप हो रहा है. परंतु सब समय से तेज चल रहे हैं. इसीलिए तो 'सब्र' को एक बड़ा गुण माना गया है.
- एक दायरे में सबका जीवन बंधा हुआ है - उसके बाहर देखो ही मत. यह सफलता का महासूत्र है.
- जो अपने दायरे में जीते हैं, उन्हें परमात्मा खुद राह दिखाता है.
- मनुष्य पूछ रहा है कि मैं सफल कैसे होऊं और धर्म कहता है कि तुम सफल हो.
- दुनिया में सारे उपद्रव उन लोगों ने मचा रखा है जो आधे-एक-घंटे के लिए धर्म अलग से कर रहे हैं. बाकी तो जो चौबीस घंटे धर्म में स्थित हैं, वे तो कमाल-पे-कमाल करते जा रहे हैं.
- आप ईश्वर में मानते हैं, यह बड़ी बात नहीं है. महत्वपूर्ण यह है कि ईश्वर आप पर विश्वास करता है कि नहीं? करता होता...तो कब का किसी बड़े काम का निमित्त बना दिया होता.
- अगर आप वो करने लग जाएं जो परमात्मा करवा रहा है तो जीवन आनंद और उत्सव के अलावा कुछ बचे ही न.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- परमात्मा किसको चाहिए? - जिनके जीवन में समस्याएं हैं. जिसने जीवन की समस्याओं पर विजय पा ली, उसने अपना परमात्मा प्रकट कर तो लिया.
- ऐसे व्यक्ति को रत्तीभर कभी मत सताना जिसके पास अपने को बचाने का उपाय न बचा हो. ...वरना परमात्मा उसके साथ हो जाएगा. फिर जो वो आपका हाल करेगा, वो आपसे सहते नहीं बनेगा.
- आप अपनी दखलंदाजियों का ही भुगत रहे हैं.
- गलत कार्य को रोकने के तथा सही कार्यों को बढ़ावा देने के निमित्त बनते चले जाओ, जल्द ही परमात्मा का पूर्ण साथ पा लोगे.
- परमात्मा किसका साथ देगा? उसी का जो सबके उद्धार हेतु उसके कामों का निमित्त बनता चला जाएगा.
- कायदे से, हर मनुष्य का जीवन 'स्व' और 'सर्व' की एक जुगलबंदी है. इसके बीच में जो सबने अपना एक अलग संसार बना लिया है, वही सबकी परेशानियों का कारण है.
- यहां पर जो लोग लगातार परमात्मा के निमित्त बन रहे हैं, बाकी के सारे लोग जाने-अनजाने उन परमात्मा के निमित्त बननेवालों के लिए काम कर रहे हैं. यही परमात्मा के वे हजारों हाथ हैं जो उसके निमित्त बननेवालों को कहां-से-कहां पहुंचा दे रहे हैं.
- वो कैसा सतयुग था जिसमें सब बैलगाड़ी में घूम रहे थे, और यह कैसा कलयुग है कि जिसमें चांद और मंगल पर राज करने के सपने देखे जा रहे हैं?
- मनुष्य को किसी कीमत पर कष्ट उठाकर कुछ पाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए. क्योंकि ''भाग्य के सिद्धांत'' के अनुसार तो कष्ट की और मनुष्य की मुलाकात ही नहीं होनी चाहिए.
- हर व्यक्ति का जीवन उसके ''सगुण स्व'' और ''निर्गुण सर्व'' की जुगलबंदी है, और इस जुगलबंदी को स्थापित किए बगैर ना तो कोई खुश रह सकता है... और ना ही कोई महान बन सकता है.
- सच्चे ज्ञानी 'ज्ञान' नहीं दे रहे हैं, बल्कि वे आपको आपका ओढ़ा ज्ञान भुलाने में लगे हैं. क्योंकि ज्ञान तो तब दिया जा सकता है जब आपके पास कोई ऑप्शन या चॉइस हो?
- सकारात्मक परिणाम तभी आएगा जब बात आपकी रेन्ज में होगी. सो, रेन्ज के बाहर झांको ही मत. और जहां तक सवाल है रेन्ज बढ़ाने का, तो वो काम परमात्मा का है. वो रेन्ज बढ़ाता रहेगा, आप बढ़ते चले जाएंगे.
- पानी चाहे कैसे भी बहे, कहीं से भी बहे... उसका समुद्र में मिलना तय है. वैसा ही हमारा जीवन है. हम कितना भी भटकें, एक नहीं तो लाखों जन्मों बाद सही;

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

हमारी आत्मा का परमात्मा में विलय तय है.

- अपने जीवन के बाबत इतना तो पता होना ही चाहिए कि आपके सम्पूर्ण जीवन पर ''थ्री डायमेन्शन थियरी'' क्रियाशील है. अर्थात आपके जीवन में आनेवाली हर एक चीज के तीन अलग-अलग स्वरूप हैं, और हर परिस्थिति में आपके पास सिर्फ तीन ऑप्शन उपलब्ध हैं. और उन उपलब्ध ऑप्शन में ''भाग्य का ऑप्शन'' चुनते चले गए, तो बात समाप्त.
- कोई प्रिय-अप्रिय नहीं है. क्योंकि यहां कोई तुम्हारा नहीं है और ना तुम किसी के हो. आपके सारे 'प्रिय-अप्रिय' आपके अपने अहंकार का मायाजाल है. और वे आपको भाग्य की बहती धारा से भटका देंगे.
- मनुष्य के पूरे जीवन की बागडोर उसकी मूल-प्रकृति के अधीन होती है. इसलिए अपनी मूल प्रकृति को जाने बगैर और उसमें जिए बगैर कोई मनुष्य खुश नहीं रह सकता है.
- यह पूरा ब्रह्मांड आपका परिवार है, चाहे जिसके साथ रहिए. यह पूरा ब्रह्मांड आपका घर है, चाहे जहां रहिए. बस ध्यान इतना रखिए कि साथी और निवास के मोह में मत फंसिए. ...वरना जीवन की बहती धारा में रुक जाएंगे. और रुका हुआ पानी हो या जीवन; दोनों बदबू मारते हैं.
- जो है, उसी में खुश रहना है. वो भी किसी को डिस्टर्ब किए बगैर और किसी का गुलाम बने बगैर.
- जिसे देखो वह असंभव को संभव करने की कोशिश में लगा पड़ा है. ...समझ ही नहीं रहा कि यही उसकी असफलता का रहस्य है.
- यहां कुछ तय नहीं है, क्योंकि एक पल का दूसरे पल से कुछ लेना-देना ही नहीं है.
- जो परमात्मा में स्थित हैं उनके पास ना कोई चॉइस है और ना कोई ऑप्शन. उन्हें तो बस परमात्मा का हर हुकम बजाते चले जाना है.
- जीवन उनका बनता है जो बहते चले जाते हैं. और बहनेवाले चुनाव नहीं करते, जहां जगह मिलती है वहां बह जाते हैं.
- संयोग बड़ी तेजी से बदलते भी हैं, और अपने ही कारणों से पैदा भी होते हैं. सो बजाए कोशिश करने के अच्छे संयोग बनने का इंतजार करना ज्यादा श्रेष्ठ है.
- आप कुछ कर रहे हैं या कर सकते हैं, यही तो एक 'भ्रम' है; जो दूर करना है.
- चूंकि सबकुछ ऑटोमेशन है, अत: कुछ करने की बात करना ही बेमानी हो जाता है. और सोया हुआ मनुष्य 'करने' के अलावा की कोई भाषा बोलता ही नहीं है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- जो-जो व जहां-जहां आपने ऑटोमेशन पे छोड़ रखा है, वहां सब ठीक है. सारी गड़बड़ें वहीं हैं, जहां आप लगे पड़े हैं.
- अगर कर्म करने का कारण मालूम है तो सावधान हो जाना, क्योंकि कारण आपको नहीं परमात्मा को मालूम होना चाहिए. यह नियम है कि कर्म करने का कारण एकसाथ दोनों को मालूम नहीं हो सकता है.
- परमात्मा कर्म में तो है, परंतु उसके फलों में नहीं है. थोड़ा-सा होश जागने पर समझ में आ जाएगा कि फल नाम की कोई चीज होती ही नहीं है.
- अगर कर्म में फल की कामना है, तो वो आपकी मर्जी है. अगर कर्म है और फल की कामना नहीं है, तो वह परमात्मा की मर्जी है.
- आपके साथ जो कोई, जो कुछ भी कर रहा है, वो आपको आगे की राह दिखाने का निमित्त-मात्र है. यह आपका भ्रम है जो आप यह मानते हैं कि वो आपके साथ कुछ कर रहा है. आपके साथ तो आपके अलावा अन्य कोई कुछ कर ही नहीं सकता है.
- अगर कंस ना होता, तो कृष्ण ना चक्र चलाना सीखते और ना ही मल्ल युद्ध करना सीखते. लेकिन यह सब जरूरी हो गया, क्योंकि सिर पर कंस नामक तलवार लटक रही थी. तो कंस 'कृष्ण' का शत्रु हुआ या उन्हें योद्धा बनाने का निमित्त?
- आपकी परिभाषा में कोई मित्र है तो कोई शत्रु है. लेकिन थोड़ा होश जगाएंगे तो समझ में आ जाएगा कि दोनों आपको सही जगह पहुंचाने के निमित्त-मात्र हैं.
- जितने भी महान लोग हैं... उन्हें गर्व और अभिमान नहीं होता, क्योंकि वे तहे दिल से जानते हैं कि उन्होंने कुछ नहीं किया. ...सब परमात्मा ने करवा लिया.
- आपके भीतर ही सबकुछ प्रवृत्त हो रहा है, और आपके भीतर ही सबकुछ निवृत्त भी हो रहा है. और यह पूरी प्रक्रिया ऑटोमैटिक है. बाहर तो भीतर चल रही इस 'प्रवृत्ति-निवृत्ति' के अनुसार छायाएं आ और जा रही हैं.
- कोई बीज ऐसा नहीं होता जिसमें पेड़ बनने की संभावना ना छिपी हो.
- यदि आप वाकई सुखी और सफल होना चाहते हैं तो आपको ये समझना पड़ेगा कि जैसे भी आप हैं, और जो कुछ भी आपके पास है; वो परमात्मा का परफेक्शन है. इससे कम या ज्यादा इस क्षण को कुछ भी हो ही नहीं सकता था, सो जो है... वह एकदम परफेक्ट है. और अगर वो परफेक्ट है तो आपको इस पल वो सबकुछ मिला ही हुआ है, जो मिलना चाहिए था.
- एक ही चीज का समर्पण परमात्मा चाहता है, और वो है आपके अहंकार का.
- आपकी मस्ती, आपकी शांति, आपका संतोष इस बात का सबूत है कि आप जो कुछ भी कर रहे हैं, वो ठीक है; और परमात्मा की मर्जी आपके साथ है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- ईश्वर पर श्रद्धा तो बैठेगी तब बैठेगी. पहले अपनी प्रवृत्तियों तथा निवृतियों पर तो श्रद्धा बिठा लो.
- नियत कर्म पहचान सकनेवाले को अपने कर्तव्यों के प्रति कोई कन्फ्यूजन कभी नहीं रहता है.
- दान देने हेतु भी होश होना जरूरी है. अयोग्य को दान नहीं दिया जा सकता है.
- पल-पल बहते जीवन में समय, संजोग और परिस्थिति देखते हुए ''नियत कर्म'' तय होते चले जाते हैं. इसमें बहुत ज्यादा बुद्धि लगाने की आवश्यकता ही क्या है?
- हमें न सूरज-चांद उगाने हैं, न गुरुत्वाकर्षण ही सम्भालना है. हमें तो अपने खाये भोजन का खून तक नहीं बनाना है. हमें तो सिर्फ अपने जीवन को आनंद, शांति व सफलता की राह पर लगाना है. क्या यह हास्यास्पद नहीं कि बुद्धिमानी का दावा करने वाले हमसे इतना तक नहीं हो रहा है?
- कुदरत रिश्तेदारी नहीं निभाती है, बल्कि वह योग्यता की पुजारिन है. आपको भी रिश्तेदारी निभाने की बजाए योग्यता का पुजारी होना चाहिए.
- भीतर से आनेवाले कर्मों को बिना कामना के करे चले जाओ, देखते-ही-देखते आप कहां-से-कहां पहुंच जाओगे.
- निश्चित ही शरीर 'कर्म' करने के लिए उपलब्ध करवाया गया है. बेहतर है शरीर से अपने हेतु कर्म करने के बजाए परमात्मा के लिए कर्म करें.
- यह नियम है कि जिस कर्म में कष्ट हो, उसके 'फल' में कभी आनंद नहीं आ सकता है.
- आपके दबाने से कुछ दब जाता हो, तो दबाओ. आपके करने से कुछ हो जाता हो, तो करो. ...वरना चुपचाप जो हो रहा है, वह होने दो.
- जन्मों से मेहनत करके पैदा की प्रतिभाएं आपकी मूल प्रकृति में छिपी हुई है. इसलिए सफलता पाने हेतु अपनी ''मूल प्रकृति'' में ठहरे रहना बहुत जरूरी है.
- जो हो रहा है, उसे होने दें. ...बस यही एकमात्र सच्चा ज्ञान है.
- कारणों की खोज क्यों कर रहे हैं? परिणामों की चिंता क्यों कर रहे हैं? क्या आप परमात्मा से ज्यादा जानते हैं?
- आपके भीतर जो है, उसके पीछे एक गहरा रहस्य है. अत: जो आपके भीतर है उससे मुंह मत फेरें.
- जीवन में आयी हर समस्या से खुद नहीं निपटना होता है. उनमें से अधिकांश को तो कुदरत के न्याय पर छोड़कर चैन से सो जाने में ही हमारी भलाई होती है.
- प्रकृति से किसी मनुष्य को इतनी सत्ता नहीं कि वह किसी दूसरे मनुष्य के स्थायी सुख का उपाय कर सके. उस हेतु तो हर मनुष्य को स्वयं ही सबकुछ

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

करना होता है.

- क्या कभी आपने शेर को शिकार करते सिखाने की, या बंदरों को उछलना सिखाने की; या फिर गाय को मांसाहार न खाने की सलाह देने वाली क्लासेज देखी हैं? तो फिर हमें क्या व क्यों सिखाया जा रहा है? कहीं हमारे धर्मगुरु व शास्त्र हमें जानवरों से भी गए-बीते तो नहीं समझ रहे?
- लक्ष्मी उल्लू पर बैठती है. पर यहां तो सब सुबह-शाम... एक-दूसरे को उल्लू बनाने में लगे हुए हैं. लक्ष्मी बैठे भी तो किस पर?
- अक्सर समस्याओं को सुलझाने की कोशिश में आप समस्याओं के निकट पहुंच जाते हैं. प्रायः समस्याएं आती व चली जाती हैं, उसमें आपके करने लायक कुछ नहीं होता है.
- किसी भी वस्तु को प्राप्त करने से पहले ही उस बाबत उत्साहित हो जाना हमेशा जरूरत से ज्यादा दुःखद परिणाम लेकर आता है. विश्वास करने हेतु ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं, अपने ही जीवन की चन्द घटनाओं पर नजर घुमा लें...समझ जाएंगे.
- इस ब्रह्मांड में सूर्य, पानी, हवा सब अपने कार्य में तो लगे हैं पर इनको आकांक्षा कोई नहीं. पाना कुछ नहीं. जब आप भी बिना किसी आकांक्षा के कार्यों में व्यस्त होना सीख जाएंगे, तो संतोष के परम-शिखर पर जा बैठेंगे.
- मनुष्य-जीवन...कुदरत के नियम, उसका अपना स्वभाव, उसकी बुद्धि, मन, हृदय, डीएनए तथा उसके अपने अनुभवों समेत की सात वस्तुओं से प्रभावित होता है. आठवीं कोई वस्तु या कारण उसे रत्तीभर प्रभावित नहीं करते.
- जीवन हो या व्यवसाय, आगे वही बढ़ता है जो ना सिर्फ जहां खड़ा है वहां दृढ़ता से खड़ा रहता है, बल्कि उसी से संतुष्ट भी रहता है.
- नास्तिक और आस्तिक में फर्क क्या है? नास्तिक वह है जो प्रकृति की महासत्ता को पहचानता नहीं; अतः स्वयं की बुद्धि से अर्जित ज्ञान के भरोसे जीवन संवारने में लगा हुआ है. आस्तिक वह है जो बुद्धि लगाता ही नहीं. वह स्वयं को उसके अर्पित कर देता है... प्रकृति उसे जैसा व जो बनाना चाहे, बना ले.
- जीवन की सारी मंजिलें आपके टाइम व स्पेस के कॉम्बीनेशन से स्वतः ही तय होती चली जाती हैं. यह हमारे जीवन में ना सिर्फ प्रकृति के हमारे सहायक होने का...बल्कि यही हमारे जीवन में ईश्वर की उपस्थिति का सबूत भी है.
- क्या आपको जीवन में प्रकृति के 'अचानक' का कभी कोई एहसास नहीं हुआ? गौर करो, आप कुछ याद करने की कोशिश करते हैं - याद नहीं आता; फिर अचानक याद आ जाता है. आप कुछ पाने के हजार प्रयत्न करते हैं पर नहीं पा पाते; ...फिर एक दिन जब उस पाने को भूल भी चुके होते हैं कि अचानक पा

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

लेते हैं. इससे सिद्ध हो तो रहा है कि सबकुछ सिर्फ आपके करने से नहीं हो रहा है.

- कहते हैं, अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान. ...बात भी सही है; पर बुद्धिमानों की इस दुनिया में सहज व सरल बनने को ज्यादा लोग तैयार ही कहां होते हैं?
- यहां ज्यादा-से-ज्यादा आप वह बन सकते हैं जो आपका स्वभाव आपको बनाता चला जाता है. हां, अन्य कुछ बनने के प्रयास में आप तहस-नहस अवश्य हो सकते हैं. अतः मेहरबानी कर बने वहां तक अपनी सायकोलोजी से छेड़छाड़ मत करें.
- हम पर आनेवाली अधिकांश मुसीबतों में हमारे करने लायक कुछ नहीं होता है. अक्सर वे दूसरों को परेशान करने आई होती हैं, हम तो घबराकर उसमें अपनी टांग फंसाने के कारण उलझ जाते हैं.
- जीवन में जो सफल हैं वो इसलिए नहीं कि वे उच्च शिक्षित हैं, बहुत ज्ञानी हैं या कर्मठ होकर कार्य करने वाले हैं. बल्कि उनकी सफलता का रहस्य यह है कि उन्होंने जीवन में सिर्फ अत्यावश्यक ज्ञान व जरूरत पुरता ही शिक्षा ग्रहण की है ...तथा कार्यों में भी वे यथायोग्य चेष्टा ही कर रहे हैं. ऐसा कर वे अपने बहुमूल्य समय व ऊर्जा की बचत करते हैं, और अंत में वही 'ऊर्जा' उन्हें सफलता के मार्ग पर लगाने में सहायक सिद्ध होती है.
- लगातार सुखी और सफल होते चले जाना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है.
- जब हमारे साथ घटने वाली छोटी-से-छोटी घटना भी हजारों वर्षों से घट रही लाखों घटनाओं का जोड़ है, तो ऐसे में आप बुद्धि से क्या गणित बिठाने में लगे हुए हैं? जो व्यक्ति इन घट रही घटनाओं के कारण बदलती परिस्थितियों के गणित को समझता है, वह निश्चित ही बिना कुछ किए जब जो चाहिए पा लेता है.
- शुभ-मुहूर्त कोई अलग से देखने की चीज नहीं. समय-संजोग व परिस्थिति बनी नहीं कि वह घड़ी शुभ हुई नहीं. सीधी बात है, मियां-बीबी राजी तो काहे को काजी?
- यहां पर बदलती परिस्थितियों के गणित को समझने वाला वर्तमान में संतुष्ट होकर जीता है. हां, उसकी निगाह बदलती परिस्थितियों पर अवश्य बनी रहती है. ...फलस्वरूप जिस क्षण उसे कुछ भी रेडी प्लैटर पर मिलता नजर आता है, वह उस ऑपोरच्युनिटी को तत्क्षण भुना लेता है.
- जो कार्य करने का मूड नहीं, वह आपके लिए अति-आवश्यक नहीं. क्योंकि बिना मूड के कार्य ढंग से यूं भी नहीं हो पाने वाला है. उससे बेहतर है कि अति-आवश्यक हो तो कुछ समय "मूड बनने का" इंतजार कर लो.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- जीवन में जो भी प्रयत्न कर के पाया जाएगा वह कभी भी सुख नहीं देगा. क्योंकि दु:ख की शुरुआत तो प्रयत्न करने से ही शुरू हो जाती है. जबकि जो कार्य आपसे आनंदपूर्वक होते हैं व होते चले जाते हैं, उससे आप जो भी हासिल करेंगे वे हमेशा ही परिणामकारी भी होंगे और सुखदायी भी.
- मनुष्य को अपने जीवन में ‘‘थर्ड फोर्स’’ की उपस्थिति का कई बार एहसास होता भी है, परंतु वह उसे ईश्वर व भाग्य से जोड़ने के कारण पहचानने में मात खा जाता है.
- कुदरत की रचना ऐसी है कि जीवन में जो भी हमारे पाने योग्य है या हमारे लिए सुखदायी है, वह हमें स्वतः ही मिल सकता है. लेकिन व्यर्थ व दु:खदायी वस्तुओं को पाने की दौड़ में हम उसे ही पाने से चूक जाते हैं.
- समय के अनुरूप आप अपने को ढालते चले जाएं व परिस्थितियों के साथ स्वयं को बहाते चले जाएं, देखिये आप क्या से क्या हो जाते हैं.
- समय, संजोग और परिस्थिति जिस इच्छा को सहायता करती मालूम पड़े, उसके साथ हो जाओ. ऑटोमेशन के जरिए जीवन बनाने का यह सबसे आसान तरीका है.
- हमारी असफलता का सबसे बड़ा कारण यह है कि हम इस जगत की संयुक्तता को नहीं देखते. परिणामस्वरूप हम समझते ही नहीं कि यहां ना तो किसी का जाती और ना ही किसी समूह-विशेष का हित साध पाना संभव है.
- लिखे हुए भाग्य की बात करना, असफलता छिपाने हेतु एक खूबसूरत बहाने से ज्यादा और कुछ नहीं है.
- इस अनंत ‘‘टाइम व स्पेस’’ के जगत में ‘आपने’ अपने छः फूट के शरीर का, वह भी सिर्फ 80 वर्ष के लिए आने का मकसद नहीं जाना, तो बाकी जो भी किया-करा-जाना; सब बेकार.
- जिन्होंने भी जीवन में बड़ी सफलता पायी है, उन्होंने जाने-अनजाने दृढ़तापूर्वक मन की चार में से कोई एक राह पकड़ी ही हुई है; आनंद, स्वभाव, सहजता या स्वतंत्रता. और जो पकड़ी है...फिर उसका हरहाल में लगातार साथ दिया है.
- प्रकृति एक संयुक्त हैपनिंग से चल रही है. मनुष्य भी उस हैपनिंग का ही एक हिस्सा है. परंतु अपनी बुद्धि के बल पर उसने अपनी एक अलग दुनिया बना ली है. और यही उसके पतन का प्रमुख कारण बनकर उभरा है.
- आप ‘‘आनंद और मस्ती’’ कारणों से न खोजें, बल्कि जिसमें आनंद आता हो... वह करते चले जाएं. अपना स्वार्थ छोड़ें, काम करने में मजा आ रहा है न...कर डालें.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- कर्म आप कोई भी करो, परंतु उनसे अनुभूति आनंद, मस्ती, शांति, सुकून वगैरह की ही होनी चाहिए, और वह भी स्थाई तौर पर.
- जैसे गुलाब का बीज बिना किसी शिक्षा या बिना किसी प्रयत्न के अपने समय पर गुलाब का पेड़ बन ही जाता है, वैसे ही मनुष्य का बीज भी अपनी राह चलते-चलते एक दिन भरापूरा वृक्ष बन ही जाता है.
- ‘कर्मवाद’ व ‘भाग्यवाद’ दो समानांतर लकीरें हैं...जो न मिली हैं - ना कभी मिल सकती हैं.
- मनुष्य के जीवन का फूल तभी खिला कहा जा सकता है, जब उसके भीतर से कोई क्रिएटिविटी बहे. जैसे गुलाब के पेड़ का उगना तभी सार्थक कहा जा सकता है, जब उसपर गुलाब के फूल उगे.
- जैसे बहते पानी को समुद्र रूपी मंजिल स्वतः ही मिल जाती है, वैसे ही बहते मनुष्य को भी उसकी मंजिल स्वतः ही मिल जाती है.
- हर मनुष्य अद्वितीय होता है. यानी उसके जैसा न पहले कोई हुआ होता है, और ना ही भविष्य में कोई होने वाला होता है. और इसीलिए हर मनुष्य बड़ा ही मूल्यवान है. हर एक के होने का अपना एक महत्व है, क्योंकि वह इकलौता और नवीन है.
- आपका मार्ग भी आपके भीतर की सायकोलोजी से निकलना है, और आपकी मंजिल यानी आपकी क्रिएटिविटी भी वहीं से बहनी है.
- हर मनुष्य के जीवन-वृक्ष का फलना, फूलना और बढ़ना एक हैपनिंग है. और हर मनुष्यरूपी पेड़ से क्रिएटिविटी के फूल उग आना इस पूरी प्रक्रिया का सबसे खूबसूरत पहलू है.
- एक मनुष्य होने के नाते आपके जीवन का कोई एक महान मकसद होता ही है. मकसद प्राप्त कर लोगे तो राजा की तरह मरोगे, वरना भिखारी की मौत तो अपने कर्मों से अधिकांश लोगों ने लिख ही दी है.
- जैसे कोई फूल बिना खुशबू का नहीं हो सकता, वैसे ही कोई मनुष्य बिना किसी क्रिएटिव गुण के नहीं हो सकता.
- बदलाहट की तमाम चाहें तिरोहित हो जाने का नाम संतोष है.
- एक खजाना ऐसा भी है जो व्यय से बढ़ता है. ऐसे खजाने का खोजी जल्द ही सुख और सफलता पा लेता है.
- सबकुछ प्रकृति तय करती है. वहां से किसी को भी कुछ भी करना आ पड़ सकता है. अत: बात-बात पर ‘ना’ कहने वाला या ‘जिद’ करने वाला, जीवन में बहुत कुछ ज्यादा नहीं कर सकता है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- वर्तमान में जो कुछ भी साधन व संभावनाएं उपलब्ध हैं, उनके आधार पर आप जो कुछ भी भविष्य की योजना बनाते हैं, वह भी वर्तमान ही है. ...बिना साधन या संभावना के हवा में भविष्य की प्लानिंग करने को वर्तमान से हटना कहते हैं.
- वर्तमान में उपलब्ध तमाम संसाधनों का उपयोग कर किसी भविष्य की योजना को स्वरूप देना, वर्तमान का ही विस्तार कहा जाता है.
- वर्तमान के कई स्वरूप हैं. वर्तमान सिर्फ इसी क्षण की बात नहीं है. आप वर्तमान के इस क्षण को महीनों व सालों तक खींच सकते हो. जितने समय के लिए आपकी चेतना एक ही कार्य में लगी हो, वह पूरा समय आपके लिए 'वर्तमान' ही हो जाता है.
- आप रिंग-मास्टरों के इशारों पर नाचने की बजाए अपनी स्वयं की चाल क्यों नहीं पकड़ लेते हैं?
- मैं तय करूंगा, यह अज्ञान है. परमात्मा तय करे, यह ज्ञान है.
- अपनी सुनो, कम मरोगे. दूसरों की सुनोगे तो बुरी तरह फंस जाओगे. ...और परमात्मा की सुनोगे तो तर जाओगे.
- कुदरत की चल रही इस महान लीला में इच्छा को कहीं कोई जगह ही नहीं है. क्योंकि यह पूरी लीला ऑटोमैटिक चल रही है.
- प्रकृति की बहती धारा को आप रोक नहीं सकते. ना ही आप उसकी धारा को बदल सकते हैं. आप तो ज्यादा-से-ज्यादा उसके साथ बह सकते हैं. और सबके लिए अपनी-अपनी मंजिल पर पहुंचने का यही एक उपाय है.
- हमको यह सिखाया जाता है कि "तुम कुछ करोगे तो कुछ होगा". लेकिन वास्तव में 'करने' से 'होने' का कोई विशेष ताल्लुक नहीं है. अधिकांश चीजें अपनेआप होती है. यह बात समझ जाओगे तो महान कर्म करने की कला सीख जाओगे.
- करने से चीजें 'हो' नहीं रही हैं, कई ऐसी चीजें हैं जो अपने-आप हो रही हैं. थोड़ा गौर करो! गौर करने पर धीरे-धीरे आपको पता चल जाएगा कि एक-दो नहीं, निन्यान्वे प्रतिशत चीजें यहां अपने-आप हो रही हैं. और तब आप आश्चर्य में डूब जाएंगे कि इतने समय से मैं कर क्या रहा हूँ?
- जब आपको तहेदिल से यह एहसास हो जाए कि "प्रकृति की मरजी के बगैर पत्ता भी नहीं हिलता" तो ही समझना कि आप इंटेलिजेन्ट हो गए हैं. और यह बुद्धि से समझने की बात नहीं है. इसे आपकी "इनर सिस्टम" ही समझ सकती है.
- मनुष्य राजा है, उसे कुछ नहीं करना है. एक उसी के लिए तो इतना बड़ा ब्रह्मांड अस्तित्व में है. प्रकृति ने तो उसे सब ऑटोमैटिक देने की व्यवस्था तक कर रखी

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

है. ...फिर भी आप इच्छा करने से और प्रयत्न करने से बाज नहीं आते हैं, तो इसमें प्रकृति क्या करे?

- अभ्यास की जिद व प्रयत्न की आदत ने मनुष्य को बर्बाद कर दिया है. इस चक्कर में वह कार्यों को नेचरली निपटाने की आर्ट ही भूल गया है. ...जबकि सभी महान लोग यह आर्ट जानते हैं.
- जो है उसको मिटाया नहीं जा सकता. और जो नहीं है उसको पैदा नहीं किया जा सकता. यह प्रकृति का अटल नियम है. फिर भी मनुष्य बहुत कुछ कर रहा है, यही आश्चर्य है.
- कितना ही महत्वपूर्ण लगे, कितना ही आवश्यक लगे, कितना ही महान और पवित्र लगे; अकारण और बिना बात के नया कुछ भी पकड़ना मत. क्योंकि बिना आवश्यकता के पकड़ा हर नया एक भटकन देगा. सो ध्यान अपनी नेचरल इंटेलिजेन्स बचाए रखने पर दो जो प्रकृति ने आपको दी थी. वह सलामत रहेगी तो प्रकृति से ट्यून्ड रहोगे. और ट्यून्ड रहोगे तो बाकी सब अपनेआप हो जाएगा.
- इस प्रकृति में किसी की जिद नहीं चल सकती. क्योंकि सबकुछ इस कदर प्रकृति के नियमों के अधीन चल रहा है कि अन्यथा कुछ करना 'हितकर' नहीं है. तभी तो कहते हैं कि जिद से बड़ा कोई अहंकार नहीं है.
- नियम बने हुए हैं; न उन्हें पूजने की जरूरत है और न उनसे डरने की जरूरत है. ...बल्कि उनको देखने की जरूरत है, उनमें झांकने की जरूरत है, उन्हें पहचानने की जरूरत है और उन्हें अपने भीतर उतारने की जरूरत है. ताकि कोई चूक न हो व चालान न कटे. ...बस.
- इस प्रकृति की रचना ही कुछ ऐसी है कि उसके चलाए हर तीर का वार हमेशा दो-तरफा होता है. अब एक साइड का तीर है कि मनुष्य स्वतंत्र हैं, तो इसका दूसरा अर्थ यह भी है ही कि इस स्वतंत्रता का उपयोग करने वाले के साथ जो कुछ भी घटता है... उसकी जवाबदारी सिर्फ उसकी खुद की है. हां, स्वतंत्रता का उपयोग न करो और प्रकृति के साथ बहो, तो जवाबदारी प्रकृति की हो जाती है.
- प्रकृति में कहीं कोई कर्ता नहीं है. वहां सब अपनेआप हो रहा है. वैसे ही जिस मनुष्य के जीवन में सब अपनेआप घटना शुरू हो जाता है, वह रातोंरात कहां-से-कहां पहुंच जाता है.
- कुदरत जो सीखने का मौका दे सीख लेना चाहिए, पता नहीं कब क्या सीखा हुआ... कब कहां काम आ जाए? वैसे तो कुदरत की सिखाई हर चीज जीवन में कभी-न-कभी काम आती ही है. यदि जीवन में कुछ सीखा काम नहीं आ रहा है, तो वह वे चीजें हैं जो मनुष्य अपने अहंकार को बढ़ाने हेतु सीख रहा है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- हरेक को अपनी योग्यतानुसार सबकुछ पहुंचाना ही प्रकृति का काम है. सो झूठी आशाएं खोजते फिरने की बजाए सीधे-सीधे अपनी योग्यता बढ़ाने पर ध्यान दो.
- योग्य से दाना छrनना व अयोग्य को दाना खिलाना, यह ''परमात्मीय न्याय व्यवस्था'' के बीच में आना है. और इसी एक गलती की मनुष्य को सबसे ज्यादा मार पड़ रही है.
- इस संसार में प्रकृति के, समय के, भाग्य के और सायकोलोजी के नियमों को तोड़कर कोई भी मनुष्य पलभर को भी सुखी नहीं रह सकता है.
- आपके जीवन में अपनी मर्जी चलाने की बात तब करो जब आप अपनी मर्जी से पैदा हुए हों या अपनी मर्जी से मरनेवाले हो. जब आपके जन्म और मृत्यु पर ही आपकी मर्जी नहीं चल रही, तो बीच में आपकी मर्जी कैसे चलेगी?
- आपको हजार काम छोड़... आपके व परम-सत्ता के बीच संवाद स्थापित करना है. संवाद स्थापित होते ही आपके सारे भ्रम टूट जाएंगे. और जिसको कोई 'भ्रम' ही न रहा, उसे सफलता के शिखर छूने से कौन रोक सकता है?
- आप अपने मन के खिलाफ कर्म कब करते हैं? ...फल की आशा में. सोचो यदि फल निगाह में न हो तो आपको अपने मन-मुताबिक जीने से कोई रोक सकता है? सोचो यह भी कि मन-मुताबिक जीने से बढ़कर क्या कोई 'फल' हो सकता है?
- तमाम प्रकार के संघर्ष को उसी तरह टालें, जैसे पानी टालता है. आप तो पानी की ही तरह जब भी मौका मिले, बहने पर ध्यान दो. क्योंकि जीवन हो या पानी, दोनों बहते ही शोभते हैं.
- परमात्मा ने स्वतंत्रता तो दी है, परंतु इतना-सा और सीख जाओ कि उसका उपयोग कब करना है और कब नहीं करना है? बस इस एक समझ से जीवन की सारी समस्याएं आज, अभी और यहीं खत्म हो जाएगी.
- कोई भी ऐसा कर्म, जिसका फल आप हाथोंहाथ भोगते हैं, वो पाप नहीं. और कोई भी ऐसा कर्म, जिसका फल पीछे से भोगते हैं, वह पाप है. यह एक बात समझ जाओगे तो जीवन का पूरा खेल ही समझ जाओगे.
- जीवन में ना तो किसी भी चीज की मांग करना और ना ही किसी चीज का तिरस्कार करना. यह एक बात अपना लो, जीवन से दु:ख हमेशा के लिए तिरोहित हो जाएंगे.
- आप 'बदलाहट' की जितनी चाहे करोगे, उतना बर्बादी की तरफ जाओगे. जितना स्वीकारते चले जाओगे, उतने आबाद होते चले जाओगे.
- जितना साधोगे, उतना बिगड़ेगा. क्योंकि हर साधना, परमात्मा की मरजी के खिलाफ जाना है.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- अपना रोल निभाने हेतु जिन-जिन सामान का आप उपयोग करते हैं, वह सारा सामान आपके लिए साक्षात् परमात्मा है. परमात्मा की ही तरह, उन साधनों की भी कद्र करो.
- जो अपने को मिले रोल से भागेगा, वो बर्बाद हो जाएगा.
- संकल्प का अर्थ तो इतना ही है कि परमात्मा तू जो कहेगा, वह मैं नहीं करूंगा. मैं वही करूंगा जो मेरी मरजी है.
- यदि आप किसी भी बाहरी फोर्स से प्रभावित होकर कर्म कर रहे हैं या अपने कर्मों को रोक रहे हैं, तो ऐसा करना तुरंत बंद कर दीजिए. ऐसे तमाम कर्मों के अंत में दुष्परिणाम ही आएंगे.
- आप तो बस एक बात तय कर लें कि आप इच्छाएं पूरी करना चाहते हैं, या दबाना? बाकी सब स्वत: ही सेट हो जाएगा.
- बाहर का जगत हो या आपके भीतर की क्रियाएं, सबके साथ छेड़खानी सोच-समझकर ही करने में भलाई है.
- मन में भी हो और वही सामने राजी-खुशी उपलब्ध भी हो, तो फिर बात समाप्त. फिर उससे भागने का कोई कारण नहीं.
- देखने और सुनने में दिक्कत नहीं है, वह तो जरूरी है. दिक्कत यह है कि आप अपने जीवन की जरूरियात से कहीं ज्यादा देखने और सुनने में लगे हुए हैं.
- हर प्रकार का इन्टरफियर जीवन की बहती धारा में बाधा पैदा कर रहा है.
- परमात्मा द्वारा मनुष्य के लिए एक ही चीज पूर्व निर्धारित है, और वो है ''कर्म करना''.
- इतनी जानकारियां हासिल करके किसने क्या पा लिया और किसको क्या मिल गया? सो चुपचाप ''टू द पॉईंट'' जीते क्यों नहीं हो?
- यदि आपके वर्तमान कर्म में परमात्मा नहीं झलक रहा है तो मान लो कि आपके लिए वो अस्तित्व में ही नहीं है.
- कष्ट पाकर कुछ भी पाने की तमन्ना करते हैं तो आपका भगवान से फासला बढ़ जाता है. इस सत्य से अनजान लोग 'परमात्मा' पाने हेतु भी कष्ट उठाने से बाज नहीं आते हैं.
- आप मत करो, जल्द ही थक जाओगे. परमात्मा को करने दो, उसे अनंत वर्षों का ब्रह्मांड चलाने का अनुभव है.
- अगर कोई मस्ती में है, आनंद में है... तो मेहरबानी करके उसे मत छेड़ना, यह सबसे ज्यादा खतरनाक कर्म है.
- हर व्यक्ति के पास दो जीवन है- एक उसके स्वयं का, जिसके लिए उसको परमात्मा को भी जवाब नहीं देना है. और दूसरा परमात्मा का... जहां उसका

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

हुकम होते ही उसे 'निमित्त' बनने हेतु हाजिर हो जाना है.

- जीवन का नियम यह कहता है कि मनुष्य अकेला आता है और अकेला ही जाता है. इस नियम को जब-जब आप तोड़ेंगे, तब-तब आपको कष्ट होगा...होगा और होगा.
- मनुष्य अकेला आया है और अकेला जाएगा. इस सफर के दौरान जिसका जितना साथ मिल जाए, काफी है.
- मनुष्य की असली पूंजी धन या पद नहीं, उसके आसपास वाले हैं. जिसके आसपास कोई नकारात्मक व्यक्ति न हो, उससे बड़ा कोई भाग्यशाली नहीं.
- पैदा होने के बाद आपने जो कुछ भी देखा, सुना और पढ़ा, क्या वो ही आप हैं? नहीं, इसके अलावा भी आप ''बहुत कुछ'' हैं. और यह ''बहुत कुछ'' आया कहां से? निश्चित ही पिछले जन्म से! लो, पुनर्जन्म सिद्ध हो तो गया.
- आप हैं, और आपका परमात्मा है; अन्य कोई जीवित ही नहीं है. अन्य तो परमात्मा के भेजे वो निमित हैं जो आपको जीवन की राह दिखाने हेतु आ और जा रहे हैं.
- अपनी प्रवृत्तियों व निवृत्तियों के बीच में मत आओ, उन्हें बस देखते रहो... देखते रहो; आपका उद्धार हो जाएगा.
- जीवनभर युद्ध करके विशाल साम्राज्य बनाने के बावजूद भी सिकंदर के हाथ मरते वक्त खाली ही थे. सो बिना संघर्ष जितना मिलता है, उसमें चैन से जी लो.
- आपको अपने टाइम यानी 'मन' में आए हर निर्देश का पालन करना चाहिए.
- जो मनुष्य अपने मन तक की रक्षा नहीं कर सकता, वो जीवन में कभी कुछ नहीं कर सकता.
- परमात्मा को जो भेजना हो भेजे. आप तैयार रहें. क्योंकि उसका भेजा करने में ही भलाई है. लेकिन वो भेजेगा कब? जब आपकी अपनी कोई जिद नहीं होगी. जब आप कहेंगे कि ''जैसी तेरी मरजी''.
- सही समय पर सही जगह होना सफलता का सबसे बड़ा सार-सूत्र है.
- समय पर मारा एक परफेक्ट शॉट मनुष्य के जीवन को आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचा देता है.
- उतना ही जानो और उतना ही करो, जितना करना या जानना अति-आवश्यक हो जाए. इस एक आदत से सफलता के शिखर भी छूते चले जाओगे और जीने हेतु समय भी निकाल पाओगे.
- यह जो... कुछ करने और कुछ न करने की कोशिश कर रहे हो, वह बंद कर दो. उसके बजाए जो हो रहा है, उसे होने दो. आपके जीवन में जादू हो जाएगा.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- मनुष्य अक्सर दूसरों की जी-हुजूरी में अपनी प्रतिभा का गला घोंट देता है. हरेक को इससे सावधान रहने की आवश्यकता है.
- आप आपका सफर वहां से शुरू नहीं करते हैं जहां आप हैं, इसीलिए जीवन का हर सफर आपको लंबा जान पड़ता है. और लंबे सफर पे निकले ऐसे राही कभी मंजिल तक नहीं पहुंच पाते हैं.
- चारों ओर ''प्रवृत्ति और निवृत्ति'' के बाबत ज्ञान दिए जा रहे हैं. कहा जा रहा है कि यह-यह प्रवृत नहीं होना चाहिए, पाप है. इस-इस को निवृत्त करो, यह बुरी है. और यह सबका सब अज्ञान है. सत्य तो यह है कि किसी भी बात की प्रवृत्ति या निवृत्ति की सत्ता ही मनुष्य के पास नहीं है. हर चीज यहां अपने समय पर प्रवृत्त हो रही है तथा अपने समय पर ही निवृत्त हो रही है. सो अपनी प्रवृत्तियों व निवृत्तियों के साथ बहने वाला सबकुछ अपने समय पर पा लेता है, यह नियम है.
- हमारी सारी शिक्षाएं फिर वह हमें समाज से मिल रही हो या धर्म से; प्रतिस्पर्धा को उकसाती हैं. वे यह भूल ही जाती हैं कि हम नवीन और इकलौते हैं. ऐसे में भला यहां कौन किससे प्रतिस्पर्धा करे?
- मनुष्य उस इंटेलिजेन्स का मालिक है जहां से वह ''रिवर्स कैल्क्यूलेशन'' करके कर्म के इच्छित परिणाम ला सकता है.
- मनुष्य का ज्ञानी होना अति सामान्य घटना है. उसका संसार की ऊंचाइयों पर बैठना इतनी सामान्य घटना है कि उसके लिए उसको कुछ ज्यादा करने की जरूरत ही नहीं है. ...सिर्फ उसे अपने आसपास घट रही सहज घटनाओं पर विश्वास करना है, और उनके साथ बहते जाना है. यह भाग्य का एक परम सिद्धांत है.
- ऐसा नहीं है कि आपको 'मौके' नहीं मिलते, लेकिन चूंकि आप परिस्थितियों के अनुसार 'मॉल्ड' होने की बजाए बात-बात पर सख्त हो जाते हैं; इसलिए पचासों मौके मिलने के बावजूद अपनी अकड़ से ही टूट-फूटकर चूर हो जाते हैं.
- आप अपनी जमीन पर खड़े रहो; आपकी जमीन आपका जीवन बनाएगी. यहां-वहां दौड़ते रहे तो दूसरे की जमीन पर पहुंच जाओगे. और दूसरे की जमीन पर की खेती दूसरे के काम आएगी, आपके नहीं...
- क्रिएशन मनुष्य की सत्ता नहीं, क्योंकि हर क्रिएशन परमात्मा के यहां से आता है. और बिना कुछ क्रिएटिव किए महान बना नहीं जा सकता है. ऐसे में आपको ना सिर्फ परमात्मा के लिए जीना चाहिए, बल्कि निरंतर उसके संपर्क में भी रहना चाहिए.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

- जब आप बेकार के मचाए जा रहे उपद्रवों से निजात पा लेंगे तो आपको अपना 'रोल' दिखाई देने लगेगा. और मनुष्य महान कुदरत का दिया रोल निभाकर ही हो सकता है.
- हर मनुष्य का अपना जीवन होता है, उसके अपने मकसद होते हैं; और उन्हें पूरे करने के भी उसके अपने तरीके व रास्ते होते हैं. और उसी से वो सफलता पा सकता है. कहने का तात्पर्य यह कि जो भी दूसरे की राह पकड़ेगा, वह भटकेगा...भटकेगा और भटकेगा.
- संघर्ष करके कुछ पाने की कोशिश सिवाय मूर्खता के और कुछ नहीं है. सुख हो या सफलता, दोनों स्मूथली निपटने वाले कार्यों से ही पाए जा सकते हैं.
- जिन्होंने भी ऐतिहासिक सफलता पाई हैं उन्होंने अपनी प्रतिभा को, अपनी मस्ती हेतु ...अपने पे ही निछावर किया है.
- आप में प्रतिभा है तो डूब जाओ, उसी का आनंद लो, उसी में झूमो... सम्मान व समृद्धि का खयाल छोड़ो... वह तो अपनी प्रतिभा की मस्ती में डूबने मात्र-से पीछे-पीछे चले ही आएंगे.
- सीधे शब्दों में समझें तो गीता कारावास में पैदा हुए कृष्ण को 'जय श्रीकृष्ण' तक कैसे पहुंचाना, उसकी दास्तान है. तभी तो गीता को ''सफलता का सार-सूत्र'' कहा जाता है.
- अगर दुर्योधन ने महाभारत का युद्ध हारा तो एकमात्र इस कारण से कि उसने पांडवों की सेना में 'कृष्ण' को नहीं गिना. आप यह गलती मत करना. किसी भी युद्ध में उतरने से पूर्व सामनेवाले के भोलपन का ठीक-ठीक कैल्क्यूलेशन लगा ही लेना. क्योंकि प्रकृति जिसके साथ हो, वह अपने से कई गुना शक्तिशालियों पर वैसे ही भारी पड़ जाता है.
- मनुष्य को ना तो कोई कर्म करना चाहिए और ना ही उसे कोई कर्म रोकना ही चाहिए. कर्म उसके भीतर से बहना चाहिए.
- द्वन्द्व वो फोर्स है जो आपको या तो कुछ करने को उकसाती है या फिर कुछ करने से रोकती है इसलिए आपमें से कर्म बहते नहीं है. जबकि कर्मों को हरहाल में सिर्फ बहना चाहिए.
- कार्यों के परिणाम क्यों नहीं आ रहे हैं? क्योंकि 'आप' भी है और 'क्रिया' भी है. आप हट जाए व सिर्फ क्रिया रह जाए, तो चमत्कार होने शुरू हो जाएं.
- मनुष्य को फॉलो अपनी चेतना को करना है. और वह एक उसको छोड़ जमानेभर को फॉलो करने में लगा पड़ा है.
- छोटे नाले जो होते हैं वे पहली बारिश के साथ ही छलक जाते हैं. यही हाल छोटी मानसिकता के मनुष्यों का भी है. वे भी साधारण सी सफलता से इतरा

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

जाते हैं, इसीलिए कुदरत उन्हें वहीं रोकने को बाध्य हो जाती है.

- जो द्रष्टा नहीं है, वे चारों ओर बड़ा उपद्रव मचाए हुए हैं. उनके उपद्रवों के कारण ही चारों ओर परिस्थितियां बन और बिगड़ रही है. 'द्रष्टा' चूंकि इन उपद्रवों का हिस्सा नहीं होता है, सो वह इन बनती-बिगड़ती परिस्थितियों का फायदा उठा लेता है. सभी सामान्य लोग ऐसे ही महानता को उपलब्ध हुए हैं.
- आप जो कर्म कर रहे हैं, यदि उसके फल स्वरूप आपको आनंद नहीं मिल रहा है, तो आपका वह कर्म करना व्यर्थ गया.
- सफलता एक कोरा शब्द है. इसे किसी एक पैमाने में नहीं बांधा जा सकता है. ...फिर भी कहा जा सकता है कि जिसने अपने आने का मकसद पा लिया, वह सफल हो गया.
- जीवन बनाने हेतु एक निश्चय काफी है. अनेक निश्चय में जीनेवाले को खुद पता नहीं चल पाता है कि वह धार्मिक होना चाह रहा है या व्यवसायी? और अंत में कुछ नहीं हो पाता है.
- राह और मंजिल अलग नहीं है, अगर राह पर कोई चीज नहीं मिली तो वो कहीं पर भी कभी भी नहीं मिलेगी.
- सारे महान लोगों के जीवन पढ़ लीजिए, उन्होंने अपने दायरे के बाहर झांका ही नहीं है.
- गीता एक ही बात सिखाती है कि कारागृह में पैदा होने के बाद भी द्वारकाधीश कैसे बना जा सकता है.
- कई लोग शुभ-मुहूर्त के चक्कर में समय-संजोग व परिस्थिति बन जाने के बावजूद 'कर्म' को टालते हैं, वहीं अन्य कई संजोग न बनने के बावजूद अच्छे मुहूर्त के चक्कर में कर्म कर डालते हैं. यह सब अपनी मौत मरने के ''गालीबे-आइडिआ'' अच्छे हैं. भाग्य के रास्ते बढ़ने वाले ऐसा नहीं करते हैं.
- आपके करने से कुछ हो नहीं रहा है. सो अपनेआप पर इतना गर्व मत करो कि मैं नहीं करूंगा तो क्या होगा?
- मन की मस्ती से चलते राही 'सफलता' के कई बड़े मुकाम स्वतः ही हासिल कर लेते हैं. ऐसे मस्ती से चलते राही को ना तो मंजिल की चिंता करनी पड़ती है और ना ही बड़ी-बड़ी प्लानिंग करनी पड़ती है.
- जीवन में जिस किसी सफलता से आपको अहंकार पकड़ ले...समझ लेना कि यह आपके बढ़ने की लिमिट आ गयी. अब आप यहां से सिर्फ नीचे जा सकते हैं.
- जो 'नाम' और 'दाम' के लिए काम करते हैं वे जीवन में कहीं नहीं पहुंच पाते. ...पर जो अपनी ही धुन में सिर्फ काम के लिए 'काम' करते हैं, वे ''नाम और

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

दाम" दोनों पा जाते हैं.

- मैं मूर्ख हूँ... सो, पाने-खोने का हिसाब लगाऊं ही क्यों? बस जिसने इतना जान लिया, उसने जग जीत लिया.
- अगर कार्य का कारण मालूम है तो यह आपकी अपनी आवाज है. परिणाम निगाह में नहीं है और फिर भी आप बढ़े चले जा रहे हैं तो यह परमात्मा की आवाज है. कहने का तात्पर्य यह कि फल की चिंता मत करो. अगर फल निगाह में है तो फिर समझ लो कि आप गलत दिशा में जा रहे हैं.
- परमात्मा की आवाज सुने बगैर आपका उद्धार होनेवाला नहीं है, लेकिन दिक्कत यह है कि उसकी आवाज आप तभी सुन सकते हैं जब अपनी आवाज बंद कर देंगे. तो समस्या क्या है? अपने मचाए कोलाहल पर नियंत्रण पा लीजिए; परमात्मा की आवाज बाहर आ जाएगी.
- आपके जीवन में जो कुछ भी सुख है, वह कुछ-न-कुछ मात्रा में परमात्मा के निर्देश सुनने का परिणाम है. फिर चाहे आपको मालूम हो... या न हो. बस अपने उस अनुभव को पकड़ लो व बढ़ाते चले जाओ.
- लिखे-लिखाए भाग्य का नाम लेकर भले ही आप अपनी नाकामियों को डिफेन्ड करें, कोई ऐतराज नहीं. लेकिन कम-से-कम जो महान लोग हैं उन्हें भाग्यशाली कहकर उनसे उनकी क्रेडिट तो ना छीनें.
- कुदरत की इस विशाल चल रही लीला में बेवजह की दखलंदाजियां करना बंद कर दो. विश्वास जानो कि फिर कुदरत आपके मन की गड़बड़ भी ठीक कर देगी और आपके जीवन की गड़बड़ भी ठीक कर देगी.
- मनुष्य की प्रतिभा सिर्फ उसकी रुचि के क्षेत्र में ही पूरी तरह से निखरकर सामने आती है.
- परमात्मा की पुकार कभी भी आ सकती है, और वह कुछ भी करने को कह सकती है. आपको तो बस उसकी हर पुकार सुनने हेतु तैयार रहना है.
- आपकी दृष्टि साफ होगी तो आप जो कुछ भी देखेंगे, उससे भीतर सकारात्मक परिवर्तन भी आएगा और उससे आपको आगे के जीवन की राह भी मिलेगी.
- परमात्मा सब संभाल कर भी रखेगा, सारी अनुकूल परिस्थितियां भी बनाएगा, पर कब? जब आप उसके दिए हुए अस्तित्व का सम्मान करेंगे.
- जो किसी चीज को ठुकरा रहा है... वो भी परमात्मा से दूर है, और जो किसी भोग का इंतजार कर रहा है वो भी परमात्मा से दूर है. परमात्मा तक तो लगातार स्वीकारते चले जानेवाला ही पहुंच पाता है.
- दूसरे का कुछ अच्छा करने से पहले मनुष्य को आत्मिक सुख व अहंकार के सुख का फर्क पता होना जरूरी है. यदि दूसरे के अहंकार के साथ छेड़छाड़ की

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

तो उसके साथ-साथ आप भी बुरी तरह फंस जाएंगे.

- समय के पहले सीखेंगे तो आप समय पर कभी नहीं सीख पाएंगे. और काम वही आएगा, जो आप समय पर सीखे होंगे.
- अपना भला चाहते हो... तो चुपचाप अपनी "मूल प्रकृति" में पड़े रहो. यहां-वहां झांकते फिरोगे तो बुरी तरह भटक जाओगे.

भाग्य में स्थित होने के सरल उपाय

भाग्य का सारा खेल एक ही चीज पर आकर अटक जाता है कि 'कर्म' करने का निर्णय कौन करे? मनुष्य स्वयं, यानी उसकी बुद्धि...या फिर मन की गहराइयों में स्थित "सर्व हिताय का ऑटोमेशन"...? दुर्भाग्य से अधिकांश शिक्षा बुद्धि से कर्म करने को उकसाने वाली हैं. यानी अपने हित की सोचो व उस आधार पर निर्णय करो. और सभी दिन-रात अपने हित साधने में लगे हुए हैं. परंतु चूंकि यह शिक्षा बुनियादी तौरपर गलत है, इसलिए किसी का जीवन बन नहीं रहा. और ये शिक्षाएं मनुष्य के मस्तिष्क पर इस कदर हावी हो चुकी हैं कि अब तो वह बिना अपने हित की सोचे धर्म तक नहीं कर सकता है. खैर, चाहे जो हो... मनुष्य को सावधान होने की आवश्यकता है. उसे यह समझना ही रहा कि भाग्य के महान ऑटोमेशन से जुड़े बगैर जीवन में कुछ बहुत ज्यादा होनेवाला नहीं है. और उसके लिए उसे स्वयं निर्णय करने की जिद को कमजोर करना जरूरी है. क्योंकि उसकी निर्णय करने की जिद कमजोर होए तो मन की गहराइयों में स्थित सर्व के ऑटोमेशन से निर्णय होने शुरू हों. और जबतक वे शुरू नहीं होते, यहां किसी का उद्धार होने वाला नहीं. बस एकबार निर्णय सर्व के ऑटोमेशन से होने शुरू हो गए, फिर आपकी तमाम चिंताएं समाप्त. फिर ऊपर-नीचे, आगे-पीछे होते-होते व सफलता-असफलता का स्वाद चखते-चखते आप अपनी मंजिल की ओर अग्रेसर होते चले जाएंगे. जो आपके हित का है, वह धीरे-धीरेकर एकत्रित होता चला जाएगा... और जो आपके हित का नहीं है, वह हटता चला जाएगा. वहीं यह भी तय है कि भाग्य की राह पर चलते-चलते आपको जीवन की हसीनियत भी महसूस होगी. सो अब सीधे अपनी निर्णय क्षमता व स्वार्थवृत्ति कमजोर करने के कई सरल उपायों पर चर्चा करते हैं.

(A) भेद व पक्षपात मिटाओ

एक बात समझ लो कि सर्व यानी सब. और जब सब तो अलग से कोई नहीं. सो सबसे पहले हो सके उतने भेद व पक्षपात कम करो. फिर वो भेद चाहे आपने धर्म के नाम पर पाल रखें हो या समाज के. पक्षपात आप मित्रों को लेकर कर रहे हो या परिवारवालों को लेकर, कोई फर्क नहीं पड़ता है. आपको अपने भेद व पक्षपात कम करने ही होंगे. आपको

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अपने से पक्षपात करना भी छोड़ना ही होगा. आपको अपने व दूसरों में भेद करना भी कम करना ही होगा. अपनी खुशी ज्यादा महत्वपूर्ण व दूसरे की नहीं, यह भेद "भाग्य के ऑटोमेशन" में नहीं चल सकता है. खैर, कुल-मिलाकर भेदभाव व पक्षपात कमजोर होते ही आप भाग्य के ऑटोमेशन से कनेक्ट होना शुरू जो जाएंगे.

(B) आनंद की राह पकड़ लो

आनंद की राह पकड़ लेना, अपने भाग्य से जुड़ने का सबसे सरलतम उपाय है. सो एक बात तय कर लो कि बने वहां तक उतना ही सीखोगे जो सीखने में आनंद आ रहा है, और वही करोगे जो करने में आनंद आ रहा है. यानी कि आपके सारे कार्य करने का एकमात्र कारण "आनंद की प्राप्ति" हो जाना चाहिए. बड़ी मजबूरियों में फंस जाओ तो ठीक है, पर बने वहां तक "आनंद की प्राप्ति" को अपना मूल मंत्र बना लो. फिर खोने-पाने का हिसाब लगाओ ही मत. यूं भी जब निर्णय आपके आनंद को करना है तो पाने-खोने का हिसाब आपको वैसे भी नहीं लगाना है. सारा 'पाना-खोना' आपके आनंद की राह पकड़ने से स्वत: तय होता चला जाएगा. एक बात तय जानो कि धीरे-धीरेकर खोटा सब खोता चला जाएगा, और सारा श्रेष्ठ मिलता चला जाएगा. क्योंकि आनंद की राह पकड़ते ही निर्णय भाग्य के ऑटोमेशन से होने शुरू हो जाएंगे. ...और फिर यूं भी जीवन आनंद से निकल जाए तो उससे बड़ी अन्य कुछ प्राप्ति वैसे भी नहीं हो सकती है. हालांकि यह पढ़ने में लग रहा है, इतना आसान नहीं है. कंडीशनिंग पुरानी है, सो जीवन की मजबूरियां, दूसरों के दबाव और आपकी स्वार्थवृत्ति इसके आड़े आएगी. पर जो फिर भी आनंद की राह पर डटे रहेंगे, वे जल्द ही ऑटोमेशन से एक हो जाएंगे. अनेक महान लोग 'आनंद' की इस लाइन को पकड़कर ही 'महान' हुए हैं.

(C) ध्यान को पकड़ लो

आप चाहो तो ध्यान की लाइन दृढ़तापूर्वक पकड़ लो. वही सीखेंगे जो ध्यानपूर्वक सीख पाते हैं. वही करेंगे जो ध्यानपूर्वक कर पाते हैं. लेकिन इसमें भी आपकी स्वार्थवृत्ति व दूसरों के दबाव आड़े आएंगे ही. ध्यान लगे न लगे, जीवन की मजबूरी में आपको कई कार्य करने आवश्यक नजर आएंगे ही. लेकिन यह सारी अड़चनें शुरुआती होगी. और यूं भी तभी तो कहते हैं कि परमात्मा की राह पकड़ना और उसपर भरोसा करना आसान नहीं, क्योंकि आप नजदीक के नुकसान की सोचते हैं और आपके महान भाग्य की निगाह आपके दूर के फायदे पर लगी होती है, लेकिन जिन्होंने भी हिम्मत करके ध्यान की लाइन पकड़ी है, वे सब बिना अपवाद के महान हो गए हैं. गालिब और एडीसन इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

(D) बिग पॉझिटिव

जब सोचो, तब ज्यादा-से-ज्यादा लोगों की खुशी की सोचो. जब सोचो तब सबके नफे की सोचो. सबके उद्धार और सबके हित की सोचो. अपने व दूसरे में रत्तीभर भेद मत मानो. आपके एक के नुकसान से दूसरे पचासों को फायदा होता है, तो वह नुकसान कर डालो. बस यह बिग पॉझिटिव की राह पकड़ लोगे तो जल्द ही भाग्य के ऑटोमेशन के साथ आपका रास प्रारंभ हो जाएगा. और उससे आपका जीवन फलना और फूलना प्रारंभ हो जाएगा. और इस हेतु क्राइस्ट का कहा ''भाग्य का अटल सिद्धांत'' हमेशा के लिए अपने जहन में बिठा ही लेना. आपको याद ही होगा जो उन्होंने कहा था कि ''आपके हित में आपका अहित छिपा ही हुआ है''. वहीं आपको यह भी याद होगा कि उन्होंने कहा था कि ''सबके हित में ही आपका हित छिपा हुआ है'' और यह दोनों सिद्धांत भाग्य के परम नियम हैं. सो बिना बिग-पॉझिटिव की सोचे भाग्य की राह कभी नहीं पकड़ी जा सकती है.

(E) अपने मूड के साथ बहो

भरोसा पूरी तरह अपने मूड पर करो. जिस चीज का मूड हो, वही करो. मूड न हो, मत करो. अब मूड के अनुसार जीने को मिल जाए, इससे बड़ी कोई उपलब्धि ही नहीं हो सकती है. आदमी मूड के हिसाब से चलना चाहता भी है. सबको मालूम है कि मूड के खिलाफ जाने पर बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है. तो भी अपने मूड पर कोई भरोसा नहीं करता है. जबकि मनुष्य का मूड कुदरत के ऑटोमेशन से सीधा कनेक्टेड है. परंतु छोटी-मोटी चीजों से प्रभावित होते रहने के कारण मनुष्य अपने मूड को मारकर भागता-दौड़ता रहता है. बस इस कारण वह जी भी नहीं पाता है और उसके हाथ भी कुछ नहीं लगता है. सो, हिम्मत करो व बने उतना अपने मूड के साथ बहो. जल्द ही आपके जीवन को सही राह मिल जाएगी. आपसे अपने मूड में एक-से-एक चमत्कार भी होंगे. जीने का मजा भी आएगा व सफलता के शिखर भी छूते चले जाओगे. हां, शुरुआती झटके सहने की हिम्मत जुटानी होगी. क्योंकि बुद्धि से जीने की आदत पुरानी है. और उस कारण से आपका मन भी विकृत हो चुका है. सो, हो सकता है कि शुरुआत में आवश्यक कार्यों के लिए भी मूड न बना पाओ. पर यह सब तो अपनी ही की गलतियों की सजा है, जो भुगतनी ही रही. वहीं बुद्धि से जीने की पुरानी आदत के कारण हर चीज आपको आवश्यक भी नजर आएगी-ही-आएगी. ऐसे में जब आपका मूड उन सबकी अवहेलना करेगा, तो मूड के साथ बहने में तकलीफ अवश्य आएगी. फिर भी धीरे-धीरेकर मूड के साथ बहना बढ़ाओ. जल्द ही जीवन की बेकार की मजबूरियों से उठ जाओगे. और फिर वह मनुष्य ही क्या जिसका आवश्यक कार्यों के लिए भी मूड ना बने. सो, धीरे-धीरे सब संतुलित हो जाएगा. मूड के अनुसार जी भी पाओगे व आवश्यक कार्यों के लिए मूड भी बना पाओगे.

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

रहस्य-रोमांच, रोमांटिक, थ्रिलर, हॉरर, लव-रोमांस, सांइस-फिक्शन और बेस्टसेलिंग उपन्यास/ई-बुक्स पढने के लिए आज ही प्रीमियम चैनेल ज्वांइन करे । इसमें आपको ढेरों अलग अलग Genres की नई-पुरानी किताबें आसानी से मिल जायेंगी ।

📚 **JOIN NOW** 📚

अथवा

Official (ऑफिशियल) चैनेल ज्वांइन करे -

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

❤️ *Biggest Books Collection! Enjoy Our Service* ❤️

📚📖📝💌📝📖📚

अंतिम बात

इन तमाम बातों में एक बात का ध्यान रखना कि राह चाहे आनंद की पकड़ो, ध्यान की पकड़ो, या फिर अपने मूड के साथ ही बहना क्यों न तय करो, पर आलस्य व कामचोरी को आनंद या मूड का सूचक मत समझ लेना. अपने पैरों पर खड़े होना व पूर्ण आत्मनिर्भर बनना आपका प्रथम कर्तव्य है. और आनंद, ध्यान व मूड इसमें सहायक हैं. सो यदि किसी कारण कामचोरी या आलस्य सर पे सवार होते हैं तो समझ लेना कि आप आनंद, ध्यान या मूड के साथ नहीं बह रहे हैं. क्योंकि मनुष्य की यह भी एक खूबी है कि वह अच्छे से अच्छी व सीधे से सीधी बात के भी उल्टे अर्थ निकालने में माहिर है.

----

https://t.me/Sahitya_Junction_Official